Digitized by eGangotri

को० 85

शुकनासोपदेशपर्यन्ता

कादम्बरी-कथा

स्कैन्ड / Scanned

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

••स्कैन्ड/ Scanned••

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भूमिका

बाण की आत्मकथा :—

संस्कृत साहित्य में गद्य-काव्य की पराकाष्ठा बाण की रचनाओं में उपलब्ध होती है। उन्होंने दो गद्य काव्य लिखे हैं—(१) हर्षचरित तथा (२) कादम्बरी। हर्षचरित के प्रथम तीन उछ्वासों से बाण ने अपनी आत्मकथा लिखी है और कादम्बरी के प्रस्तावना रूप में दिए गये श्लोकों में भी अपने वंश की ओर उन्होंने कुछ संकेत किया है। इन्हीं अन्तः-साक्ष्यों के आधार पर यहाँ पर इनका परिचय दिया जाता है।

हर्षचरित में बाण ने अपने वंश का वर्णन पौराणिक ढंग से किया है। उनके वंश के प्रवर्तक थे दधीचि तथा सरस्वती के पुत्र सारस्वत के चचेरे भाई वत्स। वत्स के वंश में कुबेर का जन्म (४५०-४८० ई० के लगभग) हुआ था। ये प्रखर विद्वान् थे। कुबेर के चार पुत्र हुए जिनमें एक थे पाशुपत। ये बाण के पितामह थे। पाशुपत सेअर्थपति और उनके ग्यारह पुत्र हुए जिनमें बाण के पिता चित्रभानु भी एक थे। बाण की माता का नाम था राज्यदेवी। बाण के दो पारशव अर्थात् शूद्रा से उत्पन्न भाई भी थे जिनका नाम था चित्र-सेन और मित्र-सेन। बाल्यावस्था में ही बाण की माता का देहान्त हो गया था। वत्स के समय से ही बाण के पूर्वजों का निवासस्थान शोणनद के पश्चिमी तट पर प्रीतिकूट नामक ग्राम था।

बाण के उपनयन संस्कार के अनन्तर उनके पिता का अकाल ही में देहावसान हो गया। इस समय बाण की अवस्था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१४ वर्ष की थीं, किसी सुयोग्य संरक्षक के न रहने से इनका प्रारम्भिक यौवन काल अनियमित हो गया था। वे अपने मनचले अन्तरङ्ग मित्रों के साथ देशाटन के लिए चल दिये थे। जहाँ उन्होंने संसार का बड़ा अनुभव प्राप्त किया था। राज दरबारों, गुरुकुलों में जाकर तथा विद्वानों के सत्संग से उन्होंने पर्याप्त ज्ञान उपार्जित किया।

एक दिन राजा हर्षवर्धन के भाई कृष्ण के दूत ने आकर एक पत्र दिया जिसमें यह लिखा था कि लोगों ने महाराज के पास बाण की राज-विरुद्ध-भावना की शिकायत की है, उन्हें आकर अपने को राजा के सामने निर्दोष सिद्ध करना चाहिए। पिशुन-जन ने बाण के विरुद्ध राजा के कान भर रखे थे। राजा से प्रथम साक्षात्कार होने पर राजा ने उनकी अवहेलना की तथा एक व्यङ्ग्य भी कसकर कहा—'महानयं भुजङ्गः।' बाण ने अपनी युक्ति-चातुरी से राजा की उन विपरीत भावनाओं को दूर कर दिया। और उन्हें अपनी विद्वत्ता से ऐसा वशीभूत कर दिया कि राजा ने प्रसन्न होकर उन्हें 'वश्य-वाणी-कवि-चक्रवर्ती' की उपाधि से सम्मानित किया।

कुछ समय बाद बाण अपने जन्मस्थान को लौटे और उनकी पूर्व-परिचित मित्रमण्डली तथा उनके बन्धु-बान्धवों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। बाण के सबसे छोटे चचेरे भाई श्यामल ने सम्राट् हर्षवर्द्धन का चरित्र सुनाने की प्रार्थना की जिससे प्रेरित होकर उन्होंने हर्षचरित्र नामक गद्यकाव्य लिखा। इसके अनन्तर क्या हुआ इसके विषय में कोई तथ्य उपलब्ध नहीं होता है। संभव है कि हर्ष की मृत्यु ६४८ ई० में हो जाने के कारण बाण उनके जीवन वृत्त से उदासीन हो गये हों, इसलिए उन्होंने हर्ष का चरित्र अधूरा ही लिखकर छोड़ दिया हो। अपनी कादम्बरी की कथा समाप्त करने से पूर्व ही वे इस संसार से चल बसे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हर्ष के समकालीन होने से छठी शताब्दी के अन्त या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में इनका जन्म हुआ होगा, क्योंकि हर्ष का राज्याभिषेक चीनी यात्री ह्वेनसांग के संस्मरणों के आधार पर ६०६ ई० तथा मृत्यु ६४८ ई० स्वीकृत हो चुकी है।

हर्ष-चरित्र तथा कादम्बरी के अतिरिक्त विविध विद्वानों द्वारा अन्य पुस्तकों का उल्लेख भी पाया जाता है। वे हैं—चण्डी-शतक, पार्वतीपरिणय, मुकुट-ताड़ितक नाटक। हर्ष-चरित्र बाण की प्रथम गद्य रचना है।

बाणभट्ट की कादम्बरी समस्त संस्कृत साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना है, उसके विषय में एक निर्णायक ने तो यहाँ तक कह दिया है कि "बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्," अर्थात् सारा कवि-संसार बाण की जूठन खाता है। कादम्बरी एक आख्यायिका है। इसमें बड़ी लम्बी कहानी है, परन्तु प्रस्तुत संकलन में जितना अंश लिया है यहाँ पर उसको संक्षिप्तरूप में दे दिया जाता है।

कथा :—

एक चाण्डाल कन्या एक पिंजड़े के अन्दर बन्द किए हुए तोते को एक चाण्डाल बालक के हाथ में देकर राजा शूद्रक के दरबार में उपस्थित होती है। चाण्डाल बालक पिंजड़े को राजा के आगे खिसका देता है। तोता मनुष्यों की जैसी वाणी में राजा को एक श्लोक द्वारा आशीर्वाद देता है। राजा आश्चर्यान्वित होता है। राजा चाण्डाल कन्या व चाण्डाल बालक को विश्राम करने के लिए भेज देता है और तोते को महल में। स्नानादि कार्यों से निवृत्त हो जाने पर राजा महल से तोते को मँगाकर उससे उसके पूर्वजन्म का वृत्तान्त पूछता है। तोता अपना वृत्तान्त कहता है कि किस प्रकार उसका जन्म हुआ। बचपन में ही उसके माता-पिता मर गए। पिता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को किस प्रकार शिकारी ने मार डाला था, कैसे वह बच्चा खिसकते-खिसकते हारीत नामक मुनिकुमार के द्वारा जाबालि ऋषि के आश्रम में पहुंचाया गया और तब जाबालि से कैसे उसने अपने जन्म की कथा सुनी।

उज्जयिनी के राजा तारापीड तथा रानी विलासवती ने तपस्या द्वारा चन्द्रापीड नामक पुत्ररत्न प्राप्त किया। विद्याध्ययन के लिए चन्द्रापीड अपने मन्त्रिपुत्र वैशम्पायन के साथ गुरुगृह गये। विद्याध्ययन की समाप्ति के अनन्तर चन्द्रापीड इन्द्रायुध नामक अश्व पर सवार होकर अपने साथी वैशम्पायन के साथ राजमहल में लौटे। अपने पिता-माता से भेंट करने के अनन्तर अपने मन्त्री शुकनास के घर उनसे मिले। जब राजा तारापीड ने अपने पुत्र चन्द्रापीड़ को सब तरह योग्य समझा तो उसका राज्याभिषेक करने का प्रबन्ध किया गया। इसी बीच राजकुमार मन्त्री के घर गया और मन्त्री शुकनास ने राजकुमार को अधिकार प्राप्त होने पर अधिकारी में जो दोष उत्पन्न हो जाते हैं उनका विशद वर्णन करते हुए सुन्दर शब्दों में उपदेश दिया है।

'कादम्बरी' आख्यायिका का यह स्थल 'शुकनासोपदेश' नाम से पुकारा जाता है और यह स्थल उसका 'हृदय' (Heart) कहलाता है और प्रत्येक नवयुवक छात्र या स्नातक के लिए इसकी महत्ता दीक्षान्त भाषण से कम नहीं है। प्रस्तुत संकलन में यहीं तक का भाग लिया गया है।

कादम्बरी का प्रधान रस 'शृङ्गार' है। इसमें तत्कालीन सामाजिक विशेषताओं का भी वर्णन है। कादम्बरी में वर्णन-विविधता दर्शनीय है। अपने पात्रों का चरित्र-चित्रण बाण ने बड़े विशद रूप से किया है।

बाण की शैली :—

बाण ने गद्यशैली का आदर्श सूचित करते हुए स्व-रचित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हर्ष-चरित्र में कहा है—

नवोऽर्थो जातिरग्राम्या श्लेषोऽश्लिष्ट: स्फुटो रस: ।
विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुष्करम् ।।

अर्थात् मौलिक कल्पना, इच्छाग्राह्य स्वभावोक्ति, श्लेष ऐसा हो जो क्लिष्ट न हो, स्फुट रूप से प्रतीयमान रस, तथा प्रौढ पदावली इन सब गुणों का एकत्र समावेश कठिन है। दूसरे के मन के भावों का यथार्थ चित्रण तथा अभिनव अर्थ की कल्पना को बाण गद्य-शैली का प्रधान लक्षण मानते हैं।

अर्थ के अनुरूप शब्दों का प्रयोग होने से बाण के गद्य की रीति 'पाँचाली' है। उसकी शैली में शब्द और अर्थ, भाषा और भाव का अनुकूल सामञ्जस्य है। अलङ्कारों का समुचित प्रयोग अपूर्व रमणीयता का संचार करता है। बाण के प्रकृति-चित्रण से उनकी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का पता चलता है। उनके वर्णन प्राय: लम्बे होते हैं। उपमा, श्लेष, रूपक, विभावना, विशेषोक्ति, विरोधाभास, दीपक अलङ्कारों का प्रयोग अधिक किया गया है। उनके भाषा-कौशल और कथानक-वैचित्र्य से ही उनकी कृतियाँ इतनी आकर्षक तथा लोकप्रिय हो सकी हैं। अपने समय के प्रचलित आदर्शों और रूढ़ियों से प्रभावित होकर ही बाण ने अलंकृत वाक्यावली का प्रयोग किया तथा उस समय समास-बाहुल्य पदावली तो गद्य का प्राण समझी जाती थी। उस समय के किसी कवि की भावना बाण के विषय में कैसी थी, एक पद्य से स्पष्ट हो जायगी—

रुचिर-स्वर्ण-वर्ण-पदा रसभाव-वती जगन्मनो हरति ।
सा किं तरुणी ? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य ।

इस प्रकार बाण भट्ट का गद्य-काव्य सरस व सुबोध होने से यह संकलन इण्टरमीडिएट कक्षा के छात्रों के लिए प्रस्तुत किया गया है।

—लेखक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बाणभट्ट कृता
शुकनासोपदेशपर्यन्ता
कादम्बरी कथा
मङ्गलाचरणम्

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे ।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः ॥

अन्वयः---प्रजानां जन्मनि रजोजुषे, स्थितौ सत्त्ववृत्तये, प्रलये तमःस्पृशे, सर्गस्थितिनाशहेतवे, त्रयीमयाय, त्रिगुणात्मने अजाय नमः ।

टीकाः---प्रजानाम् = **संसार के प्राणियों के** । जन्मनि = **उत्पन्न होते समय** । रजोजुषे = **रजोगुण से युक्त** । स्थितौ = **स्थिति के समय, पालन के समय** । सत्त्वस्य वृत्तिः यस्मिन् सः सत्त्ववृत्तिः तस्मै सत्त्ववृत्तये = **सत्त्वगुण से युक्त** । प्रलये = **नाश के समय, प्रलय काल में** । तमः-स्पृशे=**तमोगुण से युक्त** । सर्गश्च स्थितिश्च नाशश्च सर्गस्थितिनाशाः तेषां हेतवे सर्ग-स्थिति-नाश-हेतवे=**उत्पत्ति, पालन और नाश के कारणरूप** त्रयीमयाय=**तीनों वेदों की आत्मा के स्वरूप** । त्रिगुणात्मने=**सत्त्व, रज और तमोगुणमय** । अजाय=**स्वयं उत्पन्न परब्रह्म परमात्मा के लिये** । नमः = **प्रणाम (है)** ।

अनुवादः--**संसार के प्राणियों के जन्म के समय रजोगुण से युक्त, पालन के समय सत्त्वगुण से युक्त, नाश के समय तमोगुण से युक्त, उत्पत्ति, पालन और नाश के कारणरूप, तीनों वेदों की आत्मा के स्वरूप, सत्त्व, रज और तमोगुणमय स्वयं उत्पन्न परब्रह्म परमात्मा के लिए प्रणाम है ।**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कथारम्भः

आसीदशेष-नरपति-शिरः-समभ्यर्चित-शासनः पाक शासन इवापरः, चक्रवर्तिलक्षणोपेतः, आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्, उत्पत्तिः कलानाम्, उदयशैलो मित्रमण्डलस्य, आश्रयो रसिकानाम्, राजा शूद्रको नाम। यश्च मनसि धर्मेण, कोपे यमेन, प्रसादे धनदेन, प्रतापे वह्निना, वाचि सरस्वत्या, मुखे शशिना, प्रज्ञायां सुरगुरुणा, तेजसि सवित्रा, रूपे मनसिजेन च वसता भगवतो नारायणस्यानुकरोति।

टीका:—अशेषाः ये नरपतयः तेषां शिरांसि तैः समभ्यर्चितं शासनं यस्य सः अशेष-नरपति-शिरः समभ्यर्चित-शासनः = **सम्पूर्ण राजा लोग जिसकी आज्ञा को सिर से ग्रहण करते थे**; पाकशासनः = इन्द्रः। चक्रवर्तिनः लक्षणैरुपेतः चक्रवर्तिलक्षणोपेतः = **चक्रवर्ती राजा के लक्षणों से युक्त**। आदर्शः=**दर्पण**। सर्वशास्त्राणाम्=**सब शास्त्रों का**। उत्पत्तिः=**जन्म स्थान, पैदा करने वाला**। कलानाम्=**चौसठ या बहत्तर कलाओं का**। उदयशैलः =**(१) सूर्य जिस पर्वत से उदय होता है वह पर्वत, उदयाचल (२) उन्नति का स्थान**। मित्रमण्डलस्य=**(१) सूर्य मण्डल का, (२) अपने मित्रवर्ग को**। आश्रयः=**पनाह पाने का स्थान**। रसिकानाम्=**रसिक पुरुषों का**। मनसि=**चित्त में**। धर्मेण (वसता)=**धर्म के (रहने से)**। कोपे =**क्रोध में**। यमेन=**यमराज के (रहने से)**। प्रसादे=**प्रसन्नता में**। धनदेन=**कुबेर के (रहने से)**। प्रतापे=**प्रताप में**। अग्निना=**आग के (रहने से)**। वाचि=**वचन में**। सरस्वत्या=**वाणी की देवता के (निवास करने से)**। मुखे=**मुँह में**। शशिना=**चन्द्रमा के (निवास करने से)**। प्रज्ञायाम्=**बुद्धि में**। सुरगुरुणा=**देवताओं के गुरु बृहस्पति के (निवास करने से)** तेजसि=**तेज में**। सवित्रा=**सूर्य के (निवास करने से)**। वसता=**निवास करने से**। भगवतः नारायणस्य=**भगवान् नारायण का**। अनुकरोति=**अनुकरण करता था**।

अनुवाद:—**शूद्रक नाम का राजा था जिसका शासन सभी**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

राजा लोग सिर से आदरपूर्वक मानते थे, जो दूसरा इन्द्र जैसा था, जो चक्रवर्ती राजा के लक्षणों से युक्त था, जो सब शास्त्रों का दर्पण (आइना) जैसे था, जो कलाओं का उत्पत्तिस्थान था अर्थात् सभी कलाएँ जैसे इसी से ही उत्पन्न हुई थीं, जो सूर्यमण्डल के उदय होने के पर्वत अर्थात् उदयाचल के समान अपने मित्रवर्ग की उन्नति का स्थान था और जो रसिक पुरुषों का आश्रय था और जो मन में धर्म के निवास करने से, क्रोध में यमराज के रहने से, प्रसन्नता में कुबेर के रहने से, प्रताप में अग्नि के रहने से, वाणी में सरस्वती के निवास करने से, मुख में चन्द्रमा के निवास करने से, बुद्धि में बृहस्पति के रहने से, तेज में सूर्य के रहने से और सौन्दर्य में कामदेव के रहने से भगवान् नारायण का अनुकरण करता था।

तस्य च राज्ञः वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधानी आसीत्। स तस्यामात्मनः प्रतिबिम्बैरिव राजपुत्रैः सह रममाणः प्रथमे वयसि सुखमतिचिरमुवास। एकदा तु नातिदूरोदिते भगवति सहस्र-मरीचि-मालिनि राजानमास्थानमण्डपगतं समुपसृत्य प्रतीहारी क्षितितल-निहित-जानु-करकमला सविनयमब्रवीत्—"देव ! द्वारस्थिता दक्षिणापथा-दागता चाण्डालकन्यका पञ्जरस्थं शुकमादाय देवं विज्ञापयति—'सकल भुवनतलरत्नानामुदधिरिवैकभाजनं देवः। विहंगमश्चायमाश्चर्यभूतो निखिल-भुवन-तल रत्नमिति कृत्वा देवपादमूलमादाय आगताऽहमिच्छामि देवदर्शनसुखमनुभवितुम्' इति, एतदाकर्ण्य 'देवः प्रमाणम्' इत्युक्त्वा विरराम। उपजातकुतूहलस्तु राजा समीपवर्तिनां राज्ञामालोक्य मुखानि 'को दोषः, प्रवेश्यताम्' इत्यादिदेश।

टीकाः—तस्य च=और उस। राज्ञः=राजा की। वेत्रवत्या=वेत्रवती नाम वाली नदी से। परिगता=घिरी हुई। विदिशाभिधाना=विदशा नाम वाली। सः=वह। तस्याम्=उस (राजधानी) में। आत्मनः=अपने। प्रति-बिम्बैः इव=परछाईं जैसे। राजपुत्रैः सह=राजकुमारों के साथ। रममाणः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

= क्रीड़ा करता हुआ। प्रथमे वयसि = प्रारम्भिक अवस्था में। सुखम् = सुखपूर्वक। अतिचिरम्=बहुत समय तक। उवास=रहता गया। एकदा तु = एक समय तो। नातिदूरोदिते = अधिक दूर तक उदय नहीं हुआ था। भगवति=भगवान्। सहस्रसंख्या ये मरीचयः तैर्मालिते यः स तस्मिन् सहस्र-मरीचि-मालिनि=हजार किरणों की माला को धारण किये हुए सूर्य भगवान् के होने पर। राजानम्=राजा के पास। आस्थानमण्डप गतम् = बैठक में गये हुए। समुपसृत्य=पास जाकर। प्रतीहारी = द्वार देश में नियुक्त द्वारपालिका। क्षितितले निहतौ जानू च करौ एव कमले च यया सा क्षितितलनिहितजानुकरकमला=घुटनों को भूमि में टेक कर तथा कमल के समान हाथों को भूमि में रख कर। विनयेन सहितम् सविनयम्=नम्रता के साथ। अब्रवीत्=बोली। देव=हे महाराज। द्वारस्थिता=फाटक पर बैठी हुई। दक्षिणापथादायाता=दक्षिण की ओर से आयी हुई। चाण्डालकन्यका=चाण्डाल वंश में उत्पन्न लड़की। पञ्जरे तिष्ठति इति पञ्जरस्थः तम् पञ्जरस्थम्=पिंजड़े में रखा हुआ। विज्ञापयति=प्रार्थना करती है। सकलभुवनतलरत्नानाम् = पृथ्वी-तल के सारे रत्नों के। एकभाजनम्=एकमात्र रखनेवाले, पात्र। विहंगमः च=और पक्षी। आश्चर्यभूतः=आश्चर्य से भरा हुआ। निखिलभुवनतलरत्नम् =सारे संसार का रत्न है। देवपादमूलम्=महाराज के चरणों में। देवदर्शनसुखम्=महाराज के दर्शन का सुख। अनुभवितुम्=अनुभव करने को। आकर्ण्य=सुनकर। प्रमाणम्=जैसा ठीक समझें। विरराम=चुप हो गयी। उपजातकुतूहलस्तु=अपने चित्त में कौतूहल लाकर। राजा=शूद्रक। समीपवर्तिनाम्=पास में बैठे हुए। राज्ञाम्=राजाओं के। आलोक्य =देखकर। प्रवेश्यताम्=अन्दर ले आइए। इति+आदिदेश=इस प्रकार से आज्ञा दे दी।

अनुवाद :—उस राजा (शूद्रक) की विदिशा नाम वाली नगरी राजधानी थी। यह चारों ओर से वेत्रवती नाम की नदी से घिरी हुई थी। वह उस नगरी में अपने प्रारम्भिक जीवन में अपनी ही परछाई के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समान राजपुत्रों के साथ खेलता-कूदता हुआ बहुत समय तक सुखपूर्वक निवास करता रहा। एक समय सूर्य भगवान् के कुछ ही दूर तक उदय होने पर अपने बैठक में बैठे हुए राजा के पास जाकर प्रतीहारी ने घुटने टेक कर तथा कमल के समान हाथों को भूमि में रखकर नम्रता के साथ कहा—'महाराज! फाटक पर दक्षिण की ओर से आयी हुई कोई चाण्डाल वंश की लड़की पिंजड़े के अन्दर रखे हुए एक तोते को लेकर आपसे प्रार्थना कर रही है कि पृथ्वी के सम्पूर्ण रत्नों के सागर के समान आप ही पृथ्वी के रत्नों के पात्र हैं और यह पक्षी भी संपूर्ण संसार का रत्न स्वरूप है तथा बड़ा आश्चर्यपूर्ण है। ऐसा जानकर इसे लेकर आपके चरणों में आयी हूँ और आपके दर्शन के सुख का अनुभव करना चाहती हूँ। यह सुनकर 'आप जैसा उचित समझें, कीजिए' ऐसा कह कर चुप हो गयी। राजा के चित्त में भी कुतूहल उत्पन्न हुआ और उसने पास में बैठे हुए राजाओं के मुख की ओर देखकर 'क्या हर्ज है, अन्दर ले आइए' इस प्रकार आज्ञा दे दी।

अथ प्रतीहारी नरपतिकथनानन्तरमुत्थाय तां मातङ्गकुमारीं प्रावेशयत्। प्रविश्य च सा नरपतिसहस्र-मध्यवर्तिनम् राजानमद्राक्षीत्। अवनिपतिस्तु 'दूरादालोकय' इत्यभिधाय प्रतीहार्या निर्दिश्यमानाम्, पञ्जरमुद्वहताचाण्डालदारकेणानुगम्यमानाम्, ताम्, अचिरोपारूढयौवनाम्, अतिशयरूपाकृतिमनिमिषलोचनो ददर्श। जातविस्मयं राजानं कन्यका प्रणनाम। कृतप्रणामायां च तस्यां मणिकुट्टिमोपविष्टायां स पुरुषस्तं विहंगमं शुकमादाय पञ्जरगतमेव किञ्चिदुपसृत्य राज्ञे न्यवेदयत्, अब्रवीच्च—'देव! सकलभूतलरत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम शुकः सर्वरत्नानामुदधिरिव देवो भाजनमिति कृत्वैनमादाय अस्मत्-स्वामिदुहिता देवपादमूलमायाता, तदयमात्मीयः क्रियताम्' इत्युक्त्वा नरपतेः पुरो निधाय पञ्जरमसावपससार।

टीका:—प्रतीहारी=द्वारपालिनी। नरपतेः कथनस्य अनन्तरं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नरपतिकथनानन्तरम्=राजा के कहने के अनन्तर। तां मातंगकुमारीम् =उस चाण्डालकन्यका को। प्रावेशयत्=अन्दर ले आयी। प्रविश्य च सा =और उसने (वह) भीतर प्रवेश करके। नरपतीनां सहस्रस्य मध्ये वर्तते इति नरपतिसहस्रमध्यवर्ती तं तथोक्तम्=हजारों राजाओं के बीच में बैठे हुए। अद्राक्षीत्=देखा। अवनिपतिः+तु=राजा तो। 'दूरात्+आलोकय'='दूर से दिखाओ'। इति+अभिधाय=ऐसा कहकर। प्रतीहार्या निर्दिश्यमानाम्=प्रतीहारी से दिखाये जाते हुए। उद्वहता=उठाये हुए। चाण्डालदारकेण+अनुगम्यमानाम्=जिसके पीछे-पीछे चाण्डाल जाति का बालक चला जा रहा था। अचिरं उपारूढं यौवनं यया सा ताम् अचिरोपारूढयौवनाम्=हाल ही में प्राप्त की है जवानी जिसने। अतिशय-रूपा आकृतिः यस्याः सा अतिशयरूपाकृतिः ताम् तथोक्ताम्=अत्यन्त सुन्दर चेहरे वाली। अनिमिषे लोचने यस्य स अनिमिषलोचनः=एक टक होकर, बिना पलक गिराये हुए। ददर्श=देखा। जातो विस्मयो यस्य स तं जातविस्मयम्=आश्चर्य में पड़े हुए। कृतः प्रणामो यया सा तस्यां कृतप्रणामायाम्=प्रणाम कर लेने पर। मणिकुट्टिमे (रत्नबद्धभूमौ) उपविष्टायाम्=रत्न जड़ी हुई भूमि पर बैठने पर। पञ्जरगतम्+एव=पिंजड़े के अन्दर ही विद्यमान। उपसृत्य=समीप जाकर। सकले भूतले रत्नभूतः सकलभूतलरत्नभूतः=सारे संसार में रत्न के समान। अस्माकं स्वामिनः दुहिता अस्मत्स्वामिदुहिता=हमारे स्वामी की पुत्री। देवस्य पादयोः मूलं देवपादमूलम्=महाराज के चरणतल में। अपससार=आगे खिसका दिया।

अनुवाद:—इसके अनन्तर द्वारपालिका राजा के कहने के पश्चात् उठकर उस चाण्डालकन्या को भीतर ले आयी। भीतर प्रवेश करके उसने हजारों राजाओं के मध्य में बैठे हुए राजा को देखा। राजा ने तो—'दूर से दिखाइए' ऐसा कहकर प्रतीहारी से बताई जाती हुई और पिंजड़े को हाथ में लिये हुए चाण्डाल बालक जिसके पीछे-पीछे चला जा रहा था, जो अभी थोड़े ही समय से यौवन को प्राप्त हुई थी, जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण थी ऐसी उस (चाण्डाल कन्या) को टकटकी निगाह से (बिना पलक गिराये) देखा। आश्चर्ययुक्त राजा को उस कन्या ने प्रणाम किया। उस कन्या के प्रणाम करने तथा रत्नजटित भूमि पर बैठने पर उस पुरुष (चाण्डाल बालक) ने राजा के कुछ समीप जाकर पिंजड़े के अन्दर विद्यमान उस तोते को राजा को सौंप दिया और कहा—'महाराज! यह संपूर्ण संसार का रत्न है। वैशम्पायन इसका नाम है। जैसे समुद्र रत्नों का स्थान है वैसे ही आप भी संसार के रत्नों के पात्र हैं। इस बात को जानकर हमारे स्वामी की पुत्री इसको लेकर महाराज के चरणों में आयी है। इसलिए आप इसे अपनाइए' ऐसा कहकर राजा के सामने रखकर इसने पिंजड़ा आगे खिसका दिया।

अपसृते च तस्मिन् स विहंगराजो राजाभिमुखो भूत्वोन्नमय्य दक्षिणं चरणमतिस्पष्टया गिरया जयशब्दं करोति

टीका:—अपसृते च तस्मिन्=उस (बालक) के हट जाने पर, विहंगानां राजा विहंगराजः (राजाहः सखिभ्यष्टच्)=पक्षियों का राजा। राज्ञः अभिमुखः राजाभिमुखः=राजा के सामने। भूत्वा+उन्नमय्य=होकर +उठाकर। अतिस्पष्टा वर्णा यस्यां सा तया अतिस्पष्टवर्णया=अत्यन्त स्पष्ट वर्णवाली। गिरया=वाणी से।

अनुवाद:—उस चाण्डाल बालक के हट जाने पर वह श्रेष्ठ पक्षी राजा के सामने होकर, अपने दाहिने चरण (पंजे) को उठाकर, अत्यंत स्पष्ट वर्ण वाली बाणी से 'जय हो महाराज की' ऐसा कहा,

राजा तु तां श्रुत्वा संजातविस्मयः सहर्षमासन्नवर्तिनम्, प्रधानामात्यं कुमारपालितनामानमब्रवीत्— 'श्रुता भवद्भिरस्य विहंगमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे, स्वरे च मधुरता 'इदं तु महच्चित्रम्' इत्युक्तवति भूभुजि कुमारपालितः किंचित्-स्मित-वदनोऽवादीत्—'किमत्र चित्रम्? एते हि शुकसारिकाप्रभृतयो विहंगमविशेषा यथाश्रुतां वाचमुच्चारयन्तीत्यधिगत-मेव देवेन। तत्राप्यन्यजन्मोपात्तसंस्कारानुबन्धेन वा पुरुषप्रयत्नेन वा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संस्कारातिशय उपजायत इति नातिचित्रम् ।' एवमुच्चारयत्येव तस्मिन् मध्याह्नशङ्खध्वनिरुदतिष्ठत् । तमाकर्ण्य च समासन्नस्नानसमयो विसर्जित-राजलोकः क्षितिपतिरास्थानमण्डपादुत्तस्थौ ।

टीका:—संजातः विस्मयो यस्य सः संजातविस्मयः = **आश्चर्ययुक्त होते हुए** । आसन्नं वर्तते इति आसन्नवर्ती तं आसन्नवर्तिनम् = **समीप में बैठे हुए** । प्रधानश्चासौ अमात्यः प्रधानामात्यः तं प्रधानामात्यम् = **प्रधान मन्त्री से** । कुमारपालितः नाम यस्य स तं कुमारपालितनामानम् = **कुमार-पालित नामवाले से** । अस्य विहंगमस्य = **इस पक्षी की** । वर्णानाम् उच्चारणे वर्णोच्चारणे = **अक्षरों के कहने में** । भूभुजि = **राजा के** । किंचित् स्मितेन युक्तं वदनं यस्य सः किंचित्स्मितवदनः = **कुछ मुसकराते हुए चेहरे-वाला होकर** । उच्चारयन्ति = **कहते हैं** । इति+अधिगतम्+एव = **इस प्रकार जान हो रखा है** । अन्यस्मिन् जन्मनि उपात्तः यः संस्कारस्यानुबन्धः तेन अन्य जन्मोपात्तसंस्कारानुबन्धेन = **दूसरे जन्म में ग्रहण किये हुए संस्कार के लगाव से** । पुरुषाणां प्रयत्नेन पुरुषप्रयत्नेन = **चतुर पुरुषों के प्रयत्न से** । संस्कारे अतिशयः संस्कारातिशयः = **(उस) संस्कार में दृढ़ता या बृद्धि** । उपजायते = **उत्पन्न हो जाती है** । मध्याह्न सूचिका शंखस्य ध्वनिः (मध्यम पदलोपी समास) = **मध्याह्नकाल को सूचित करनेवाला शंख का शब्द** । उदतिष्ठत् = **उत्पन्न हुआ** । समासन्नः स्नानस्य समयो यस्य सः समासन्नस्नानसमयः = **जिसका नहाने का समय निकट आ गया था ऐसा वह** । विसर्जितः राजलोकः येन सः विसर्जितराजलोकः = **जिसने संपूर्ण राजाओं के समूह को अवकाश दे दिया था** । क्षितेः पतिः क्षिति-पतिः = **राजा (शूद्रक)** । आस्थानस्य मण्डपात् आस्थानमण्डपात् = **सभा-भवन से** । उत्तस्थौ = **उठ गया** । (उत् पूर्वक स्था धातु का लिट् लकार) ।

अनुवाद:—**राजा तो उस जय शब्द को सुनकर आश्चर्य में पड़ गया । उसने बड़ी प्रसन्नता के साथ पास में बैठे हुए कुमारपालित**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नामक वृद्धमन्त्री से कहा—'आपने इस पक्षी के अक्षरों के उच्चारण में स्पष्टता और स्वर में मधुरता सुनो? यह एक बड़ी विचित्र बात है।' राजा के ऐसा कहने पर कुमारपालित ने कुछ मुसकराकर कहा—'इस में क्या विचित्रता है? ये तोता, मैना आदि विशेष प्रकार के पक्षी जैसो बोली सुनते हैं, वैसी ही कहते भी हैं। यह तो महाराज जानते ही हैं। उसमें भी दूसरे जन्म के ग्रहण किये हुए संस्कार से या चतुर पुरुषों के प्रयत्न से वृद्धि हो जाती है। इसलिए यह कोई विचित्र बात नहीं है।' उसके ऐसा कहते-कहते ही मध्याह्नकाल को सूचित करनेवाली शंख-ध्वनि हुई। उसे सुनकर राजा, जिसका कि स्नान का समय हो चुका था और जिसने राजमण्डल को छोड़ दिया था, अपनी बैठक से उठ गया।

अथ विसर्जितराजलोको 'विश्रम्यताम्' इति स्वयमेवाभिधाय तां चाण्डालकन्यकां 'वैशम्पायनः प्रवेश्यतामभ्यन्तरम्' इति ताम्बूलकरङ्क-वाहिनीमभिधाय कतिपयाप्तराजपुत्रैः परिवृतो नरपतिरभ्यन्तरं प्राविशत्। अपनीताभरणश्च स व्यायामभूमिमयासीत्। सः तस्य समानवयोभिः सह राजपुत्रैः कृतमधुरव्यायामः स्नानकलशैरुपशोभितां स्नानभूमिमगच्छत्। एवं च क्रमेण निर्वर्तिताभिषेको जलक्षालननिर्मलतनुः, धौतवाससी परि-धाय कृतशिरोवेष्टनः मन्त्रपूततोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देव-गृहमगमत्। उपरचितपशुपतिपूजश्च निष्क्रम्य देवगृहात् निर्वर्तिताग्नि-कार्यः समुचितभोजनैः सह भूपतिभिर्नृप आहारं निर्वर्तयामास। गृहीत-ताम्बूलो भुक्त्वाऽऽस्थानमण्डपमयासीत्। तत्र च शयने निषण्णस्तत्कालो-चितदर्शनैरवनिपतिभिः, अमात्यैः मन्त्रिभिश्च सह तास्ताः कथाः कुर्वन् मु-हूर्तमिवासांचक्रे। ततो नातिदूरवर्तिनीम् 'अन्तः पुराद्वैशम्पायनमादाया-गच्छ' इति समुपजात-तद्वृत्तान्त-प्रश्न-कुतूहलो राजा प्रतीहारमादिदेश। सा क्षितितल-निहित-जानु-करतला 'यथाज्ञापयति देवः, इति शिरसि कृत्वाज्ञां यथादिष्टमकरोत्।

टीका:—विसर्जितः राजलोकः येन सः विसर्जितराजलोकः=**जिसने**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

राजाओं को अवकाश दिया था। 'विश्रम्यताम्'=विश्राम कीजिये। इति स्वयम्+एव+अभिधाय=इस प्रकार अपने आप कहकर। तां चाण्डाल-कन्यकाम्=उस चाण्डाल कन्या से। 'वैशम्पायनः प्रवेश्यताम् अभ्यन्तरम्' =वैशम्पायन को भीतर ले चलिये। इति=इस प्रकार से। ताम्बूलस्य करङ्कं वहतीत्येवंशीला या सा तां ताम्बूलकरङ्कवाहिनीम्=पानदान के डिब्बे को ले चलने वाली दासी को। अपनीतानि आभरणानि येन सः अपनीताभरणः च सः=अपने गहने उतारे हुए वह। व्यायामस्य भूमिं व्यायामभूमिम्=कसरत करने की जगह, व्यायाम-शाला में। समानवयोभिः =समान अवस्था वाले। कृतो मधुरो व्यायामो येन सः कृतमधुरव्यायामः =जिसने आनन्ददायी व्यायाम किया। स्नानार्थं कलशाः स्नानकलशाः तैः स्नानकलशैः=स्नान के लिए रखे हुए घड़ों से। उपशोभिताम्=सजी हुई। निर्वर्तितः अभिषेको यस्य सः निर्वर्तिताभिषेकः=जिसका स्नान कराया गया ऐसा वह। जलेन यत् क्षालनं तेन निर्मला तनुर्यस्य सः जलक्षालन-निर्मल-तनुः=पानी से धोने से जिसका शरीर स्वच्छ हो गया था। धौतवाससी=धुले हुए वस्त्रों को। कृतं शिरसः वेष्टनं येन सः कृत-शिरोवेष्टनः=सिर पर पगड़ी पहिने हुए। मन्त्रैः पूतं यत्तोयं तस्य अञ्ज-लिना मन्त्रपूततोयाञ्जलिना=मन्त्र से पवित्र पानी की अंजलि से। उपरचिता पशुपतेः पूजा येन सः उपरचित-पशुपति-पूजः + च = जिसने शिवजी की पूजा कर ली थी ऐसा होकर। निर्वर्तितं अग्निकार्यं येन सः निर्वर्तिताग्निकार्यः = यज्ञ आदि अग्निकार्य जिसने पूरा कर लिया था। समुचितं भोजनं येषां ते तैः समुचितभोजनैः = एकपंक्ति में बैठकर जिनके साथ भोजन किया जा सकता है, ऐसे। आस्थानमण्डपम् = बैठक में। अयासीत् = चला गया। शयने = पलंग में। निषण्णः = बैठा हुआ। तत्काले उचितं दर्शनं येषां ते, तैः तत्कालोचितदर्शनैः = उस (शयन के) समय जिनका देखना उचित है ऐसे। अवनिपतिभिः सह = राजाओं के साथ। समुपजातं तस्य वृत्तान्तस्य प्रश्ने कुतूहलं यस्य सः समुपजाततद्वृत्तान्तप्रश्नकुतूहलः = उस तोते के वृत्तान्त को पूछने में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जिसकी प्रबल इच्छा उत्पन्न हो चुकी थी। राजा = शूद्रक ने। प्रतीहारीम्+आदिदेश = प्रतिहारी को आज्ञा दी। क्षितितले निहितौ जानू करतले च यया सा क्षितितलनिहितजानुकरतला = जमीन में घुटने टेक कर तथा हाथ रखती हुई।

अनुवादः—इसके अनन्तर सब राजाओं को अवकाश देकर चाण्डालकन्या से भी स्वयं 'विश्राम कीजिये' ऐसा कह कर और 'वैशम्पायन को भीतर ले जाइए' ऐसा पानदान ले चलनेवाली दासी को आदेश देकर कतिपय विश्वासपात्र राजकुमारों से घिरा हुआ राजा महल के अन्दर चला गया। गहने उतारकर वह व्यायामशाला में चला गया। वह उस व्यायामशाला में अपनी समान अवस्थावाले राजपुत्रों के साथ थोड़ा व्यायाम कर स्नान के लिये रखे हुए (पानी के) घड़ों से सजी हुई नहाने की जगह पर चला गया। इस प्रकार क्रम से स्नान का कार्य समाप्त कर, पानी के द्वारा धो डालने से शरीर के शुद्ध हो जाने पर धुले हुए कपड़े पहनकर, सिर पर पगड़ी बाँध मन्त्र के द्वारा पवित्र हो पानी की अञ्जलि से सूर्य के सामने प्रणाम कर वह मन्दिर में चला गया। शिवजी की पूजा कर लेने के पश्चात् मन्दिर से निकल कर, यज्ञ आदि अग्निसम्बन्धी कार्य कर, एक पंक्ति में बैठकर खाना खाने योग्य राजाओं के साथ राजा ने भोजन किया। पान लेकर तथा उसे खाकर वह बैठक में चला गया। वहाँ पलंग पर बैठकर राजा ने उस समय के दर्शन के योग्य राजाओं, मन्त्रियों और मित्रों के साथ उन-उन कथाओं को करता हुआ दो-एक घड़ी मानो आराम किया। तब उस तोते के वृत्तान्त के विषय में पूछने की प्रबल इच्छा रखते हुए राजा ने समीप ही उपस्थित प्रतिहारी को आज्ञा दी कि भीतर से वैशम्पायन को लेकर आजा। उसने भी भूमि पर घुटने व हाथ टेककर 'जो आज्ञा हो महाराज की' इस प्रकार आज्ञा को शिरोधार्य कर जैसा उससे कहा गया था वैसा ही किया।

अथ मुहूर्तादिव प्रतीहार्या गृहीतपंजरो वैशम्पायनो कञ्चुकिनाऽनु-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गम्यमानो राजान्तिकमाजगाम। क्षितितलनिहितकरतलस्तु कञ्चुकी राजानं व्यज्ञापयत्—'देव ! देव्यो विज्ञापयन्ति, देवादेशादेष वैशम्पायनः स्नातः कृताहारश्च देवपादमूलं प्रतीहार्याऽऽनीतः' इत्यभिधाय गते च तस्मिन् राजा वैशम्पायनमपृच्छत् —'कच्चिदभिमतमास्वादितमभ्यन्तरे भवता किंचिदशनजातम् ?' इति, स प्रत्युवाच—'देव ! किं वा नास्वादितम्। सर्वमेव देवीभिः स्वयं करतलोपनीयमानममृतायते।'

टीका :—गृहीतं पञ्जरं यस्य सः गृहीतपंजरः=जिसका पिंजड़ा पकड़ा गया था ऐसा वह। कञ्चुकिना=अन्तःपुर रक्षक से; (कंचुकी का लक्षण) :—

अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुण-गणान्वितः।
सर्वकार्यार्थकुशलः कंचुकीत्यभिधीयते॥

कंचुकी उस पुरुष को कहते हैं जो रनिवास (अन्तः पुर) में स्वतन्त्रता से विचरण करता है। अवस्था में बूढ़ा हो। अच्छे गुणों से युक्त हो। सब बातों का तात्पर्य अच्छी तरह से समझता हो। अनुगम्यमानः = पीछे-पीछे चले जाने पर (followed by) राज्ञः अन्तिकम् राजान्तिकम् = राजा के समीप। क्षितेः तले निहितौ करस्य तलो येन सः क्षितितल-निहित-करतलः + तु = भूमि पर हाथ टेक कर या हाथ रखकर। देवस्य आदेशात् देवादेशात् = महाराज की आज्ञा से। कृतः आहरः येन सः कृताहारः + च = और भोजन कर चुका। देवस्य पादयोः मूलम् देवपादमूलम् = महाराज के चरण-तल में। इति + अभिधाय = ऐसा कहकर। 'कच्चित् = क्या 'कच्चित् कामप्रवेदने' इत्यमरः। अभिमतम् = इच्छा के अनुकूल। आस्वादितम् = चखे ? (खाये)। अभ्यन्तरे = अन्तः पुर में। अशनजातम् = खाने की वस्तुएँ। करतलेन उपनीयमानम् = अपने हाथ से लाया हुआ (पदार्थ) अमृतमिव आचरति इति अमृतायते = अमृत के समान हो रहा है।'

अनुवाद :—इसके दो-एक घड़ी के पश्चात् वैशम्पायन, जिसके पिंजड़े को प्रतिहारी पकड़े हुई थी, कंचुकी के साथ-साथ राजा के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समीप आ गया। भूमि पर हाथ रख कर कञ्चुकी ने राजा से निवेदन किया— 'हे देव, महारानियाँ निवेदन करती हैं कि महाराज (आप) की आज्ञा से यह वैशम्पायन स्नान और भोजन कर चुका और प्रतीहारी के द्वारा यहाँ लाया गया है' ऐसा कहकर उस (कंचुकी) के चले जाने पर राजा ने वैशम्पायन से पूछा--'बतलाइए, क्या आपने महल के अन्दर कोई रसीला पदार्थ चखा (खाया) ?' उसने उत्तर दिया--'हे देव ! कौन सा ऐसा पदार्थ रह गया, जिसका मैंने स्वाद नहीं लिया ? महारानियों द्वारा अपने हाथ से स्वयं उपस्थित किये हुए सभी पदार्थ अमृत के समान प्रतीत हो रहे थे।'

एवं वादिनो वचनमाक्षिप्य नरपतिरब्रवीत्–'आस्तां तावत्सर्वम् अपनयतु नः कुतूहलम्। आवेदयतु भवानादितः प्रभृति कार्त्स्न्येनात्मनो जन्म कस्मिन् देशे, भवान् कथं जातः, केन वा नाम कृतम्, का ते माता, कस्ते पिता, कथं वेदानामागमः, कथं शास्त्राणां परिचयः, कुतः कला आसादिताः, किं जन्मान्तरानुसरणम्, उत वरप्रदानम् अथवा विहंगवेषधारी कश्चिच्छन्नं निवससि, क्व वा पूर्वमुषितम्, कियद्वा वयः, कथं पञ्जरबन्धनम्, कथं चाण्डालहस्तगमनम्, इह वा कथमागमनम् ?' इति वैशम्पायनस्तु स्वयमुपजातकुतूहलेन सबहुमानमवनिपतिना पृष्ठो मुहूर्तमिव ध्यात्वा सादरमब्रवीत्—'देव ! महतीयं कथा। यदि कौतुकमाकर्ण्यताम्'—

टीका :--आक्षिप्य = टालकर रोककर। आस्तां तावत्सर्वम् = यह सब रहने दीजिए। अपनयतु = दूर कीजिए। कार्त्स्न्येन = पूरी तरह से। जन्मान्तरे अनुसरणम् जन्मान्तरानुसरणम् = दूसरे जन्म में जाना। छन्नम् = गुप्त रूप में। उषितम् = रहता रहा। पञ्जरे बन्धनं पञ्जरबन्धनम् = पिंजड़े में बन्द होना। चाण्डालस्य हस्ते गमनम् चाण्डालहस्तगमनम् = चाण्डाल के हाथ में पड़ना। उपजातं कुतूहलं यस्य एवंभूतेन उपजातकुतूहलेन = दिलचस्पी में आये हुए।

अनुवाद :--ऐसा कहते हुए तोते के वचनों को रोक कर राजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ने कहा—"यह सब रहने दीजिए, हमारी उत्कण्ठा (जानने की प्रबल इच्छा) को दूर कीजिए, आप प्रारम्भ से लेकर सारे वृत्तान्त को पूरी तरह से कहिए कि आपका जन्म किस देश में हुआ, आप किस प्रकार से उत्पन्न हुए, आपका 'वैशम्पायन' नाम किसने रखा, आपकी कौन माँ है, कौन पिता है, कैसे आपने वेदों को जाना, कैसे आपको शास्त्रों का ज्ञान हुआ है, कहाँ से आपने कलाएँ सीखीं, कैसे आपको अपने पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का ज्ञान हुआ, या किसी ने कोई वर दिया है जिससे कि पूर्वजन्म की बातों को जानते हो, या तुम कोई ऐसे व्यक्ति हो जो पक्षी के रूप में छिपे हुए निवास कर रहे हो। यहाँ आने से पहिले आप कहाँ रहते थे, आपकी अवस्था कितनी है, किस प्रकार से पिंजड़े के अन्दर बन्धन में पड़े हैं, कैसे चाण्डाल के हाथ में पड़े या यहाँ कैसे आये ? वैशम्पायन ने भी यह जान कर कि अपने-आप जानने के इच्छुक राजा ने बड़े आदर के साथ मुझसे पूछा है, थोड़ी देर तक ध्यान लगाकर बड़े आदर के साथ कहा—'हे देव ! यह एक बड़ी लम्बी कथा है। यदि आपको जानने की प्रबल इच्छा है तो सुन लीजिए—

अस्ति पूर्वापर-जलनिधि-वेलावन-लग्ना, पवित्रा विन्ध्याटवी नाम। तस्यां च भगवतो महामुनेरगस्त्यस्य भार्यया लोपामुद्रया स्वयमुपरचितालबालकैः पादपैरुपशोभितम्, दिशि दिशि शुकहरितैश्च कदलीवनैः श्यामलीकृतपरिसरम्, गोदावर्या परिगतमाश्रमपदमासीत्। तस्य चागस्त्याश्रमस्य नातिदूरे अगाधम्, अनन्तम्, अप्रतिमम्, अपां निधानम् पम्पाभिधानं पद्मसरोऽस्ति। तस्यैव सरसः पश्चिमे तीरे विन्ध्याटवीं स्थितो महान् जीर्णः शाल्मलीतरुः। तत्र च शाखाग्रेषु, कोटरोदरेषु, पल्लवान्तरेषु, स्कन्धसन्धिषु, जीर्णवल्कल - विवरेषु, महावकाशतया विरचितकुलाय सहस्राणि नाना-देश-समागतानि शुक-शकुनि-कुलानि प्रतिवसन्ति स्म।

टीका :—पूर्वश्च अपरश्च पूर्वापरौ यौ जलनिधी (समुद्रौ)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तयोर्यद्वेलावनं (तट काननम्) तावत् पर्यन्तं लग्ना पूर्वापर-जलनिधि-वेलावन लग्ना = जिसकी सीमा पूर्व की ओर पूर्वसमुद्र पर्यन्त तथा पश्चिम की ओर पश्चिमसमुद्र पर्यन्त फैली हुई है। पवित्रा विन्ध्याटवी नाम = विन्ध्य नाम का पवित्र जंगल है। उपरचितम् आलवालकम् येषां ते तैः उपरचितालवालकैः = (वृक्षों के) चारों ओर पानी के लिये बाड़ बनाये हुए। शुकवत् हरितैः शुकहरितैः = तोतों के समान हरे वर्ण वाले। कदलीवनैः = केले के जंगलों से। श्यामलीकृतः परिसरः यस्य तत् श्यामलीकृतपरिसरम् = जिसकी भूमि चारों ओर से कृष्ण वर्ण की हो गयी है। गोदावर्या परिगतम् = गोदावरी नदी से घिरा हुआ। अगस्त्याश्रमस्य = और उस अगस्त्य के आश्रम के। अप्रतिमम् = अनोखा, अपां निधानम् = पानी का स्थान। पम्पाभिधानम् = पम्पा नाम वाला। पद्मसरः = कमलों से युक्त तालाब। अस्ति = है। सरसः = तालाब के। पश्चिमे तीरे = पश्चिम की ओर के किनारे पर। विन्ध्याटवीम् = विन्ध्याचल के जंगल में स्थित। शाल्मली तरुः = सेमल का पेड़ था। शाखाग्रेषु = टहनियों के अगले हिस्से में। कोटराणाम् उदरेषु = खोखलों के अन्दर। पल्लवानाम् अन्तरेषु = पत्तों के अन्दर। स्कन्धानां सन्धिषु = तनों की सन्धियों में। जीर्णानां वल्कलानां विवरेषु = पुराने वल्कलों के छेदों में। महावकाशतया = बहुत दूर तक फैलने के कारण। विरचितानि कुलायसहस्राणि यैः तानि विरचितकुलाय-सहस्राणि = बहुत से घोंसले जिन्होंने बना डाले हैं। नानादेशेभ्यः समागतानि नानादेशसमागतानि = विविध दिशाओं से आये हुए। शुकानाम् शकुनीनाम् च कुलानि शुक-शकुनिकुलानि = तोते तथा अन्य पक्षियों के समूह।

अनुवाद :—विन्ध्य नामक एक जंगल है जिसके भाग पूर्व समुद्र तथा पश्चिम समुद्र तक फैले हुए हैं। इस जंगल में भगवान् महामुनि अगस्त्य का आश्रम था जो ऐसे वृक्षों से सुशोभित था जिसके चारों ओर अगस्त्य महामुनि की अर्धाङ्गिनी लोपामुद्रा ने स्वयं पानी की खाइयाँ बनाई थीं, जो चारों ओर तोतों के समान हरे वर्णवाले केले के वृक्षों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जंगलों से श्यामल वर्णवाला था और जो चारों ओर गोदावरी नदी से घिरा हुआ था। उस अगस्त्य ऋषि के आश्रम के समीप ही अगाध, अनन्त तथा अनोखा और पानी का कोष (Reservoir) पम्पा नामवाला एक कमलों से पूर्ण तालाब था। उसी तालाब के पश्चिम तट पर विन्ध्याचल के जंगल में एक बड़ा पुराना सेमल का वृक्ष था जिसकी शाखाओं के अगले हिस्सों में, खोखलों में, पत्तों के बीच में, तनों के जोड़-स्थानों में पुराने बल्कलों के छेदों में बहुत दूर तक फैले हुए होने के कारण विविध देशों से आये हुए तोते तथा दूसरे पक्षी हजारों घोंसला बना कर रहते थे।

एकस्मिंश्च जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य कथमपि पितुरहमेको विधिवशात् सूनुरभवम्। अतिप्रबलतया चाभिभूता ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे परलोकमगमत्। अभिमतजायाविनाश-शोक-दुःखितोऽपि खलु तातः सुतस्नेहादभ्यन्तरे निरुध्य पटुप्रसरमपि शोकमेकाकी मत्संवर्धनपर एवाभवत्। अतिपरिणीतवयाश्च स्फुटिताग्रकोटिना चञ्चुपुटेन परनीडनिपतिताभ्यः शालिवल्लरीभ्यस्तण्डुलकणान्यादायादाय वृक्षमूलनिपतितानि च शुककुलावदलितानि फलशकलानि समाहृत्य परिभ्रमितुमशक्तो मह्यमदात्। प्रतिदिवसमात्मना च मदुपभुक्तशेषमकरोदशनम्।

टीका :—जायया सह (सहयोगे तृतीया)=अपनी स्त्री के साथ। निवसतः=रहते हुए। पश्चिमे वयसि=वृद्धावस्था में। वर्तमानस्य =विद्यमान। सुनुः+अभवम्=पुत्र हुआ। अतिप्रबलतया=अत्यन्त अधिक होने से। च+अभिभूता=और पीड़ित हुई। मम+एव जायमानस्य=मेरे ही उत्पन्न होने के। प्रसववेदनया=उत्पन्न होते समय की पीड़ा से। अभिमताया जायाया विनाशेन यः शोकः तेन दुःखितः अपि =अनुकूल स्त्री के नष्ट हो जाने से जो शोक हुआ उससे दुःखित भी। सुतस्य स्नेहात् सुतस्नेहात्=पुत्र-स्नेह के कारण। अभ्यन्तरे = मन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ही मन में, भीतर। निरुध्य = **रोककर।** पटुः (स्पष्टः) प्रसरो (विस्तारः) यस्य एवंभूतमपि = **स्पष्ट रूप से जिसका विस्तार हो रहा था ऐसे।** मम संवर्धने परः मत्संवर्धनपरः एव = **मेरे पालन-पोषण ही में लीन।** अभवत् = **हो गया।** अतिपरिणीतं वयः यस्य सः अतिपरिणीत-वयः + च = **अत्यन्त वृद्ध।** स्फुटिता अग्रा कोटिः यस्य सः तेन स्फुटिता-ग्रकोटिना = **आगे फटी हुई तेज नोक वाली।** चञ्चुपुटेन = **चोंच से।** परेषाम् नीडेभ्यः पतिताभ्यः परनीडपतिताभ्यः = **दूसरों के घोसलों से गिरे हुए।** शालीनां वल्लर्यः ताभ्यः शालिवल्लरीभ्यः = **धानों की बालियों से।** तण्डुलकणानि = **चावल के टुकड़ों को।** वृक्षस्य मूले निपतितानि = **वृक्ष की जड़ पर पड़े हुए।** शुकानां कुलैः अवदलितानि शुक कुलाव-दलितानि = **तोतों के झुंडों से कुतरे हुए।** फलानां शकलानि (खण्डानि) = **फलों के टुकड़ों को।** समाहृत्य = **इकट्ठा करके।** परिभ्रमितुम् + अशक्तः = **इधर-उधर जाने में असमर्थ।** मह्यम् = **मुझे।** अददात् = **दिया करता था।** (**दान के योग में चतुर्थी**) दिवसं दिवसम् इति प्रतिदिवसम् = **प्रत्येक दिन।** आत्मना च = **और स्वयम्।** मया उपभुक्तम् ततः शेषम् मदुपभुक्तशेषम् = **मेरे खाने से बचा हुआ।** अकरोत् = **करता था।** अशनम् = **भोजन।**

अनुवाद :—एक पुराने खोखले में अपनी पत्नी के साथ निवास करते हुए, वृद्धावस्था में पहुँचे हुए पिता जी का किसी तरह से भाग्य-वश मैं ही एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उत्पन्न होते हुए मेरे जन्म की अत्यन्त प्रबल-प्रसव वेदना से पीड़ित मेरी माता परलोक को पहुँच गयी। अनुकूल पत्नी के नाश के शोक से दुःखित मेरे पिता पुत्र-प्रेम से उस स्पष्ट फैलते दुःख को दिल ही दिल में रोककर मेरे पालन-पोषण में लग गये। बहुत बूढ़े इधर-उधर घूमने में असमर्थ अपनी फटी हुई चोंच से दूसरे पक्षियों के घोंसलों से गिरे हुए धानों की बालियों से चावलों के टुकड़ों को ले लेकर, पेड़की जड़ पर पड़े हुए तोतों के समूह के कुतरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हुए फलों के टुकड़ों को एकत्र कर मुझे देते जाते थे। प्रत्येक दिन स्वयं मेरे खाने से बचा हुआ भोजन करते थे।

एकदा तु प्रभात-संध्या-राग-लोहिते नभस्तले, स्पष्टे जाते प्रभाते मृगया कोलाहल-ध्वनिरुदचरत् । आकर्ण्य च तमहमश्रुतपूर्वमुपजातवेपथुरर्भकतया भयविह्वलः समीपवर्तिनः पितुर्जरा-शिथिल-पक्षपुटान्तरमविशम् । अनन्तरं च 'गृह्यतां धनुः, अवहितैः स्थीयताम्, विमुच्यन्तां श्वानः इत्यन्योन्यमभिवदतो मृगयासक्तस्य महतो जनसमूहस्य कोलाहलमश्रृणवम् अथ नातिचिरादेव करिणीनां चीत्कृतेन, पत्ररथानां कोलाहलेन, कर्णान्तकृष्टज्यानां धनुषां निनादेन, शूनां च घर्घरध्वनीनां वनान्तरव्यापिना ध्वानेन सर्वतः प्रचलितमिव तदरण्यमभवत् । अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् मृगया-कलकले मन्दीभूतभयोऽहमुपजातकुतूहलः पितुरुत्सगांदीषदिव निष्क्रम्य कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रसार्य शैशवात् किमिदम्, इत्युपजातदिदृक्षस्तामेव दिशं चक्षुः प्राहिणवम् । अभिमुखमापतच्च तस्माद् वनान्तरादनेकसहस्रसंख्यम्, अतिभयानकं शबरसैन्यमद्राक्षम् ।

टीकाः-प्रभातस्य या सन्ध्या तस्याः रागेण लोहिते इति प्रभात-संध्या-राग-लोहिते=**प्रातः कालीन संध्या की लालिमा से लालवर्ण वाले ।** मृगयायाः कोलाहलस्य ध्वनिः मृगयाकोलाहलध्वनिः=**आखेट का शोरगुल ।** उदचरत्=**फैल गया ।** न श्रुतः पूर्वं यः स तम् अश्रुतपूर्वम्=**जिसे आज तक पहिले कभी नहीं सुना था ऐसे ।** उपजातः वेपथुः (कंपनम्) यस्य सः उपजातवेपथुः=**जिसे कँपकँपी उत्पन्न हो गई थी ।** अर्भकतया=**अबोध बालक होने से ।** भयेन विह्वलः भयविह्वलः=**डर के कारण घबराया हुआ ।** जरया शिथिलं यत् पक्षपुटं तस्य अन्तरं जरा-शिथिल-पक्षपुटान्तरम्=**बुढ़ापे के कारण जीर्ण-शीर्ण पंखों के अंदर ।** अविशम्=**घुस गया ।** गृह्यताम्=**उठा लीजिए ।** अवहितैः=**सावधान होकर ।** इति+अन्योन्यम्+अभिवदतः=**इस प्रकार एक दूसरे के पास कहते हुए ।** मृगयायाम् आसक्तस्य=**आखेट में लगे हुए ।** न+अतिचिरात्+एव=**शीघ्र ही ।** करिणीनाम्=**हथिनियों के ।** चीत्कृतेन=**चिंघाड़ से ।** पत्ररथानाम्=**पक्षियों के ।**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर्णान्तम् आकृष्टा ज्या यैःते तेषां कर्णान्ताकृष्टज्यानाम्=कानों तक खींची हैं (धनुष की) डोरियाँ जिनकी ऐसे। धनुषां निनादेन=धनुषों के शब्द से। घर्घरा ध्वनयः येषां तेषां घर्घरध्वनीनाम्=घर्घर शब्द करने वाले। वनान्तरं व्याप्नोति इति वनान्तरव्यापी तेन वनान्तरव्यापिना=सारे वन में फैले हुए। प्रशान्ते तस्मिन् मृगया-कलकले=उस आखेट के शोर-गुल के शान्त हो जाने पर। मन्दीभूतः भयः यस्य स मन्दीभूतभयः=डर के शान्त हो जाने पर। उपजातं कुतूहलं यस्य सः उपजातकुतूहलः=दिलचस्पी रखता हुआ। इति+उपजाता दिदृक्षा यस्य स उपजातदिदृक्षः=इस प्रकार देखने की इच्छा रखता हुआ। चक्षुः प्राहिणवम्=आँख भेज दी, देखा। अनेक सहस्रं संख्या यस्य तत् अनेक-सहस्र-संख्यम्=अनेक हजार की संख्या वाली। शबरसैन्यम्=चाण्डालों या भीलों की सेना को। अद्राक्षम्= देख बैठा।

अनुवाद :—एक समय तो प्रातःकालीन संध्या की लालिमा से आकाश के लाल हो जाने पर, सबेरा साफ-साफ हो जाने पर आखेट की आवाज फैल गयी। उस अनोखी, आजतक कभी न सुनी हुई ध्वनि को सुनकर कँपकँपी को सारी देह में रखता हुआ, छोटा बच्चा होने के कारण डर के मारे घबराया हुआ मैं पास ही में मौजूद पिता के, बुढ़ापे के कारण ढीले पड़े हुए, पंखों के अन्दर घुस गया। इसके अनन्तर 'उठाइए धनुष, सावधान होकर रहिए, छोड़िए कुत्ते,' इस प्रकार आपस में कहते हुए शिकार खेलने में लगे हुए बड़े जन-समूह के शोरगुल से, कानों तक खींची गयी डोरीवाले धनुषों के शब्दों से और घुरघुराते हुए कुत्तों के संपूर्ण जंगल में फैले हुए शब्द से सारा वन मानो आतंकित हो गया था। थोड़ी देर में उस आखेट के शोरगुल के शान्त हो जाने पर कुछ कम भय रखता हुआ मैं अपने दिल में दिलचस्पी रखता हुआ पिताजी की गोद से थोड़ा सा बाहर निकल कर खोखले के अन्दर बैठा हुआ ही अपनी गर्दन को फैलाकर बचपन के कारण 'यह क्या है' इस प्रकार देखने की इच्छा करता हुआ उस ही ओर अपनी निगाह फैला बैठा। अर्थात् मैंने उसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तरफ देखा। इतने ही में उस दूसरे जंगल से हजारों की संख्या में अत्यन्त भयानक सामने आती हुई चाण्डालों या भीलों की सेना मैंने देखी।

मध्ये च तस्यमहतः शबरसैन्यस्य प्रथमे वयसि वर्त्तमानम्, शबरवृन्दैः परिवृतम्, अपत्यमिव विन्ध्याचलस्य, अंशकावतारमिव कृतान्तस्य, सहोदरमिव पापस्य, सारमिव कलिकालस्य, भीषणमपि महासत्त्वतया गम्भीरमिवोपलक्ष्यमाणम्, मातंगनामानं शबरसेनापतिमपश्यमहम्। अभिधानं तु पश्चात्तस्याहमश्रौषम्।

टीकाः—मध्येच तस्य महतः शबरसैन्यस्य=और उस विशाल भील सेना के बीच। प्रथमे वयसि=अवस्था के पथमाभाग में। शबरवृन्दैः=भीलों के झुंड से, परिवृतम्=घिरा हुआ। अपत्यम्+इव=सन्तान जैसी, पुत्र जैसा। विन्ध्याचलस्य=विन्ध्य पर्वत का (इतना विशालकाय)। अंशकावतारम्+इव=एक भाग जैसा। कृतान्तस्य=यमराज का। सहोदरम्+इव=सगा भाई जैसा। पापस्य=पाप का। सारम्+इव=निचोड़ जैसा। कलिकालस्य=कलयुग का (पापमय शरीरवाला, काला,)। भीषणम्+अपि=भयानक भी (था)। महासत्त्वतया=विशालशरीर होने के कारण। गम्भीरम् + इव = बड़ा गम्भीर जैसा। उपलक्ष्यमाणम्=दिखाई देता हुआ। मतंगनामानम्=मतंगनामवाले। शबराणाम् (भिल्लानाम्) सेनापतिम् शबरसेनापतिम्=भीलों के सेनापति को। अपश्यम्=(मैंने) देखा। अभिधानम् तु=नाम तो पश्चात्=(देखने के) अनन्तर। तस्य=उसका। अहम्=मैंने। अश्रौषम्=सुना।

अनुवाद :—उस विशाल भील सेना के बीच में वर्तमान, भीलों के झुंडों से घिरा हुआ, प्रारम्भिक अवस्था या किशोर अवस्था में विद्यमान विन्ध्य पर्वत का पुत्र जैसा (विशाल काय), साक्षात् यमराज का अंश जैसा (क्रूर), पाप का सगा भाई जैसा (काला), कलियुग का सार जैसा (पापमय था), जो भयानक होने पर भी विशालकाय होने से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बड़ा गम्भीर-जैसा दिखाई देते हुए मतंग नामवाले भीलों के सेनापति को मैंने देखा। उसका नाम तो मैंने बाद को सुना।

आसीच्च मे मनसि—'अहो, मोहप्रायमेतेषां जीवितं साधुजनगर्हितं चरितम्। इति चिन्तयत्येव मयि शबरसेनापतिः अटवीभ्रमणसमुद्भवं श्रम-मपनिनीषुः आगत्य तस्यैव शाल्मली तरोरधश्छायायामवतारितकोदण्डः त्वरितपरिजनोपनीतपल्लवासने समुपाविशत्। अपगतश्रमश्चोत्थाय परि-पीताम्भसा सकलेन तेन शबरसैन्येनानुगम्यमानः शनैः शनैरभिमतं दिग-न्तरमयासीत्।

टीकाः—आसीत्+च मे मनसि=**मेरे चित्त में (यह खेद उत्पन्न)** हुआ। अहो=खेद है। मोहः प्रायो यत्र तत् **मोहप्रायम्=अज्ञानमय।** एतेषां जीवितम्=**इनकी जिन्दगी।** साधुजनैः गर्हितम् साधुजन-गर्हितम्=**सज्जन लोगों से निन्दित (है)।** चरितम्=**आचरण** इति=**इस प्रकार।** चिन्तयति+एव=**सोचते हुए।** मयि=**मेरे।** शबराणां सेनापतिः शबर-सेनापतिः=**भीलों का सेनापति।** अटव्यां भ्रमणं तस्मात् समुद्भवम्=**जंगल में घूमने से उत्पन्न।** श्रमम्=**थकावट को।** अपनिनीषुः=**दूर करने की इच्छा करता हुआ।** आगत्य=**आकर** तस्य+एव शाल्मलीतरोः=**उस ही सेमल के वृक्ष के।** अधः=**नीचे।** छायायाम्=**छाया में।** अवतारितम् (अनधिज्यं कृतम्) कोदण्डं (धनुः) येन सः अवतारितकोदण्डः=**धनुष की डोरी को उतारता हुआ।** त्वरितम् परिजनेन उपनीतं यत् पल्लवासनं तस्मिन् त्वरित-परिजनोपनीत-पल्लवासने=**शीघ्र ही भृत्य द्वारा लाये गये पत्ते के आसन पर।** समुपाविशत्=**बैठ गया।** अपगतः श्रमो यस्य सः अपगतश्रमः+च =**थकावट दूर करके।** परिपीतं अम्भः येन सः तेन परिपीताम्भसा=**जल पीते हुए।** सकलेन तेन=**उस सारी।** शबराणां सैन्येन शबरसैन्येन =**भीलों की सेना से।** अनुगम्यमानः=**पीछे-पीछे चलते हुए।** शनैः शनैः=**धीरे-धीरे।** अभिमतम्=**अपनी इच्छा के अनुकूल।** दिगन्तरम् =**एक ओर से दूसरी ओर।** अयासीत्=**चला गया।**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अनुवादः—मेरे मन में (खेद) उत्पन्न हुआ–'अहो, इन शिकारियों का जीवन अज्ञानमय है और इनका आचरण सज्जनों के द्वारा निन्दनीय है, इस प्रकार मेरे सोचते-सोचते जंगल में घूमने से उत्पन्न थकावट को दूर करने की इच्छा करता हुआ उसी सेमल के वृक्ष के नीचे छाया में अपने धनुष की डोरी को उतारता हुआ वह भीलों की सेना का मुखिया शीघ्र ही सेवक के द्वारा लाये हुए पत्तों के आसन पर बैठ गया। थकावट दूर हो जाने पर उठ कर वह शबरसेनापति पानी पिये हुई सारी अपनी सेना के द्वारा पीछे-पीछे अनुसरण किया जाता हुआ धीरे-धीरे दूसरी ओर चल दिया।

एकतमस्तु जरच्छबरो विकृतदर्शनः पिशितार्थी तस्मिन्नेव तरुतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत। स जीर्णशबरो विहगामिषस्वादलालसः सुचिरमारुरुक्षुर्वनस्पतिमामूलादपश्यत्। किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्। यतः स तमभ्रंकषशाखाशिखरमपि सोपानैरिवायत्नेनैव पादपमारुह्यताननुपजातोत्पतनशक्तीन् फलानीव तस्य वनस्पतेः शाखान्तरेभ्यश्च शुकशावकानग्रहीत्। अपगतासूंश्च कृत्वा क्षितावपातयत्।

टीकाः—एकतमः+तु=उनमें से तो एक। जरत्+शबरः=बूढ़े भील ने। विकृतं दर्शनं यस्य सः विकृतदर्शनः=भयानक दिखाई देने वाला। पिशितस्य (मांसस्य) अर्थी पिशितार्थी=माँस चाहने वाला। व्यलम्बत=विलम्ब किया। सः जीर्णश्चासौ शबरः जीर्णशबरः=उस बूढ़े भील ने। विहगानां यत् आमिषम् तस्य आस्वादः तत्र लालसः विहगामिषस्वादलालसः=पक्षियों के माँस के स्वाद में लालसा रखने वाला। सुचिरम्=बड़ी देर तक। आरुरुक्षुः=चढ़ने की इच्छा करता हुआ। वनस्पतिम्=पेड़ को। आमूलात्=जड़ से लेकर। अपश्यत्=देखा। अकरुणानाम्=निर्दयी व्यक्तियों को। अभ्रंकषं शाखानां शिखरं यस्य सः तम् अभ्रंकषशाखाशिखरम्+अपि=गगनचुम्बी शाखाओं की चोटी वाला होने पर भी। सोपानैः+इव=सीढ़ियों से जैसे। अयत्नेन एव=बिना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसी भी प्रयत्न के। पादपम्=**वृक्ष पर।** आरुह्य=**चढ़कर।** अनुपजाता उत्पतनस्य शक्तिर्येषां ते तथा तान् अनुपजातोत्पतनशक्तीन् =**जिनकी उड़ने की शक्ति अभी तक उत्पन्न नहीं हो पाई थी उनको।** शुकानां शावकाः तान् शुकशावकान्=**तोतों के बच्चों को।** फलानि +इव=**फल-जैसे।** तस्य वनस्पतेः=**उस वृक्ष के।** शाखानाम् अभ्यन्तरेभ्यः च=**शाखाओं के भीतर से।** अग्रहीत्=**पकड़ता गया।** अपगताः असवः येषां ते तान् तथाविधान् अपगतासून्=**प्राणों से रहित।** कृत्वा =**करके।** क्षितौ=**जमीन पर।** अपातयत्=**फेंकता गया।**

अनुवादः—**उनमें से एक बूढ़े शिकारी ने कुछ देर तक उसी वृक्ष के नीचे प्रतीक्षा किया। यह बड़ा ही भयानक दिखाई दे रहा था और माँस का लोभी था। पक्षियों के माँस को अधिक पसन्द करने वाला वह बूढ़ा भील पेड़ पर चढ़ने की इच्छा से बड़ी देर तक उस पेड़ को जड़ से देखता रहा। भला निर्दयी व्यक्तियों को कौन सी बात कष्ट-साध्य है। वह उस वृक्ष के अत्यंत ऊँचे होने पर भी उस पर इतनी आसानी से, जैसे कि सीढ़ियों से चढ़ा जाता है, चढ़कर उन तोतों के बच्चों को, जिनकी अभी तक उड़ने की शक्ति उत्पन्न तक नहीं हुई थी, उस वृक्ष के फलों के समान विविध शाखाओं के बीच में से निकालता गया और उन्हें मारकर जमीन पर फेंकता गया।**

तातस्तु मां पक्षसंपुटेनाच्छाद्य तत्कालोचितं प्रतीकारं मन्यमानः स्नेहपरवशो मद्रक्षणाकुलः किंकर्तव्यताविमूढः क्रोडविभागेन मामवष्टभ्य तस्थौ। असावपि पापः शाखान्तरैः संचरमाणः कोटरद्वारमागत्य प्रसार्य विस्रगन्धि करतलं मुहुर्मुहुः दत्त-चञ्चु-प्रहारमुत्कूजन्तमाकृष्य तातं गतासुमकरोत्। मां तु स्वल्पत्वाद् भयसंपिण्डिताङ्गत्वात् सावशेषत्वाच्चायुषः कथमपि पक्षसंपुटान्तरगतं नालक्षयत्। उपरतं च तमवनितले शिथिलशिरोधरमधोमुखममुञ्चत्। अहमपि तच्चरणान्तरे निवेशित-शिरोधरो निभृतमङ्गनिलीनस्तेनैव सहापतम्। अवशिष्टपुण्यतया तु पवनवश्येन पुंजितस्य महतः शुष्कपत्रराशेरुपरि पतितमात्मानमपश्यम्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अङ्गानि येन मे नाशीर्यन्त, यावच्चासौ तस्मात्तरुशिखरान्नावतरति तावदहं पितरमुपरतमुत्सृज्य किंचिदुपजाताभ्यां पक्षाभ्यामीषत्कृतावष्टम्भो लुठन्नितस्ततः कृतान्तमुखकुहरादिव विनिर्गतमात्मानं मन्यमानोऽपरस्येव पितरुत्सङ्गमतिमहतस्तमाल-विटपिनो मूलदेशमविशम् ।

टीका:—पक्षयोः पुटेन पक्षपुटेन=**दोने के आकार में दोनों पंखों से।** आच्छाद्य=**ढक कर।** तस्य कालस्य उचितम् तत्कालोचितम्=**उस समय के योग्य।** प्रतीकारम्=**उपाय।** स्नेहेन परवशः स्नेहपरवशः=**स्नेह के वश में होता हुआ।** मम रक्षणे आकुलः मद्रक्षणाकुलः=**मेरी रक्षा करने में लगा हुआ।** किंकर्तव्यतायां विमूढः किंकर्तव्यताविमूढः=**कुछ सूझ रखने में असमर्थ।** हक्का-बक्का होता हुआ, **'इस समय क्या करना चाहिये' इस बात को निश्चित कर सकने में असमर्थ।** क्रोडस्य विभागेन क्रोडविभागेन=**अपनी गोदी में रोककर।** विस्रगन्धि=**कच्चे माँस की बू वाले।** करतलम्=**हाथों को।** दत्तः चञ्चुप्रहारो येन सः तथा तं दत्तचञ्चुप्रहारम्=**जिसने चोंच मारी थी।** उत्कूजन्तम्=**बड़े जोर से चिल्लाते हुए।** गताः असवः (प्राणाः) यस्य सः तं गतासुम्=**प्राण रहित।** स्वल्पत्वात्=**छोटा होने से।** भयेन संपीडितानि अङ्गानि येन सः भयसंपीडिताङ्गः, तस्य भावः तस्मात् भयसंपीडिताङ्गत्वात्=**डर के कारण सारे अंगों को सिकोड़ लेने से।** सावशेषत्वात् च आयुषः=**अवस्था के शेष रह जाने से।** पक्षपुटस्य अन्तरगतम् पक्षपुटान्तरगतम्=**पंखों के बीच में** उपरतं च तम्=**और मरे हुए उसको।** शिथिला शिरोधरा (कन्धरा, ग्रीवा) यस्य सः तं शिथिल-शिरोधरम्=**ढीली गर्दन वाला, गर्दन टूटा हुआ।** अधोमुखम्=**नीचे मुँह किये हुए।** तस्य चरणयोः अन्तरे तच्चरणान्तरे=**उसके पैरों के मध्य में।** निवेशिता शिरोधरा येन सः निवेशितशिरोधरः=**गर्दन रखे हुए।** निभृतम्=**चुपके से।** अङ्के निलीनः **गोदी में छिपा बैठा हुआ।** अवशिष्टं यत् पुण्यं तस्य भावः अविष्टपुण्यता तया तथोक्तया=**कुछ पुण्यों के शेष रहने से।** पवनवश्येन=**वायु के**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

द्वारा । पुंजितस्य=(उड़कर) इकट्ठा हुए । महतः=ढेर सा । शुष्कपत्रस्य=सूखे पत्तों के । उपरि=ऊपर । अङ्गानि येन मे=जिससे मेरे अंग । न+अशीर्यन्त=टूटे-फूटे नहीं । यावत्+च असौ=और जब तक यह । तस्मात् तरोः शिखरात्=उस वृक्ष की चोटी से । न+अवतरति= नीचे नहीं उतरता है । उपरतम्=मरा हुआ । उत्सृज्य=छोड़कर । उपजाताभ्याम्=निकले हुए । पक्षाभ्याम्=पंखों से । ईषत्कृतः अवष्टम्भः (आधारः आश्रयो वा) येन सः ईषत्कृतावष्टम्भः=कुछ सहारा लिये हुए । लुठन्=लुढ़कता हुआ । कृतान्तस्य मुखमिव मुखं यस्य एवंभूतात् कुहरात् इव=यमराज के मुख के समान मुख रूपी गुफा से जैसे । विनिर्गतम्=छूटी हुई । आत्मानम्=अपनी आत्मा को । मन्यमानः= मानता हुआ । अपरस्य + इव=दूसरे ही जैसे । पितुः=पिता की । उत्सङ्गम्=गोदी में । अतिमहतः=विशाल । तमाल-विटपिनः=तमाल के पेड़ के । मूलदेशम्=जड़ पर । अविशम्=जा बैठा ।

अनुवादः—उस समय इस उपाय को उचित समझने वाले पुत्र-स्नेह के वशीभूत, मुझे बचाने के लिये अत्यन्त उत्सुक, किंकर्त्तव्यविमूढ़ मेरे पिता मुझे अपने पंखों से ढककर अपनी गोदी में लपेटकर बैठ गये । शाखा-शाखा घूमते हुए इस दुष्टात्मा ने भी खोखले के द्वार पर आकर कच्चे मांस की बू वाले हाथों को फैलाकर बार-बार चोंच से काटते हुए तथा चिल्लाते हुए पिता को खींचकर प्राणरहित कर दिया । छोटा होने से, डर के मारे सारे शरीर के अवयवों को सिकोड़ लेने से और मेरी कुछ उम्र के शेष रह जाने से पंखों के अन्दर रहते हुए मुझे तो वह किसी प्रकार देख न सका । मरे हुए उस (पिता) को गर्दन-तोड़ हालत में नीचे मुँह करके फेंक दिया । मैं भी उनके पैरों के बीच में अपनी गर्दन रखे हुए चुपचाप गोदी में छिपा बैठा उनके साथ ही गिर गया । कुछ पुण्यों के शेष रह जाने से वायु के द्वारा एकत्र किये गये सूखे पत्तों की ढेर के ऊपर अपने को पड़ा हुआ देखा जिससे कि मेरे शरीर के हिस्से टूटे-फूटे नहीं, और जब तक यह (भील) उस पेड़ की चोटी से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उतर नहीं पाया तब तक मैं मरे हुए पिता जी को छोड़कर कुछ-कुछ निकले हुए पंखों से कुछ सहारा लेकर इधर-उधर लुढ़कता हुआ अपने को यमराज के मुख के समान उसके मुखरूपी गुफा से निकला हुआ मानता हुआ दूसरे ही पिता की जैसी गोदी के तुल्य उस विशाल वृक्ष की जड़ पर जा बैठा।

अवतीर्य च तेन समयेन क्षितितलविप्रकीर्णान् संहृत्य शुकशिशून् एकलता-पाश संयतानाबध्य पर्णपुटेऽतित्वरितगमनः सेनापति-गतेनैव वर्त्मना दिशमगच्छत्। मां तु संत्रासजाता सर्वांगोपतापिनी बलवती पिपासा परवशमकरोत्। अनया च कालकलया सुदूरमतिक्रान्तः सः पापकृत् इति परिकलय्य किंचिदुन्नमितकन्धरो भयचकितया दृशा दिशोऽवलोक्य तृणेऽपि चलति पुनः प्रतिनिवृत्त इति तमेव पदे-पदे पापकारिण-मुत्प्रेक्षमाणो निष्क्रम्य तस्मात्तमालतरुतलमूलात् सलिलसमीपं सर्त्तुं प्रयत्नमकरवम्।

टीका :—क्षितितले विप्रकीर्णान् क्षितितलविप्रकीर्णान्=**जमीन पर बिखरे हुए।** संहृत्य=**एकत्र करके।** शुकानाम् शिशून् शुकशिशून्=**तोतों के बच्चों को।** एका या लता तल्लक्षणः यः पाशः तेन संयतान् एकलता-पाश-संयतान्=**एक लता की बनी हुई रस्सी से बँधे हुए।** आबध्य =**बाँध करके।** पर्णनिर्मिते पुटे पर्णपुटे (मध्यमपद लोपी समासः) =**पत्तों से बने हुए दोने पर।** अतित्वरितं गमनं यस्य सः अतित्वरित-गमनः=**शीघ्र जाता हुआ।** (येन) सेनापतिः गतः तेन एव सेनापतिगतेन +एव=**जिस मार्ग से सेनापति गया था उसी मार्ग से।** वर्त्मना=**मार्ग से।** संत्रासेन जाता संत्रासजाता=**भय से उत्पन्न।** सर्वाणि अङ्गानि उपतापयतीति सर्वाङ्गोपतापिनी=**सब अङ्गों को सताने वाली।** कालकलया= **घड़ी के बीच, समय के बीच।** सः पापकृत्=**वह पापी।** इति परिकलय्य =**अपने चित्त में सोचकर।** किंचित् उन्नमिता कन्धरा येन सः किंचि-दुन्नमितकन्धरः=**थोड़ा सा गर्दन ऊपर उठाये हुए।** तृणे+अपि (पूर्वरूप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सन्धि) चलति=तिनके के हिलने पर भी। पुनः प्रतिनिवृत्तः इति =फिर लौट गया है ऐसा। तम्+एव=उसी को। पदे-पदे=कदम-कदम पर, पग-पग पर। पापकारिणम्=पापी को। उत्प्रेक्षमाणः=अन्दाज लगाता हुआ। निष्क्रम्य=निकलकर। तस्मात्=उस। तमालस्य तरोः मूलात् तमालतरुमूलात्=तमाल के वृक्ष की जड़ से। सलिलस्य समीपम् सलिलसमीपम्=पानी के पास। सर्तुम्=खिसकने को। प्रयत्नम्+अकरवम्=कोशिश की (मैंने)।

अनुवाद :—वह भी नीचे उतरकर जमीन पर बिखरे हुए तोतों के बच्चों को इकट्ठा करके, एक लता की रस्सी में लटकाकर पत्तों के दोने पर बाँधकर जल्दी-जल्दी उसी मार्ग से चल दिया जिससे कि सेनापति गया था। मुझे तो उसकी डर के कारण उत्पन्न सारे शरीर को सतानेवाली भारी प्यास ने लाचार कर दिया। इसी बीच वह पापी दूर निकल गया होगा, ऐसा विचारकर गर्दन को कुछ ऊपर उठा कर डर के कारण चंचल दृष्टि से इधर-उधर देखकर जरा सा भी पत्ते के हिलने पर 'फिर लौट आया क्या' इस प्रकार पग-पग पर उसी का विचार करता हुआ उस तमाल के पेड़ की जड़ के पास से निकलकर मैंने पानी के पास खिसकने का प्रयत्न किया।

अजातपक्षतया नातिस्थिरतरचरण-संचारस्य स्थूलं-स्थूलं श्वसतः धूलिधूसरस्य संसर्पतो मम समभून्मनसि—'अतिकष्टास्ववस्थास्वपि जीवित-निरपेक्षा न भवन्ति खलु जगति प्राणिनां प्रवृत्तयः। नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनामेव, उपरतेऽपि सुगृहीत-नाम्नि ताते यदहमविकलेन्द्रियः पुनरेव प्राणिमि। धिङ् मामकरुणमति-निष्ठुरम् अकृतज्ञम्। अहो, सोढे पितृमरण-शोक-दारुणं येन मया जीव्यते, उपकृतमपि नापेक्ष्यते, खलं हि खलु मे हृदयम्, मया हि लोकान्तरगत-यामम्बायां नियम्य शोकवेगमाप्रसवदिवसात् परिणतवयसापि सता तैस्तै-रुपायैः संवर्धनक्लेशमतिमहान्तमपि स्नेहवशादगणयता यत्तातेन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परिपालितस्तत्सर्वमेकपदे विस्मृतम्। अतिकृपणः खल्वमी प्राणाः यदुपकारिणमपि तातं क्वापि गच्छन्तमद्यापि नानुगच्छन्ति, सर्वथा न किंचित् न खलीकरोति जीविततृष्णा, यदीदृगवस्थमपि माम् अयमायासयति जलाभिलाषः। अद्यापि दूर एव सरस्तीरम्। अति-प्रबल-पिपासावसन्नानि गन्तुमल्पमपि मे नालमङ्गकानि। अप्रभुरस्म्यात्मनः। सीदति मे हृदयम्।'

टीका:—अजातौ यौ पक्षौ तयोर्भावस्तत्ता तया अजातपक्षतया =**पंखों के न निकलने से**। न विद्यते अतिस्थिरतरः चरणयोः संचारो यस्य सः तस्य नातिस्थिरतर-चरण-संचारस्य=**जिसकी चलने की गति दृढ नहीं हो पाई थी**। स्थूलं स्थूलं श्वसतः=**जोर-जोर से साँस लेते हुए**। धूल्या धूसरस्य धूलिधूसरस्य=**धूल से सने हुए**। संसर्पतः=**खिसकते हुए**। समभूत्=**हुआ, विचार में आया**। अतिकष्टासु=**बड़ी संकटमय**। अवस्थासु+अपि=**दशाओं में भी**। जीविते निरपेक्षा जीवितनिरपेक्षा=**अपने बचने की ओर ध्यान न देते हुए**। जीवितात्+अन्यत् =**बचने या प्राण-धारण करने के अतिरिक्त**। अभिमततरम्=**मनचाही वस्तु, इच्छानुकूल पदार्थ**। सर्वेषां जन्तूनाम् इति सर्वजन्तूनाम्+एव =**सब प्राणियों की ही**। उपरते+अपि=**मर जाने पर भी**। सुगृहीतं नाम यस्य एवंभूतस्य सुगृहीतनाम्नः=**जिसका नाम ग्रहण करने योग्य है ऐसे**। अविकलानि इन्द्रियाणि यस्य सः अविकलेन्द्रियः=**हट्टा-कट्टा, सभी शरीर के अवयवों या इन्द्रियों के विषय ग्रहण करने में समर्थ न होते हुए भी**। प्राणिमि=**जीवित हूँ**। अकरुणम्=**निर्दयी को**। अकृतज्ञम्=**नाशुक्रगुजार को, अगुणग्राही को**। अहो=**खेद का विषय है**। सोढः पितुः मरणस्य यः शोकः तेन दारुणम् इति सोढ-पितृ-मरण-शोक-दारुणम्=**जिसने अपने पिता की मृत्यु के अत्यन्त असह्य शोक को भी जैसे-तैसे सह डाला**। जीव्यते=**जीवन धारण कर रखा है**। उपकृतम्+अपि =**(बहुत समय तक) किया हुआ उपकार भी**। न+अपेक्ष्यते=**अपेक्षा भी नहीं की जा रही है, चाहा भी नहीं जा रहा है**। लोकान्तरं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गतायाम् लोकान्तरगतायाम्=परलोक को पहुँचने पर, मरने पर। नियम्य =दबाकर, रोककर। शोकस्य वेगं शोकवेगम्=शोक के वेग को। आ प्रसवस्य दिवसात्=(मर्यादा या अभिविधि के द्योतक आङ के योग में पंचमी होती है)। आप्रसवदिवसात्=बच्चे को जन्म देने के समय से लेकर। परिणतं वयो यस्य सः परिणतवयाः तेन परिणतवयसा+अपि बूढ़े भी। संवर्धनस्य क्लेशम् संवर्धनक्लेशम्=मुझे बड़ा होने के लिये उठाये गये कष्ट को, मुझे पालने का कष्ट। स्नेहवशात्=पुत्रप्रेम के कारण। अगणयता=कुछ परवाह न करते हुए, न गिनते हुए। अति-कृपणः=अत्यन्त तुच्छ। खलु=निश्चय ही। अमी=ये। प्राणाः=प्राण (हैं)। यत्=जो कि। उपकारिणम्+अपि=उपकार करनेवाले भी। जीविततृष्णा=बचने की आशा, जीवित रहने की इच्छा। ईदृशी अवस्था यस्य सः तम् ईदृगवस्थम्+अपि=ऐसी हालत में होते हुए भी। आयासयति =खेद उत्पन्न करा रही है, प्रयास करा रही है। जलस्य अभिलाषः=पानी की चाह। सरसः तीरम् सरस्तीरम्=तालाब का किनारा। अतिप्रबलया पिपासया अव- सन्नानि=अत्यन्त अधिक प्यास के कारण ढीले-ढाले, दुःखित। अंगकानि=शरीर के हिस्से। अप्रभुः=असमर्थ। अस्मि=हूँ। आत्मनः=अपने विषय में। सीदति=टूक-टूक हो रहा है। मे हृदयम्= मेरा हृदय।

अनुवाद:—पंखों के न निकले होने से पैर ठीक-ठीक मजबूती से न पड़ते हुए, बड़ी-बड़ी लम्बी साँस लेते हुए, धूल से सने हुए और खिसकते हुए मेरे मन में विचार उत्पन्न हुआ—'सचमुच ही संसार में अत्यन्त कष्टमयी अवस्थाओं के आने पर भी प्राणियों की चेष्टाएँ जीवन का लालच नहीं छोड़ती हैं। सब प्राणियों को संसार में जीवन से बढ़कर प्रिय वस्तु कोई दूसरी नहीं है जो कि पवित्र, ग्रहण करने योग्य नामवाले पिताजी के मर जाने पर भी मैं अपनी इन्द्रियों के तन्दुरुस्त रहते हुए फिर भी बचा हुआ ही हूँ। मुझ निर्दयी, कठोर हृदयवाले को धिक्कार है। खेद है कि पिताजी की मृत्यु के कारण उत्पन्न कठोर दुःख को सहकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भी मैं जीवित हूँ। किये हुए उपकार का भी कोई विचार नहीं किया। वास्तव में मेरा हृदय अत्यन्त अज्ञानमय है। माता के मरने पर मेरे उत्पन्न होने के दिन से लेकर शोक के वेग को रोककर बूढ़े होने पर भी उन-उन उपायों से बड़े कठिन लालन-पालन के कष्ट को पुत्र-स्नेह के कारण कुछ भी ध्यान न करते हुए पिताजी ने मुझे पाला और मैंने उन्हें एकदम भुला दिया। वास्तव में ये प्राण बड़े ही नीच हैं जो-कि उपकार करनेवाले पिता का अनुसरण नहीं कर बैठे अर्थात् जहाँ पिताजी गये उनके पीछे-पीछे नहीं गये। जीवन की यह लालसा भला किसे ज्ञान-शून्य नहीं बना देती है जो कि पानी पीने की यह इच्छा इस दशा में भी पहुँचे हुए मुझे परेशान कर रही है। तालाब का किनारा भी अभी दूर ही है। मेरे ये शरीर के हिस्से अत्यन्त प्यास के कारण ढीले पड़ गये हैं और तनिक भी चलने में समर्थ नहीं हैं। मैं स्वयं अपने शरीर को ठीक रखने में असमर्थ हूँ। मेरा दिल फट रहा है।

एवं चिन्तयत्येव मयि तस्मात् सरसो नातिदूरवर्तिनि तपोवने जावालिर्नाम महातपा मुनिः प्रतिवसति स्म। तत्तनयश्च हारीतनामा मुनिकुमारकस्तदेव कमलसरः सिस्नासुरुपागमत्। प्रायेणाकारणमित्राण्यतिकरुणार्द्राणि सदा खलु भवन्ति सतां चेतांसि। यतः सः मां तदवस्थमवलोक्य समुपजातकरुणः समीपवर्तिनम् ऋषिकुमारकमन्यतममब्रवीत्—'अयं कथमपि शुकशिशुरसंजातपक्षपुट एव तरुशिखरादस्मात् परिच्युतः। श्येनमुख परिभ्रष्टेन वानेन भवितव्यम्, तथाहि। अयमामीलितलोचनो मुहुर्मुहुश्चञ्चुपुटं विवृणोति, न शक्नोति शिरोधरां धारयितुम्। तदेहि। यावदेवायमसुभिर्न विमुच्यते, तावदेव गृहाणेमम्। अवतारय सलिलसमीपम्, इत्यभिधाय तेन मां सरस्तीरमानयत्। उपसृत्य च जलसमीपमेकदेशनिहित-दण्ड-कमण्डलुरादाय स्वयं मामामुक्तप्रयत्नमुत्तानितमुखमंगुल्याकतिचित् सलिलबिन्दून् अपाययत्। अम्भः क्षोदकृतसेकं चोपजातनवीनप्राणमुपतटप्ररूढस्य नवनलिनीदलस्य जलशिशिरायां छायायां निधाय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वोचितमकरोत् स्नानविधिम् । अभिषेकावसाने च स मुनिकुमारकदम्ब-केनानुगम्यमानः मां गृहीत्वा तपोवनाभिमुखं शनैरगच्छत् ।

टीका :--सिस्नासुः=स्नान करने की इच्छा से । उपागमत्=आ पहुँचा । प्रायेण = प्रायः । अकारणमित्राणि = बिना किसी प्रयोजन के ही मित्र । अतिकरुणया आर्द्राणि = अत्यन्त करुणा से पसी-जने वाले । सदा खलु = वास्तव में सदा । भवन्ति = होते हैं । सताम् = सज्जनों के । चेतांसि = चित्त । यतः सः माम् = क्योंकि वह मुझे । सा अवस्था यस्य सः तदवस्थः तं तदवस्थम् = उस दशा में । अवलोक्य = देखकर । समुपजाता करुणा यस्य सः समुपजातकरुणः = दया में आकर । समीपवर्तिनम् = निकट में स्थित । ऋषिकुमारकम् अन्यम् = दूसरे ऋषिबालक से । असंजातं पक्षपुटं यस्य सः असंजातपक्षपुटः एव = बिना पंख उगे हुए ही । तरोः शिखरात् तरुशिखरात् = पेड़ की चोटी से । परिच्युतः = गिर पड़ा । श्येनस्य मुखात् परिभ्रष्टेन श्येन-मुख-परिभ्रष्टेन = बाज (शिकारी पक्षी = hawk) के मुख से छूटा हुआ । वा + अनेन =अथवा इसे । भवितव्यम् = होना चाहिए । तथाहि = देखिए । आमीलिते लोचने येन सः आमीलितलोचनः = जिसने आँखें बन्द कर डाली हैं । चञ्चुपुटम् = चोंच को । विवृणोति = खोलता है । न शक्नोति = नहीं सकता है । शिरोधराम् = गर्दन को । धार-यितुम् = सँभालने को । उपसृत्य च = और पास पहुँच कर । जल-समीपम् = पानी के पास । दण्डश्च कमण्डलुश्च दण्डकमण्डलू, एकदेशे निहितौ दण्डकमण्डलू येन सः एकदेशनिहितदण्डकमण्डलुः = एक स्थान पर जिसने अपना दण्ड और कमण्डलु रख दिया । आदाय माम् = मुझे लेकर । आमुक्तः प्रयत्नः (अन्नपानादिशारीरिक क्रियारूपः) येन सः आमुक्तप्रयत्नः = जिसने शरीर की रक्षा के अनुकूल खाना-पीने का काम छोड़ दिया था, ऐसे मुझे । उत्तानितं मुखं येन सः तम् उत्तानितमुखम् माम् = मुँह जिसका खोल दिया गया है ऐसे मुझे । अंगुल्या = उँगली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से । कतिचित् = कुछ । सलिलबिन्दून् = पानी की बूदों को । अपाययत् पिलाया । अम्भसः क्षोदेन कृतः सेकः यस्य स तम् अम्भःक्षोदकृतसेकम् च = पानी को हाथ से टपकाकर जिसका सेक (सींचना) किया गया है । उपजाता नवीनाः प्राणा यस्य सः तम् उपजातनवीनप्राणम् = मानो जिसके नये प्राण उत्पन्न हुए हों ऐसे मुझको । तटस्य समीपे उपतटम् प्ररूढस्य उपतटप्ररूढस्य = तट के पास उत्पन्न । नवं यत् नलन्याः दलम् नवनलिनीदलम् तस्यनवनलिनीदलस्य = नये कमल के पत्ते के । जलेन शिशिरायाम् जल शिशिरायाम् = पानी से ठंडी हुई । स्वस्य उचितम् स्वोचितम् = अपने योग्य । अभिषेकस्य अवसाने च = नहाने के अन्त में । मुनिकुमारकदम्बकेन = मुनिकुमार कदम्बक से । अनुगम्यमानः = पीछा किया जाता हुआ । तपोवनस्य अभिमुखं तपोवनाभिमुखम् = तपोवन की ओर ।

अनुवाद :—जिस समय मैं ऐसा सोच रहा था उस समय उस तालाब के समीप जाबालि नाम के एक महातपस्वी रहते थे । उनका बेटा हारीत उसी पम्पा नामक कमलों के तालाब में स्नान करने की इच्छा से वहाँ आया । प्रायः सज्जनों के चित्त बिना किसी कारण के ही मित्र स्वरूप हो जाते हैं तथा वास्तव में सदैव करुणा से द्रवित होने वाले होते हैं । क्योंकि उसने मुझे उसी दशा में देखकर दया में आकर अपने पास ही उपस्थित दूसरे ऋषिकुमार से कहा—'किसी प्रकार से यह तोते का बच्चा बिना पंख उगे ही या तो इस वृक्ष की चोटी से गिर पड़ा है अथवा बाज पक्षी के मुँह से छूट गया है । देखिए—यह बार-बार चोंच खोलता है । गर्दन भी नहीं सँभाल सकता है । इसलिए आइए, जब तक यह प्राणों से वियुक्त नहीं होता है तब तक इसे पकड़ लिया जाय और इसे पानी के पास पहुँचाया जाय । ऐसा कहकर वह मुझे तालाब के किनारे ले गया । पानी के निकट पहुँचकर एक जगह पर अपना दण्ड व कमण्डलु रखकर स्वयं उसने निश्चेष्ट भाव से मुझे लेकर अपनी अंगुलि से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मेरा मुँह खोल कर मुझे कुछ पानी की बूँदे पिलाईं। पानी की बूँदों के टपकाने से नये प्राणों का जन्म प्राप्त किये हुए मुझे तालाब के किनारे पर उत्पन्न नये कमलदल की पानी से ठंडी हुई छाया में रखकर अपने योग्य स्नान का कार्य किया। स्नान के उपरान्त वह मुनिकुमार कदम्ब के आगे-आगे मुझे लेकर धीरे-धीरे तपोवन की ओर चल दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आश्रम वर्णनम्

अनतिदूरमिव गत्वाहमतिरमणीयमपरमिव ब्रह्मलोकमाश्रममपश्यम्। यत्र च मलिनता हविर्धूमेषु न चरितेषु, मुखरागः शुकेषु न कोपेषु, तीक्ष्णता कुशाग्रेषु न स्वभावेषु, चञ्चलता कदलीदलेषु न मनःसु, चक्षूरागः कोकिलेषु न परकलत्रेषु, मेखलाबन्धो व्रतेषु नेर्ष्याकलहेषु, पक्षपातः कृकवाकुषु न विद्याविवादेषु, भ्रान्तिरनलप्रदक्षिणासु न शास्त्रेषु, गणना रुद्राक्षवलयेषु न शरीरेषु, मुनिबालनाशः क्रतुदीक्षया न मृत्युना, मुखभंगविकारो जरया न धनाभिमानेन।

टीका—मलिनता=**मैलापन**। हविषः धूमेषु हविर्धूमेषु=**यज्ञ के धुएँ में (रहती है)**। न चरितेषु=**न कि किसी के आचरण पर (कलङ्क हो)**। मुखे रागः मुखरागः=**मुख में लालिमा**। शुकेषु=**तोतों में (मुख की लालिमा रहती है)** न कोपेषु मुखरागः=**क्रोध में किसी का मुँह लाल या तमतमाता नहीं था**। कुशाग्रेषु तीक्ष्णता=**कुशों के आगे के भाग में नोकीलापन या पैना होना रहता है**। न स्वभावेषु तीक्ष्णता=**न कि स्वभावों में तीखापन रहता है**। कदलीनां दलेषु चञ्चलता=**केलों के पत्तों में हिलने-डुलने के कारण चञ्चलता थी**। न मनःसु चञ्चलता=**न कि मन में किसी प्रकार की वासनाजन्य चञ्चलता रहती है**। कोकिलेषु चक्षूरागः=**कोयलों में आँखों की लाली रहती है**। न परकलत्रेषु चक्षूरागः=**न कि दूसरे की वनिताओं से आँखों के संकेतों द्वारा उत्पन्न प्रेम रहता है**। व्रतेषु मेखलाबन्धः=**चातुर्मास्यादि व्रतों में मौञ्जीधारण होता है**। न+ईर्ष्याकलहेषु=**न कि किसी से डाह या लड़ाई-झगड़े में कमर कसना पड़े**। कृकवाकुसु पक्षपातः=**मुर्गों की झपटाझपटी में पंखों का गिरना होता है**। न विद्याविवादेषु पक्षपातः=**न कि शास्त्रार्थों में तरफदारी होती हो**। अनिलस्य प्रदक्षिणासु भ्रांतिः=**यज्ञ की अग्नि की**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परिक्रमा की गिनती में धोखा होता है कि कितनी परिक्रमा हो गई होंगी। न शास्त्रेषु भ्रान्तिः=न कि शास्त्रों के सिद्धान्तों की जानकारी में धोखा होता हो। रुद्राक्षवलयेषु गणना (संख्यानम्)=गिनती का काम रुद्राक्ष की मालाओं में किया जाता है। न शरीरेषु गणना (आदरः)= न कि अपने शरीरों की परवाह की जाती हो। क्रतुदीक्षया मुनिबाल-नाशः (मुनीनां वालानां केशानां नाशः)=यज्ञकर्म की दीक्षा के कारण मुनियों के केशों का नाश होता है अर्थात् मुंडन होता है। न मृत्युना मुनिबालनाशः मुनीनां बालानां बालकानां नाशः=न कि मौत के कारण मुनियों के बालकों का नाश होता हो। जरया मुखे भङ्गविकारः= मुखभङ्गविकारः=मुँह में बदसूरती बुढ़ापे से पड़ती हैं। बुढ़ापे से झुरियां पड़ती हैं। न धनाभिमानेन मुखभङ्गविकारः (मुखभङ्गः आस्य-मोटनादि विकृतिः)=न कि धन के गर्व से मुँह में किसी प्रकार की ऐंठन आदि हो।

अनुवाद—थोड़ी ही दूर जाकर मैंने दूसरे ब्रह्मलोक के समान अत्यन्त रमणीय एक आश्रम देखा। यहां पर यज्ञ के धुएँ की मलिनता थी। चरित्र की मलिनता न थी। तोतों के मुख में लालिमा थी। किन्तु क्रोध के कारण किसी का मुख लाल नहीं था। कुशों के आगे के भाग नोकीले थे किन्तु किसी का स्वभाव कटु न था। केले के पत्तों में चंचलता थी किन्तु किसी के मन में किसी भी प्रकार की वासनाजन्य चंचलता न थी। कोयलों की आँखों में लाली थी, किन्तु दूसरे की स्त्रियों के आँखों के संकेत से उत्पन्न प्रेम न था। व्रतों के कारण सब लोग मेखला धारण किये हुए थे, किन्तु डाह या लड़ाई-झगड़े के कारण कमर नहीं कसे हुए थे। मुर्गों की झपटाझपटी थी, किन्तु शास्त्रार्थ में पक्षपात का अभाव था। यज्ञाग्नि की परिक्रमा की गणना में भ्रम उत्पन्न हो जाता था किन्तु शास्त्रों में शंका नहीं उत्पन्न होती थी। रुद्राक्ष की माला की गिनती होती थी न कि शरीर के बल की। यज्ञकर्म की दीक्षा के कारण मुनियों का मुंडन होता था न कि मौत के कारण उनके बालकों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का नाश होता था। बुढ़ापा के कारण, न कि धन-मद के कारण, मुख पर झुरियां थीं।

तस्य चैवंविधस्याश्रमस्य मध्यभागमण्डलमलंकुर्वाणस्य, विस्तीर्णावकाशस्य रक्ताशोकतरोरधश्छायायामुपविष्टम्, भगवन्तं जाबालिमपश्यम्। अवलोक्य चाहमचिन्तयम्—'अहो, प्रभावस्तपसाम्। सर्वतेजस्विनामयममग्रणीः, द्विसूर्यमिवाभाति जगदनेनाधिष्टितं महात्मना। निष्कम्पेव क्षितिरेतदवष्टम्भात् एष प्रवाहः करुणारसस्य, संसरणसेतुः संसारसिन्धोः, आधारः क्षमाम्भसाम्, परशुस्तृष्णा-लतागहनस्य, सागरः सन्तोषामृतरसस्य, उपदेष्टा सिद्धिमार्गस्य, अस्तगिरिरसद्ग्रहस्य, मूलमुपशमतरोः, नाभिः प्रज्ञाचक्रस्य, स्थितिवंशो धर्मध्वजस्य, तीर्थं सर्वद्यावताराणाम्, वडवानलो लोभार्णवस्य, निकषोपलः शास्त्ररत्नानाम्, दावानलो रागपल्लवस्य, मन्त्रः क्रोधभुजङ्गस्य, दिवसकरो मोहान्धकारस्य, अर्गलाबन्धो नरकद्वाराणाम्, कुलभुवनं आचाराणाम्, आयतनं मङ्गलानाम्, अभूमिर्मदविकाराणाम्, दर्शकः सत्पथानाम्, उत्पत्तिः साधुतायाः, नेमिरुत्साहचक्रस्य, आश्रयः सत्त्वस्य, प्रतिपक्षः कलिकालस्य, कोशस्तपसः, सखा सत्यस्य, क्षेत्रमार्जवस्य, प्रभवः पुण्यसंचयस्य, अदत्तावकाशो मत्सरस्य, अरातिर्विपत्तेः, अस्थानं परिभूतेः, अननुकूलोऽभिमानस्य, अनायत्तो रोषस्य, अनभिमुखः सुखानाम्। अस्य भगवतः प्रभावात् फलमूलभृतो वल्कलिनो निश्चेतनास्तरवोऽपि सनियमा इव लक्ष्यन्ते, किं पुनः सचेतनाः प्राणिनः' इति।

टीका:—मध्यभागस्य मण्डलम् अलंकुर्वाणस्य=मध्य भाग को अलंकृत करते हुए। विस्तीर्णः अवकाशो यस्य सः तस्य विस्तीर्णावकाशस्य=खूब फैले हुए। अशोकतरोः=अशोक वृक्ष के। अधः=नीचे। छायायाम्=छाया में। उपविष्टम्=बैठे हुए। प्रभावः+तपसाम्=तपस्याओं का (कितना) प्रभाव (है)। सर्वेषाम् तेजस्विनाम्=सब दमकते हुए पदार्थों का अग्रणीः+अयम्=यह अगुआ (है) द्वौ सूर्यौ यत्र तत् द्विसूर्यम्+इव= दो सूर्य जिसमें निवास करते हों इस प्रकार का जैसे। आभाति=शोभायमान देता है। जगत्=संसार। अनेन=इससे। अधिष्ठितम्=युक्त।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महात्मना = महात्मा से । निष्कम्पा+इव = नहीं काँपती हुई जैसे । अडिग जैसे, क्षितिः = पृथ्वी । एतस्य अवष्टम्भात् एतदवष्टम्भात् = इसके दबाये रखने से । संसरणस्य सेतुः संसरणसेतुः = पार जाने का पुल । संसार एव सिन्धुः तस्य संसारसिन्धोः = संसार रूपी समुद्र का (है) । क्षमा एव अम्भांसि क्षमाम्भांसि तेषां क्षमाम्भसाम् = क्षमा रूपी जल का । तृष्णा एव लता तद्गहनस्य = तृष्णा रूपी लता के जंगल का । संतोष एव अमृतरसः तस्य = संतोष रूपी अमृतरस का । सिद्धिमार्गस्य सिद्धेः मार्गस्य = सिद्धि के मार्ग का । असन् यः ग्रहः तस्य असद्ग्रहस्य = बुरे ग्रह का । उपशमतरोः = शम (शान्त करना) रूपी वृक्ष की । प्रज्ञाचक्रस्य = बुद्धि चक्र का । स्थित्याः वंशः स्थितिवंशः = पताकादण्ड (है) । धर्म-ध्वजस्य = धर्म रूपी पताका का । सर्वासां विद्यानाम् एव अवताराणाम् = सभी विद्यारूपी प्रवेश मार्गों का । वडवानलः = वाडव नाम की समुद्राग्नि (है) । लोभः एव अर्णवः तस्य लोभार्णवस्य = लालच रूपी समुद्र का निकषार्थम् उपलः निकषोपलः = कसौटी है । शास्त्ररत्नानाम् = शास्त्ररूपी रत्नों का । दावानलः = बन की आग है । रागः एव पल्लवः, तस्य रागपल्लवस्य = अनुराग या इच्छा रूपी पत्तियों का । क्रोधः एव भुजंगः क्रोध-भुजंगः तस्य क्रोध-भुजंगस्य = क्रोध रूपी सर्प का । दिवसकरः = सूर्य (है) । मोह एव अन्धकारः तस्य मोहान्धकारस्य = अज्ञानरूपी अन्धकार का । अर्गलाबन्धः = कपाट बन्द करके अन्दर से लगाया जाने वाला डंडा । नरकद्वाराणाम् = नरक के फाटकों का । आचाराणाम् = अच्छे चरित्रों का । मङ्गलानाम् = शुभ कार्यों का । मदविकाराणाम् = अहंकार की वृत्तियों का । दर्शकः = दिखाने वाला । सत्पथानाम् = अच्छे मार्गों का । उत्पत्तिः साधुतायाः = सज्जनता का उत्पत्तिस्थान (है) । नेमिः = धुरी । उत्साह एव चक्रम् तस्य उत्साहचक्रस्य = उत्साहरूपी चाक की । आश्रयः सत्वस्य = सत्त्व गुण का आश्रय है । आर्जवस्य = सरलता का । पुण्यसंचयस्य = धर्म के समूह का । अदत्तः अवकाशः येन सः अदत्तावकाशः = जिसने अवसर ही नहीं दिया । मत्सरस्य = दूसरे के गुणों को देख न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सकने का। अरातिः=शत्रु (है)। परिभूतेः=पराभव का। न अनुकूलः अननुकूलः = प्रतिकूल (है), अनुकूल नहीं। अभिमानस्य = अहंकार का। न आयत्तः अनायत्तः=अधीन नहीं। रोषस्य=क्रोध के। न अभिमुखः अनभिमुखः=मुँह फेरे हुए है, अस्य भगवतः प्रसादात्+एव=इस भगवान के प्रभाव से ही। उपशान्तम् वैरम् यस्मिन् तत् उपशान्तवैरम् =वैर रहित। अपगतः मत्सरः (परगुणोत्कर्षासिहनम्) यस्मिन् तत्=मत्सर से रहित। तपोवनम्=आश्रम (है)। फलानि च मूलानि च बिभ्रतीति फलमूलभृतः=फल मूल धारण करने वाले। वल्कलिनः=वल्कल धारण करने वाले। निश्चेतनाः=जड़। सनियमाः इव=व्रत को धारण किए हुए जैसे। लक्ष्यन्ते=दिखाई देते हैं।

अनुवादः–इस प्रकार के उस आश्रम के मध्यभाग को सुशोभित करते हुए दूर तक फैले हुए लाल अशोक वृक्ष के नीचे छाया में बैठे हुए, भगवान जाबालि को देखा। उसे देखकर मैंने सोचा–'अहो तपस्याओं का कैसा प्रभाव है ! यह मुनि सब तेजस्वी पदार्थों का मुखिया दिखाई देते हैं। इस महात्मा से युक्त होने से यह संसार ऐसा प्रतीत होता है जैसे इसमें दो सूर्य हों। इनके बैठे रहने से या दबाये रहने से पृथ्वी निश्चल सी प्रतीत होती है। यह करुणा रस के तो प्रवाह हैं, करुणा तो इनसे निकलती रहती है। संसार रूपी समुद्र से पार जाने के यह पुल है। क्षमा-रूपी जल के यह आधार हैं। लालच रूपी लताओं के जंगल के कुल्हाड़ा हैं, अर्थात् लालच को जड़ से काट फेंकने वाला हैं। संतोष रूपी अमृतरस के यह समुद्र हैं। सिद्धिमार्ग के यह उपदेशक हैं। बुरे ग्रहों के अस्ताचल हैं अर्थात् बुरे ग्रह इनके पास आते ही अस्त हो जाते हैं। (बुरे ग्रहों का इन पर कोई प्रभाव ही नहीं होता है) सब प्रकार शान्ति को धारण करने का स्वभाव रूपी वृक्ष की यह जड़ हैं। प्रज्ञा चक्र के मध्य भाग हैं। धर्म की ध्वजा का यह बांस के डंडे हैं। सम्पूर्ण विद्याओं के मार्गों के यह तीर्थ-स्थान हैं, लोभ रूपी समुद्र के यह वाडवानल के समान जलाने वाले हैं, शास्त्ररूपी रत्नों की कसौटी है अर्थात् शास्त्रों की सच्ची

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परख रखने वाले हैं। इच्छाओं को भस्म करने के लिये जंगल की पत्तियों को जलाने वाली बन की आग के समान हैं। क्रोध रूपी साँप के मन्त्र हैं अर्थात् जिस प्रकार मन्त्र के द्वारा साँप कुछ नहीं कर सकता है ऐसे ही क्रोध इनका कुछ नहीं कर सकता है। मोह रूपी अन्धकार के लिए सूर्य हैं। नरक के द्वारों के लिए फाटक बन्द करने के डंडे हैं। आचरणों के लिए उत्तम जन्म स्थान हैं। मङ्गलमय पदार्थों के यह घर हैं। अहंकार उत्पन्न करने वाली बातों के योग्य नहीं हैं। अच्छे मार्गों को दिखाने वाले हैं। सज्जनता की जन्मभूमि हैं। उत्साहरूपी चक्के की सत्व के आश्रय हैं। कलियुग के शत्रु हैं। तपस्या के भंडार हैं। सत्य के मित्र हैं। मृदुता के खेत हैं। धर्म के समूह की उत्पत्ति-स्थान हैं। दूसरे की उन्नति को देखकर ईर्ष्या करने का तो अवसर ही नहीं मिलता है। विपत्ति के शत्रु हैं। पराभव का तो स्थान ही नहीं है। अभिमान के अनुकूल ही नहीं है अर्थात् अभिमान के योग्य है ही नहीं। रोष के अधीन नहीं है। सुखों के पराङ्मुख है। इसी भगवान् के प्रसाद से सारा तपोवन शान्तिमय वातावरण से युक्त है और मत्सर से रहित है। इसी भगवान् के प्रसाद से फल और मूल को धारण करनेवाले वृक्ष की छाल धारण करते हुए जड़ वृक्ष भी व्रत-नियम करते हुए जैसे दिखाई देते हैं, भला चेतन प्राणियों का तो कहना ही क्या है ?" इस प्रकार।

एवं चिन्तयन्तमेव मां तस्यामेवाशोक-तरोरधश्छायायामेकदेशे स्थापयित्वा हारीतः पादावुपगृह्य कृताभिवादनः पितुरनतिसमीपवर्तिनि कुशासने समुपाविशत्। आलोक्य तु मां सर्व एव मुनयः'कुतोऽयमासादितः शुकशिशुः, इति तमासीनमपृच्छन्। असौ तु तानब्रवीत्—अयं मया स्नातुमितोगतेन कमलिनी सरस्तीर-तरुनीड निपतितः शुकशिशुर्जातदयेनानीतः तद् यावदयमप्ररूढपक्षतिः अक्षमोऽन्तरिक्षमुत्पतितुं तावदत्रैव कस्मिंश्चिदाश्रमतरुकोटरे फलरसेन संवर्ध्यमानो धारयतु जीवितम्। अनाथपरिपालनं हि धर्मोऽस्मद्विधानाम्, इत्येवमादिकमस्मत् संबद्धालापमाकर्ण्य किञ्चिदुपजात-कुतूहलो भगवान् जाबालिः पुण्यजलैः प्रक्षालयन्निव माम-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तिप्रशान्तया दृष्ट्या दृष्ट्वा सुचिरमुपजातप्रत्यभिज्ञान इव पुनःपुनर्विलोक्य 'स्वस्यैवाविनयस्य फलमनेनानुभूयते' इत्यवोचयत् ।

टीका—अशोकतरोः+अधः = **अशोक वृक्ष के नीचे**। छायायाम् = **छाया में**। एकदेशे = **एक जगह में**। हारीतः पादौ + उपगृह्य=**हारीत पैरों में पड़कर**। कृतं अभिवादनम् येन सः कृताभिवादनः = **प्रणाम करता हुआ**। अनतिसमीपवर्तिनि = **कुछ दूर पर विद्यमान**। कमलिनी सरसः तीरे यः तरुः तस्मिन् यः नीडः तस्मात् निपतितः इति कमलिनी-सरस्तीर-तरु-नीड-निपतितः = **कमलिनी तालाब के किनारे पर जो वृक्ष है उसमें जो घोंसला है उससे पड़ा हुआ**। शुकस्य शिशुः शुकशिशुः = **तोते का बच्चा**। जाता दया यस्य सः तेन जातदयेन = **दया के वश में हुए**। आनीतः = **यहाँ ला छोड़ा है, लाया हूँ**। अप्ररूढा पक्षतिः यस्य सः अप्ररूढ़पक्षतिः = **पंख जिसके पैदा नहीं हुए हैं**। अन्तरिक्षम् = **आकाश में**। उत्पतितुम् = **उड़ने के लिये**। संवर्ध्यमानः = **पाला-पोषा जाता हुआ**। अनाथानाम् परिपालनम् अनाथपरिपालनम् हि = **दीन जनों की रक्षा करना ही**। धर्मः = **कर्तव्य है**। अस्मद्विधानाम् = **हम जैसे लोगों का**। इति+एवम्+आदिकम् = **इत्यादि-इत्यादि इस प्रकार से**। अस्मत् संबद्धालापम् = **मेरे सम्बन्ध में जिक्र**। आकर्ण्य = **सुनकर**। किंचित् उपजातं कुतूहलं यस्य सः किञ्चिदुपजातकुतूहलः = **कुछ दिलचस्पी रखता हुआ**। पुण्यजलैः = **मन्त्र से पवित्र किये गये जलों से**। प्रक्षालयन्+इव = **धोते हुए जैसे**। माम् = **मुझे**। अतिप्रशान्तया = **अत्यन्त शान्त**। सुचिरम् = **बड़ी देर तक**। उपजातं प्रत्यभिज्ञानं यस्य सः उपजातप्रत्यभिज्ञान इव = **पूर्व-परिचित होने का ज्ञान जैसे उत्पन्न होता हुआ**। स्वस्य+एव=**अपने ही**। अविनयस्य=**अशिष्ट आचरण का**। फलम् = **फल, भोग, परिणाम**। अनेन + अनुभूयते = **इससे भोगा जा रहा है**।

अनुवादः—**इस प्रकार सोचते हुए मुझको उसी अशोक वृक्ष के नीचे की छाया में किसी एक स्थान में रखकर हारीत ने अपने पिता जी के चरणों को पकड़ कर प्रणाम किया और कुछ दूर पर विद्यमान शुक के**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आसन पर बैठ गया। मुझे देखते ही सभी मुनि लोगों ने बैठे हुए उस हारीत से पूछा कि यह तोते का बच्चा कहाँ मिला ? इसने भी उनसे कहा कि मैं कमलिनी-तालाब के किनारे स्नान करने के लिए गया था। वहाँ पर एक वृक्ष के घोंसले से यह तोते का बच्चा गिर पड़ा। इसे देख कर मुझे दया आ गई, अतः इसे मैं यहाँ ले आया हूँ। अब, जब तक इसके पँख नहीं उगते हैं और जब तक यह आसमान में उड़ने में असमर्थ है तब तक यहीं किसी आश्रम के वृक्ष के खोखले में फलों के रस से पाला-पोसा जाता हुआ यह अपने जीवन को धारण करे। हम जैसे लोगों का दीन-जनों का पालन करना धर्म है इत्यादि। मेरे विषय की बातचीत सुनकर भगवान् जाबालि के हृदय में कौतुक उत्पन्न हुआ। मन्त्रपूत जल से मानो मुझे धोते हुए उन्होंने बड़ी देर तक अत्यन्त शान्त मुद्रा से मुझे देखा। कुछ पूर्व-परिचय का ज्ञान रखते हों, इस प्रकार बार-बार मुझे देखकर उन्होंने कहा—यह अपने ही आचरण का फल भोग रहा है।

सर्वैव सा तापसपरिषच्छ्रुत्वा विदिततत्प्रभावा 'कीदृशोऽनेनाविनयः कृतः, किमर्थं वा कृतः, क्व वा कृतः, जन्मान्तरे वा कोऽयमासीत्' इति कुतूहलिन्यभवत्, उपनाथितवती च तं भगवन्तम्—'आवेदय, प्रसीद भगवन्, कीदृशस्याविनयस्य फलमनेनानुभूयते। कश्चायमासीज्जन्मान्तरे। विहगजातौ वा कथमस्य संभवः। किमभिधानो वायम्, अपनयतु नः कुतूहलम्। आश्चर्याणां हि सर्वेषां भवान् प्रभवः।'

टीकाः—तापसानाम् परिषत् तापसपरिषत् = तपस्वियों की सभा। विदितः तस्य प्रभावो यया सा विदिततत्प्रभावा = उस (जाबालि) के प्रभाव को जानती हुई। विहगानां जातौ विहगजातौ वा = या पक्षियों की जाति में। कथम्+अस्य = कैसे इसका। संभवः = उत्पत्ति हुई है। किम्+अभिधानः वा = अथवा इसका क्या नाम है। अपनयतु = दूर कीजिए। नः = हमारा। कुतूहलम् = जानने की प्रबल इच्छा। आश्चर्याणाम् हि = आश्चर्यमय पदार्थों का। सर्वेषाम् = सबका। प्रभवः = उत्पत्तिस्थान (हैं)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अनुवादः——भगवान् जाबालि के प्रभाव को जानने वाली तपस्वियों की वह संपूर्ण सभा इस बात को सुनकर यह जानने की अत्यन्त इच्छुक हुई कि इसने किस प्रकार का अशिष्ट आचरण किया है, किसलिये किया है, कहाँ किया है, या दूसरे जन्म में यह कौन था ? इसलिये उस सभा ने जाबालि मुनि से याचना की——'हे भगवन् ! आप प्रसन्न हों तथा बतलायें कि किस प्रकार के दुष्टाचरण का फल यह भोग रहा है ? यह दूसरे जन्म में कौन था ? पक्षि-जाति में इसका जन्म कैसे हुआ ? इसका नाम क्या है ? हमारी इस बात को जानने की प्रबल अभिलाषा को पूरी कर दीजिए। आप सभी आश्चर्यमय पदार्थों के उत्पत्ति स्थान हैं।

इत्येवमुपयाच्यमानस्तपोधनपरिषदा सः महामुनिः प्रत्यवदत्—'अतिमहदिदमाश्चर्यमाख्यातव्यम्। अल्पशेषमहः। प्रत्यासीदति च नः स्नानसमयः। भवतामप्यतिक्रामति देवार्चनविधिवेला। तदुत्तिष्ठन्तु भवन्तः। सर्व एवाचरन्तु यथोचितं दिवसव्यापारम्। अपराह्णसमये भवतां पुनः कृतमूलफलाशनानां विस्रब्धोपविष्टानां आदितः प्रभृति सर्वमावेदयिष्यामि योऽयम्, यच्चानेन कृतमपरस्मिन् जन्मनि, इह च लोके यथास्य संभूतिः, अयं च तावदपगतक्लमः क्रियतामाहारेण। नियतमयमप्यात्मनो जन्मान्तरोदन्तं स्वप्नोपलब्धमिव मयि कथयति सर्वमशेषतः स्मरिष्यति' इत्यभिदधदेवोत्थाय सह मुनिभिः स्नानादिकमुचित-दिवस-व्यापारमकरोत्।

टीका :——उपयाच्यमानः = **प्रार्थना किया जाता हुआ**। तपोधनानां परिषत् तपोधनपरिषत्, तया तपोधन-परिषदा = **तपस्वियों की सभा द्वारा**। सः महामुनिः = **महामुनि जाबालि ने**। प्रत्यवदत् = **उत्तर दिया**। अतिमहत् = **बहुत लम्बा-चौड़ा**। आश्चर्यम् = **विस्मयजनक वृत्तान्त**। आख्यातव्यम् = **कहना होगा**। अल्पशेषम् = **थोड़ा सा शेष**। अहः = **दिन है**। प्रत्यासीदति = **बिलम्ब होता है**। नः = **हमारा**। अतिक्रामति = **टलता है, खराब होता है**। देवानाम् अर्चनस्य विधेः वेला इति देवार्चनविधिवेला = **देवताओं के पूजने का समय**। उत्तिष्ठन्तु = **उठें**। दिवसस्य व्यापारम् दिवसव्यापारम् = **दिन का काम**।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपराह्णसमये = **सायंकाल के समय** । कृतम् मूलफलयोः अशनं यैः ते तथोक्ताः, तेषां कृतमूलफलाशनानाम् = **कन्द-मूल-फल को खाये हुए।** विस्रब्धं (सावधानं) यथा स्यात्तथा उपविष्टानाम् = **बड़ी सावधानी के साथ बैठे हुए** । आदितःप्रभृति = **प्रारम्भ से लेकर** । आवेदयिष्यामि = **कह दूँगा** । अपरस्मिन्+जन्मनि = **दूसरे जन्म में** । अपगतः क्लमः यस्य सः अपगत-क्लमः = **थकावट से मुक्त** । आहारेण = **भोजन करने से** । जन्मान्तरस्य उदन्तम् जन्मान्तरोदन्तम् = **दूसरे जन्म का वृत्तान्त** । स्वप्ने उपलब्धम् स्वप्नोपलब्धम् इव = **स्वप्न में देखा हुआ-जैसे** । मयि कथयति = **मेरे कहने पर** । अशेषतः = **पूरी तरह से** । स्मरिष्यति = **स्मरण कर लेगा** । इति+अभिदधत्+एव = **ऐसा कहता हुआ ही** । उत्थाय = **उठकर** । दिवसस्य व्यापारम् दिवसव्यापारम् = **दिन का काम** ।

अनुवाद :—तपस्वियों के उस समाज द्वारा इस प्रकार की याचना करने पर उस मुनि ने उत्तर दिया—'यह आश्चर्यजनक वृत्तान्त बड़ा लम्बा-चौड़ा है । दिन थोड़ा सा शेष है । हमारे स्नान करने के समय में विलम्ब होता है । आप लोगों का भी देवताओं के पूजने का समय टलने वाला है । इसलिये आप लोग उठिये । सभी लोग दिन के योग्य कार्य करें । सायंकाल के समय तो फिर दूसरी बार आप लोगों के भोजन कर लेने तथा सावधानी के साथ बैठे रहने पर आरम्भ से लेकर बतला दूँगा कि यह कौन था, इसने दूसरे जन्म में क्या किया था, इस संसार में किस तरह इसकी उत्पत्ति हुई । तब तक भोजन करा कर इसकी थकावट दूर कीजिए । यह भी निश्चित है कि यह अपने दूसरे जन्म के वृत्तान्त को मानों स्वप्न में देखे हुए के समान मेरे कहने पर पूरी तरह से याद कर लेगा । यह कह कर उन्होंने मुनियों के साथ-साथ स्नान इत्यादि दिन के योग्य उचित कार्य किया ।

अनेन च समयेन परिणतो दिवसः । दिवसावसाने सन्ध्या तपोधनै-रदृश्यत । तारागणमम्बरमधारयत् । अपहाय मुनि-हृदयानि सर्वं मन्यदन्धकारतां तिमिरमनयत् । गगनतलममृतदीधितिरध्यतिष्ठत् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शनैःशनैश्च दूरोदिते भगवति हिमदीधितौ अर्धयाममात्रावखण्डितायां विभावर्यां हारीतः कृताहारं मामादाय सर्वैस्तैर्महामुनिभिरुपसृत्य चन्द्रातपोद्भासिनि तपोवनैकदेशे वेत्रासनोपविष्टमनतिदूरवर्तिना जालपादनाम्ना शिष्येण मन्दमुपवीज्यमानं पितरमवोचत्—'हे तात, सकलेयमाश्चर्य-श्रवण-कुतूहलाकलित-हृदया समुपस्थिता तापसपरिषदाबद्धमण्डला प्रतीक्षते। व्यपनीतश्रमश्च कृतोऽयं पतत्रिपोतः। तदावेद्यतां यदनेन कृतम्। अपरस्मिन् जन्मनि कोऽयमभूद्, भविष्यति' इति। एवमुक्तस्तु सः महामुनिरग्रतः स्थितं मामवलोक्य तांश्च सर्वानेकाग्रान् श्रवणपरान् मुनीन् बुद्ध्वा शनैः शनैरब्रवीत्—'श्रूयतां यदि कौतूहलम्—'

टीका:—परिणतः=**बदल गया, व्यतीत हो गया**। तपोधनैः+अदृश्यत **तपस्वियों से दिखाई दिया**। तारागणम्=**तारों का समूह**। अम्बरम्=**आकाश ने**। अधारयत्=**धारण किया**। मुनीनां हृदयानि मुनिहृदयानि=**मुनियों के दिलों को**। गगनतलम्=**आकाश में**। अमृतस्य दीधितयः यस्य सः अमृतदीधितिः=**अमृत की किरणवाला, चन्द्रमा**। अध्यतिष्ठत्=**आ बैठा (अधिपूर्वक स्था धातु सकर्मक होती है**। "अधि शीङ्. स्थासां कर्म") **आकाश में निकल जाने पर**। भगवति हिमाः दीधितयः यस्य स तस्मिन्=**भगवान् ठंडी किरणों वाले चन्द्रमा के**। अर्धयाममात्र + अवखण्डितायाम्=**आधा पहर मात्र के हो जाने पर**। विभावर्याम्=**रात्रि के** चन्द्रस्य आतपेन उद्भासते इति चन्द्रातपोद्भासी तस्मिन् चन्द्रातपोद्भासिनि **चन्द्रमा के प्रकाश से चमकते हुए**। जालपादनाम्ना=**जालपाद नाम वाले**। शिष्येण=**शिष्य से**। मन्दम् उपवीज्यमानम्=**धीरे-धीरे पंखा झले जाते हुये**। आश्चर्यस्य यत् श्रवणं तत्र यत् कुतूहलम् तेन आकलितम् हृदयम् यस्याः सा आश्चर्य-श्रवण-कुतूहलाकलित-हृदया=**आश्चर्यजनक वृत्तान्त के सुनने के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित**। व्यपनीतः (दूरीकृतः) श्रमः यस्य सः व्यपनीतश्रमः च=**थकावट जिसकी दूर कर दी गई है ऐसा**। पतत्रिणः पोतः पतत्रिपोतः=**चिड़िया का बच्चा**। आवेद्यताम्=**कहिये**।

अनुवाद:—**इसी समय दिन अस्त हो गया। दिन अस्त हो जाने**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर उन तपस्वियों ने सन्ध्या देखी। आकाश ने तारागण को धारण किया। अन्धकार ने मुनि जन के हृदय को छोड़कर निखिल संसार की वस्तुजात को अन्धकार-मय कर दिया। चन्द्रमा आकाश में चढ़ आया। धीरे-धीरे भगवान् चन्द्रमा के दूर तक उदित हो जाने पर तथा आधा प्रहर रात्रि बीत जाने पर मुनिकुमार हारीत ने भोजन किये हुए मुझको लेकर उन सभी महामुनियों के साथ आकर चन्द्रमा के प्रकाश से उज्ज्वल उस तपोवन के किसी एक प्रदेश में चटाई पर बैठे हुए तथा निकट ही बैठे हुए जालपाद नामक शिष्य से पंखा किये जाते हुए अपने पिता से कहा—'पिताजी, यह सम्पूर्ण तपस्वियों का समाज इस आश्चर्यजनक वृत्तान्त को सुनने के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित यहाँ पर उपस्थित है और गोल घेरे में बैठा हुआ आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यह पक्षी का बच्चा भी थकावट से मुक्त कर दिया है। अतः बताइए जो कुछ इसने किया था। दूसरे जन्म में यह कौन था और आगे आने वाले जन्म में यह कौन होगा? उसके ऐसा कहने पर उस महामुनि ने सामने बैठे हुए मुझको देखकर और उन सब मुनियों को सुनने में दत्तचित्त जानकर धीरे-धीरे कहा—यदि आप लोगों की प्रबल इच्छा है तो सुनिये—

अस्ति सकल-त्रिभुवन-ललाम-भूता विजितामर-लोक-द्युतिरवन्तीपूज्जयिनी नाम। यस्यां च भगवान् महाकालाभिधानः शिवः स्वयं वसति। तस्यां च नगर्यां प्रतिनिधिरिव पुरुषोत्तमस्य परिहृतप्रजापीडो राजा तारापीडो नाम। तस्य च राज्ञो भुवन-राज्य-भार-नौ-कर्णधारः, धाम धैर्यस्य, सेतुः सत्यस्य, गुरुर्गुणानाम्, आचार्य आचाराणाम्, धाता धर्मस्य, सर्वकार्येष्वाहितमतिरमात्यो ब्राह्मणः शुकनासो नामासीत्। स राजा बाहुना विजित्य सप्तद्वीपवलयां वसुन्धरां तस्मिञ्छुकनासनाम्नि मन्त्रिणि सुहृदीव राज्यभारमारोप्य सुस्थिताः प्रजाः कृत्वा कर्तव्यशेषमपरमभजत्। प्रायो यौवनसुखान्यनुबभूव च। शुकनासोऽपि महान्तं राज्यभारमनायासेनैव प्रज्ञाबलेन बभार।

टीका—सकलं यत् त्रिभुवनं तस्य ललामभूता सकलत्रिभुवन ललाम-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भूता = तीनों भुवनों में श्रेष्ठ । विशेषेण जिता अमरलोकस्य द्युतिः यया सा विजितामरलोकद्युतिः = स्वर्ग लोक की शोभा को भी जिसने जीत लिया था, ऐसी । अवन्तीषु = मालवा प्रदेशों में । उज्जयिनी नाम = उज्जयिनी नामवाली नगरी । भगवान् महाकाल इति अभिधानं यस्य सः महाकालाभिधानः शिवः = महाकाल इस नामवाले भगवान् शिव जी । स्वयं वसति = अपने आप निवास करते हैं । प्रतिनिधिः इव = साक्षात् प्रतिरूप जैसे, उन्हीं के समान जैसे । पुरुषोत्तमस्य = विष्णु का । परि (सामस्त्येन) हता प्रजानां पीडा येन सः परिहृतप्रजापीडः = जिसने प्रजा की पीड़ा को दूर कर दिया था ऐसा । भुवनानां राज्यस्य भार-लक्षणा या नौः तस्याःकर्णधारः इति भुवनराज्य-भार-नौ-कर्णधारः = भुवनों के राज्य के भाररूपी नाव का मल्लाह । आहिता (स्थापिता) मतिः येन सः आहितमतिः = जिसने अपनी बुद्धि को पूरी तरह से लगा लिया है । ब्राह्मणः शुकनासः नाम = शुकनास नामवाला ब्राह्मण । जम्बू-प्लक्ष-शाल्मलि-कुश-क्रौञ्च-शाक-पुष्कराः सप्तद्वीपा एव वलयं यस्याः सा ताम् सप्तद्वीपवलयाम् = सात द्वीपों का कङ्कण धारण किये हुई । यौवनस्य सुखानि यौवन-सुखानि = जवानी के सुख का । अनुबभूव च = आनन्द लेने लगा । प्रज्ञायाः बलेन प्रज्ञाबलेन = अपनी बुद्धि के बल से । बभार = धारण किया ।

अनुवाद—तीनों भुवनों में श्रेष्ठ, स्वर्ग लोक को भी अपनी चमक से परास्त करने वाली, उज्जयिनी नामक नगरी अवन्ती नामक (मालवा) प्रदेश में थी । इसमें भगवान् महाकालनामक शिव जी रहते हैं । इसी नगरी में साक्षात् विष्णु के स्वरूप तथा प्रजा के कष्ट को नष्ट किये हुए तारा-पीड़ नामक राजा रहता था और उस राजा का मन्त्री था शुकनास, जो कि सारे भुवनों के राज्य के भार-रूपी नाव का मल्लाह था । जो धैर्य का ठिकाना था, सत्य का पुल था, गुणों का गुरु था, आचरणों का उप-देश देनेवाला था, धर्म का उत्पादक था, धारण करनेवाला था, सब कार्यों पर अपने चित्त को लगाये हुए था और जाति का ब्राह्मण था ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उस राजा ने सात द्वीपों के कड़े वाली पृथ्वी को जीतकर मित्र के समान उस शुकनासनामक मन्त्री के ऊपर राज्य का भार रखकर प्रजा को सुख-पूर्वक दिन बितानेवाली बनाकर अपना दूसरा कर्तव्य करने लगा। प्रायः जवानी के सुख का आनन्द लेने लगा। शुकनास भी उस बड़े राज्य-भार को बड़ी सुगमता से धारण करने लगा या चलाने लगा।

एवं तस्य राज्ञो मन्त्रि-विनिवेशित-राज्य-भारस्य यौवनसुखमनुभवतः कालो जगाम। भूयसा च कालेनान्येषामपि जीवलोकसुखानां प्रायः सर्वे-षामन्तं ययौ। एकं तु सुत-मुख-दर्शनसुखं न लेभे। यथा-यथा च यौवन-मतिचक्राम तथा-तथा विफलमनोरथस्यानपत्यताजन्मावर्धतास्य संतापः। विषयोपभोग-सुखेच्छाभिश्च मनो विजघ्ने। नरपति-सहस्त्र-परिवृतमप्य-सहायमिव, चक्षुष्मन्तमप्यन्धमिव, भुवनालम्बनमपि निरालम्बमिवात्मान-ममन्यत।

टीका---मन्त्रिणि विनिवेशितः राज्यस्य भारो येन सः तस्य मन्त्रि-विनिवेशितराज्य-भारस्य = **मन्त्री के ऊपर राज्य के भार को रखे हुए।** यौवनस्य सुखम् यौवनसुखम् = **जवानी का आनन्द।** अन्येपाम् अपि = **और भी।** जीवलोकानां सुखानि जीवलोकसुखानि तेपां जीवलोकसुखा-नाम्=**इस संसार के सुखों के।** अन्तम् ययौ = **पार हो गया।** सुतस्य मुखस्य दर्शनेन यत् सुखं सुतमुख-दर्शन- सुखम् = **पुत्र के मुख को देखने से जो सुख उत्पन्न होता है वह सुख।** न लेभे = **नहीं पाया।** विफलः मनोरथो यस्य सः तस्य विफलमनोरथस्य (निष्फलमनोरथस्य) = **निष्फल मनोरथ वाले का संतान न होने से उत्पन्न।** विषयाणाम् यः उपभोगः तेन यत् सुखं तस्य इच्छाः अभिलाषाः ताभिः विषयोपभोग-सुखे-च्छाभिः च = **वासनाओं के उपभोग से उत्पन्न सुख की इच्छाओं से।** मनः विजघ्ने = **मन विरक्त हो गया था।** नरपतीनाम् सहस्रेण परिवृतम् अपि नरपतिसहस्र-परिवृतमृ+अपि=**हजारों राजाओं के समूह से घिरा हुआ होने पर भी।** चक्षुः अस्य अस्तीति चक्षुष्मान् तं चक्षुष्मन्तम्+

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपि = आंखवाला होने पर भी। भुवनानाम् आलम्बनम् इव = सारे भुवनों का आलम्बन होने पर भी।

अनुवादः—इस प्रकार मन्त्री के ऊपर राज्य का भार रखे हुए तथा अपनी जवानी का आनन्द लेते हुए उस राजा का समय बीतता गया। बहुत समय बीतने पर उसने संसार के दूसरे सभी सुखों का भी अनुभव किया किन्तु पुत्र के मुख को देखने का एकमात्र सुख न पा सका। जैसे-जैसे जवानी बीतती गई वैसे ही वैसे निष्फल मनोरथवाले इस राजा का पुत्र उत्पन्न न होने के कारण संताप बढ़ता गया। विषयों के उपभोग से उत्पन्न सुख की इच्छाओं से मन विरक्त हो गया। अपने को हजारों राजाओं से घिरा हुआ होने पर भी अपने को असहाय, आँखों वाला होने पर भी अन्धा तथा सारे भुवनों का आलम्बन होते हुए भी निराधार समझने लगा।

अथ तस्य चन्द्रलेखेव हर-जटा-कलापस्य त्रिभुवन-विस्मय-जननी वनिता-विभ्रमाणां सकलान्तःपुरप्रधानभूता महिषी विलासवती नामाभूत्। एकदा च स तदावासगतस्तां चिन्तास्तिमितदृष्टिना शोकमूकेन परिजनेन परिवृताम् अनलंकृताम् रुदतीं ददर्श। कृताभ्युत्थानां च तां तस्यामेव पर्यङ्किकायामुपवेश्य स्वयं चोपविश्याविज्ञातवाष्पकारणो भूपालस्तामवादीत्—'देवि, किमर्थं रुद्यते, किमर्थं च कृशोदरि, नालंकृतासि, प्रसीद, निवेदय देवि, दुःखनिमित्तम्। अतिनिपुणमपि चिन्तयन् न पश्यामि खलु स्खलितमप्यात्मनस्त्वद्विषये। त्वदायत्तं हि मे जीवितं राज्यं च। कथ्यतां सुन्दरि, शुचः कारणम्। इत्येवमभिधीयमाना विलासवती यदा न किंचित् प्रतिवचः प्रतिपेदे तदा विवृद्धवाष्पहेतुमस्याः परिजनमपृच्छत्।

टीका :—हरस्य जटायाः कलापस्य = शिवजी की जटा के समूह की। त्रिभुवन विस्मयस्य जननी = त्रिभुवन के आश्चर्य को पैदा करनेवाली। वनितानां बिभ्रमाणाम् = स्त्रियों के भौंओं के विकारों के। सकले अन्तःपुरे प्रधानभूता सकलान्तःपुरप्रधानभूता = सारे अन्तःपुर में प्रधान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चिन्तया स्तिमिता दृष्टिः यस्य सः तेन चिन्तास्तिमितदृष्टिना = **चिन्ता से निश्चल हुई दृष्टि से, चिन्ता से एकटक दृष्टि से देखते हुए ।** कृतम् अभ्युत्थानम् यया सा ताम् कृताभ्युत्थानाम् च = **आदर के लिये उठती हुई ।** पर्यङ्किकायाम् = **पलंग में ।** अविज्ञातम् वाष्पस्य कारणं येन सः अविज्ञातवाष्पकारणः = **जिसने रानी के आँसुओं का कारण नहीं जाना था ऐसे ।** अतिनिपुणम् = **अत्यन्त विचारशील ।** चिन्तयन् + अपि = **सोचता हुआ भी ।** तव आयत्तम् त्वदायत्तम् = **तुम्हारे अधीन है ।** हि मे जीवितम् राज्यम् च = **निश्चय करके मेरी जिन्दगी और मेरा राज्य ।** अभिधीयमाना विलासवती = **कही जाती हुई रानी विलासवती ।**

अनुवाद :—उसके शिवजी की जटा पर विराजमान चन्द्रमा की रेखा के समान चमकती हुई दुबली-पतली, स्त्रियों के हाव-भावों से त्रिभुवन को आश्चर्य में डालनेवाली संपूर्ण रनवास में श्रेष्ठ विलासवती नाम की रानी थी । एक समय वह राजा उस रानी के निवासस्थान पर गया । वहाँ चिन्ता से निश्चल दृष्टिवाले तथा शोक से चुप्पी साधे हुए कुटुम्बी जनों से घिरी हुई, वेषभूषा से रहित, रोती हुई उस रानी को उसने देखा । आदर दिखाने के लिये उठी हुई उस रानी को उसी पलङ्ग में बिठाकर अपने आप भी बैठकर आँसुओं के निकलने का कारण न जानते हुए राजा ने उससे पूछा—'हे देवि, क्यों रोती हो! हे पतली कमरवाली, तुमने शृंगार क्यों नहीं किया है ? प्रसन्न हो देवि, दुःख का कारण बताओ । बड़ी सावधानी से सोचता हुआ, वास्तव में, कहीं पर मैं नहीं देख रहा हूँ कि आपके विषय में मैंने कोई लापरवाही दिखाई हो । मेरे प्राण और राज्य तुम्हारे अधीन हैं । हे सुन्दरि, दुःख का कारण कहो । इस प्रकार राजा के कहने पर भी जब विलासवती ने कुछ उत्तर नहीं दिया तब उसने कुटुम्बी जनों से आँसुओं के निकलने का कारण पूछा ।

अथ तस्यास्ताम्बूलकरङ्कवाहिनी सततप्रत्यासन्ना मकरिका नाम राजानमुवाच—'देवि, कुतो देवादल्पमपि परिस्खलितम् । अभिमुखे च देवे का शक्तिः परिजनस्यान्यस्य वा कस्यचिदपराद्धुम् । अद्य तु चतुर्द-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शीति भगवन्तं महाकालमर्चितुमितो गतया तत्र भवत्या देव्या महाभारते वाच्यमाने श्रुतम्—'अपुत्राणां किल न सन्ति लोकाः शुभाः। 'पुंनाम्नो नरकात् त्रायते इति पुत्रः' इत्येतच्छ्रुत्वा भवनमागत्य परिजनेन सशिरः प्रणाममभ्यर्थ्यमानापि नाहारमभिनन्दति, न भूषणपरिग्रहमाचरति, नोत्तरं प्रतिपद्यते। केवलमविरल-वाष्प-दुर्दिनान्धकारितमुखी रोदिती। एतदाकर्ण्य देवः प्रमाणम्' इत्येतदभिधाय विरराम।

टीका—ताम्बूलस्य करङ्कं वहतीति ताम्बूलकरङ्कवाहिनी=**पानदान ले चलनेवाली**। सततप्रत्यासन्ना=**निरन्तर पास रहनेवाली**। **मकरिका नामवाली सेविका**। परिस्खलितम्=**त्रुटि हो सकती है**। परिजनस्य=**कुटुम्बी जन की**। भगवन्तं महाकालं अर्चितुम्=**भगवान् महाकाल शिवको पूजने के लिये**। इतः गतया=**यहाँ से गई हुई**। तत्र भवत्या देव्या=**वहाँ महामाननीया देवी ने**। महाभारते वाच्यमाने=**महाभारत के पढ़े जाने पर**। श्रुतम्=**सुना**। अपुत्राणाम् किल=**सन्तानरहित व्यक्तियों को निश्चय करके**। 'पुं-नाम नरकात् त्रायते=**पुम् नामक नरक से बचानेवाला**, इति पुत्रः=**इसीलिए पुत्र कहलाता है**। अभ्यर्थ्यमाना+अपि=**प्रार्थना भी की जा रही थी**। भूषणानाम् परिग्रहम् (स्वीकारम्) भूषणपरिग्रहम्=**गहनों का स्वीकार करना**। अविरलः वाष्पः एव दुर्दिनम् तेन अन्धकारितम् मुखं यस्याः सा अविरलवाष्पदुर्दिनान्धकारितमुखी=**लगातार बहते हुए आँसु रूपी मेघाच्छन्न दिन की भाँति अन्धकारयुक्त मुँह वाली**।

अनुवादः—**इसके अनन्तर उस रानी की पानदान साथ ले चलनेवाली सेविका ने जो कि सदैव रानी के समीप रहा करती थी, राजा से कहा—'हे देव, कैसे भला आप से तनिक भी त्रुटि हो सकती है! साथ ही आपके अनुकूल रहने पर कुटुम्बी जन या किन्हीं अन्य लोगों की प्रतिकूल आचरण करने की क्या सामर्थ्य हो सकती है। आज तो चतुर्दशी है, यह जानकर परमादरणीया महारानी यहाँ से भगवान् महाकालेश्वर शिवजी की पूजा करने के लिये गई। वहाँ उन्होंने महाभारत में पढ़ा**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जानेवाला यह वाक्य सुना कि 'निःसन्तान व्यक्तियों को दूसरे जन्म में अच्छे लोकों की प्राप्ति नहीं होती है'। जो 'पुम्' नामक नरक से अपने माता-पिता को बचाता है उसे पुत्र कहते हैं'। इसे सुनकर घर आकर सेवक वर्ग द्वारा शिर से प्रणाम करने तथा प्रार्थना करने पर भी भोजन को पसन्द नहीं करती हैं, न गहनों को ही स्वीकार करती हैं, न कोई उत्तर ही उनसे बन पड़ता है। केवल लगातार आँसुओं के निकलने से अपने मुँह को मैला करती हुई रो रही हैं। यह सुनकर 'आप जो उचित समझें आज्ञा दें,' इस प्रकार कहकर वह चुप हो गई।

विरतवचनायां तस्यां भूमिपालस्तूष्णीं मुहूर्तमिव स्थित्वा दीर्घमुष्णं च निःश्वस्य निजगाद—'देवि, किमत्र क्रियतां दैवायत्ते वस्तुनि। अलमतिमात्रं रुदितेन, न वयमनुग्राह्याः प्रायो देवतानाम्। अन्यस्मिन् जन्मनि न कृतमवदातं कर्म। जन्मान्तरकृतं हि कर्म फलमुपनयति पुरुषस्येह जन्मनि। न हि शक्यं दैवमन्यथा कर्तुमभियुक्तेनापि। यावन्मानुष्यके शक्यमुपपादयितुं तावत्सर्वं उपपाद्यताम्। अधिकां कुरु देवि, गुरुषु भक्तिम्। द्विगुणामुपपादय देवतासु पूजाम्। ऋषिजन-सपर्यासु दर्शितादरा भव। परं हि दैवतमृषयो यत्नेनाराधिता यथा-समीहित-फलानां दुर्लभानामपि वराणां दातारो भवन्ति। श्रूयन्ते हि पुरा चण्डकौशिक प्रभावान्मगधेषु बृहद्रथो नाम राजा जरासन्धं नाम तनयं लेभे। दशरथश्च राजा परिणतवया ऋष्यशृङ्गस्य प्रसादादवाप चतुरः पुत्रान्। अन्ये च राजर्षयस्तपोधनानाराध्य पुत्रदर्शनामृत-स्वाद-सुखभाजो बभूवुः। अमोघफला हि महामुनि-सेवा भवन्ति। मामपि दहत्येवायमहर्निशमनल इवानपत्यता-समुद्भवः शोकः। शून्यमिव मे प्रतिभाति जगत्। अफलमिव पश्यामि राज्यम्। अप्रतिविधेये तु विधातरि किं करोमि। तन्मुच्यतामयं देवि, शोकानुबन्धः। आधीयतां धैर्ये धर्मे च धीः। धर्मपरायणानां हि समीपसंचारिण्यः कल्याणसंपदो भवन्ति। इत्येवमभिधाय स्वयं करतलेन ममार्जास्याः साश्रुलेखमाननम्, पुनः पुनश्च धर्मोपदेश-गर्भाभिर्वाग्भिराश्वास्य सुचिरं स्थित्वा नरेन्द्रो जगाम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

टीका :—विरतानि वचनानि यस्याः सा तस्यां विरतवचनायाम् तस्याम् **= उसके चुप हो जाने पर** । भूमिपालः **= राजा** । दैवस्य आयत्ते दैवायत्ते **= दैवाधीन** । अनुग्राह्याः **= अनुग्रह के पात्र (हैं)** । अन्यस्मिन् जन्मनि **= दूसरे जन्म में** । अन्यस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे कृतम् हि **= दूसरे जन्म में + किया हुआ** । कर्म **= काम** । फलम् उपनयति **= फल ले आता है** । पुरुषस्य + इह जन्मनि **= मनुष्य के इस जन्म में** । दैवम् + अन्यथाकर्तुम् **= बदलने के लिये, शुभ को अशुभ में या अशुभ को शुभ में बदलने के लिये** । अभियुक्तेन + अपि **= पण्डित मनुष्य के द्वारा भी** । यावत् मानुष्यके **= जितना मनुष्य जन्म में** । उपपादयितुम् **= उत्पन्न करने के लिये, करने के लिये** । उपपाद्यताम् **= कर लीलिए** । अधिकां कुरु देवि, **= हे देवि, अधिक कीजिए** । गुरुषु भक्तिम् **= गुरुजनों पर भक्ति** । ऋषिजनानाम् सपर्यासु ऋषिजनसपर्यासु **= ऋषि लोगों की पूजा में** । दर्शितः आदरः यया सा दर्शितादरा **= आदर दिखाती हुई** । यथासमीहितानि फलानि येषु तेषां यथासमीहितफलानाम् **= मन-चाहे फलों के** । दुर्लभानाम् + अपि वराणाम् **= दुर्लभ वरों के भी** । श्रूयन्ते हि **= सुना जाता है** । चण्डकौशिकस्य प्रभावात् **= चण्डकौशिक ऋषि के प्रभाव से** । मगधेषु **= मगध देश में, बिहार में** । बृहद्रथः नाम राजा **= बृहद्रथ नामक राजा ने** । जरासन्धं नाम **= जरासन्ध नामवाले** । परिणतं वयः यस्य सः परिणतवयाः **= बूढ़ा होने पर** । अन्ये च राजर्षयः **= और भी राजर्षियों ने** । तपोधनान् **= तपस्वियों को** । आराध्य **= प्रसन्न करके** । पुत्रस्य दर्शनम् एव अमृतम् तस्य यःस्वादः तेन यत्सुखम् तस्य भाजः पुत्र-दर्शनामृत-स्वाद-सुख-भाजः **= पुत्र के मुख को देखने से अमृत के समान सुख का अनुभव करते हुए** । अमोघं फलम् यस्याः सा अमोघफला हि **= सफल** । न अपत्यता अनपत्यता ततः समुद्भवः अनपत्यता-समुद्भवः **= सन्तान न होने के कारण उत्पन्न हुआ** । न विद्यते प्रतिविधेयम् यस्य तस्मिन् अप्रतिविधेये (प्रतीकारानर्हे) **= हमारे प्रति कुछ न करने के कारण बदला न लेने योग्य** । विधातरि **= ब्रह्मा के साथ** । शोकस्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अनुबन्धः = शोक करते रहना। आधीयताम् = लगाइए, रखिये। धर्मे परायणानाम् धर्मपरायणानाम् = धर्म में लगे हुए लोगों के। समीपे सञ्चरन्तीति समीपसंचारिण्यः = पास में चलनेवाली। कल्याणसंपदः = कल्याण पहुँचाने वाली संपत्तियाँ। धर्मस्य यः उपदेशः सः एव गर्भे यासां ताभिः धर्मोपदेशगर्भाभिः = धर्म के उपदेशों से भरी हुई। आश्वास्य = समझा-बुझाकर।

अनुवाद:--उसके चुप हो जाने पर राजा थोड़ी देर तक चुप बैठकर लम्बी तथा गर्म साँस लेकर बोला--'हे देवि, दैवाधीन बात में क्या किया जा सकता है। अधिक रोने से क्या लाभ, अधिक मत रोइए। प्रायः हम लोग देवताओं के अनुग्रह के पात्र नहीं हैं। दूसरे जन्म में तुम लोगों ने कोई शुभ कर्म नहीं किया है। पुरुष के इस जन्म में दूसरे जन्म के किये हुए कर्म ही फल देते हैं। पण्डित भी भाग्य की करतूत को बदल नहीं सकता है। जितना मनुष्य-जन्म में किया जा सकता है उतना कर लीजिए। हे देवि, अपने श्रेष्ठ जनों के ऊपर जितनी अधिक भक्ति दिखा सकती हो दिखाइए। देवताओं की दूनी पूजा कीजिए। ऋषि लोगों की पूजा करने में अधिक आदर दिखाइये, ऋषि लोग सबसे अधिक भाग्य-विधाता हैं। प्रयत्न के साथ उनकी आराधना करने पर वे मनचाहे फलों के और दुर्लभ वरों के देनेवाले होते हैं। सुना जाता है कि प्राचीन काल में चण्ड-कौशिक ऋषि के प्रभाव से मगध देश में बृहद्रथ राजा ने जरासन्ध नामक पुत्र पाया था। राजा दशरथ ने भी बूढ़ा होने पर भी ऋष्यशृङ्ग ऋषि के प्रसाद से चार पुत्रों को पाया। और राजर्षि लोगों ने भी तपस्वियों की आराधना करके अमृत के समान आनन्द देनेवाले पुत्र के दर्शन के सुख का आनन्द लिया। महामुनियों की सेवाएँ निष्फल नहीं होती हैं। सन्तान न होने का अग्नि के समान यह शोक मुझे भी रात-दिन जलाता ही रहता है। मुझे सारा संसार सूना सा प्रतीत होता है। मैं राज्य को निष्फल जैसे देखता हूँ। उस सृष्टिकर्ता के साथ क्या करूँ जिसके साथ बदला भी नहीं चुकाया जा सकता है। इसलिये हे देवि, यह शोक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परम्परा छोड़ दीजिए। अपना विचार धैर्य तथा धर्म पर लगाइए। धर्म में लगे हुए, धार्मिक व्यक्तियों के समीप कल्याणकारिणी संपत्तियाँ सदैव विचरण करती रहती हैं।' इस प्रकार कहकर आँसुओं से युक्त इस (रानी) के मुँह को अपने हाथ से उसने पोंछा। और बार-बार धर्म के उपदेश से भरी हुई बातों से रानी को बड़ी देर तक समझा-बुझाकर और वहाँ पर बैठकर राजा चल दिया।

निर्गते च तस्मिन् मन्दीभूत-शोकावेगा विलासवती समुचितं दिवसव्यापारमन्वतिष्ठत्, ततः प्रभृति सुतरां देवताराधनेषु ब्राह्मणपूजासु गुरुजन-सपर्यासु बभूवादरवती। यद्यच्च किंचित् कुतश्चित् शुश्राव गर्भतृष्णया तत्तत्सर्वं चकार।

टीका :—निर्गते च तस्मिन् = उसके चले जाने पर। मन्दीभूतः शोको यस्याः सा मन्दीभूतशोका = कुछ शोक के कम हो जाने पर। समुचितम्=उचित। दिवसस्य व्यापारम् दिवसव्यापारम्=दिन का काम। अन्वतिष्टत्=करने लगी। देवतानाम् आराधनेषु देवताराधनेषु = देवताओं की पूजा करने में। ब्राह्मणानाम् पूजासु ब्राह्मणपूजासु = ब्राह्मणों की पूजा करने में। गुरुजनानाम् सपर्यासु (पूजासु) गुरुजननसपर्यासु = गुरुजनों की पूजाओं में।

अनुवाद:—और उस (राजा) के निकल जाने पर शोक के वेग के कम हो जाने पर रानी विलासवती ने दिन का काम किया। उस दिन से अच्छी तरह से देवताओं, ब्राह्मणों तथा गुरुजनों की पूजा करने में बड़ी श्रद्धा दिखाने लगी और जो कुछ भी कहीं से उसने सुना, वह सब गर्भ-लालसा से उसने किया।

एवं गच्छति काले कदाचिद्राजा क्षीणभूयिष्ठायां रजन्यां स्वप्ने प्रासाद-शिखर-स्थिताया विलासवत्या आनने सकल-कला-पूर्णमण्डलं शशिनं प्रविशन्तमद्राक्षीत्। प्रबुद्धश्चोत्थाय तस्मिन्नेव क्षणे शुकनासं समाहूय स्वप्नमकथयत्। स तं समुपजातहर्षः प्रत्युवाच—'देव, संपन्नाः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुचिरादस्माकं प्रजानां च मनोरथाः। कतिपयैरेवाहोभिः असन्देहमनुभवति स्वामी सुतमुखावलोकनसुखम्। अद्य खलु मयापि निशि स्वप्ने देव्या मनोरमाया उत्सङ्गे निहितं पुण्डरीकं दृष्टम्। आवेदयन्ति हि प्रत्यासन्नमानन्दमग्रेपातीनि शुभानि निमित्तानि। अवितथफला हि प्रायो निशावसान-समय-दृष्टा भवन्ति स्वप्नाः। न चिरेण भुवनानन्द-हेतुमात्मजं जनयिष्यति देवी। एवमभिदधानमेव तं करेण गृहीत्वा नरेन्द्रः प्रविश्याभ्यन्तरमुभाभ्यामपि स्वप्नाभ्यां विलासवतीमानन्दयायास, कतिपय-दिवसापगमे च देवताप्रसादात् सरसीमिव प्रतिमाशशी गर्भो विवेश विलासवतीम्। शनैः शनैश्च प्रतिदिनमुपचीयमानगर्भा मन्दं मन्दं संचचार।

टीका :—क्षीणम् भूयिष्ठम् यस्याः सा तस्याम् क्षीणभूयिष्ठायाम् रजन्याम्=**रात्रि के अधिक बीत जाने पर**। प्रासादस्य शिखरे स्थितायाः प्रासादशिखर-स्थितायाः विलासवत्याः = **महल की चोटी पर बैठी हुई विलासवती के**। सकलाभिः कलाभिः पूर्णम् मण्डलम् यस्य स तम् सकल-कला-पूर्ण-मण्डलम्=**संपूर्ण कलाओं से पूर्ण मण्डलवाले**। शशिनम् = **चन्द्रमा को**। प्रविशन्तम् = **प्रवेश करता हुआ**। अद्राक्षीत् = **देखा**। प्रबुद्धः+च = **और जागकर, जागता हुआ**। उत्थाय = **उठकर**। शुक-नासं समाहूय = **शुकनास को बुलाकर**। समुपजातः हर्षः यस्य स समुप-जात-हर्षः = **प्रसन्न होते हुए**। सुतस्य मुखस्य अवलोकनेन यत् सुखम् सुतमुखावलोकनसुखम् = **पुत्र के मुख को देखने से उत्पन्न सुख को**। आवेदयन्ति = **प्रगट करते हैं**। प्रत्यासन्नम् = **समीप में ही विद्यमान, शीघ्र आनेवाला**। अग्रेपातीनि = **आगे हुए**। अवितथम् (सत्यम्) फलं येषाम् ते अवितथफलाः=**सफल**। निशायाः अवसानस्य समये दृष्टाः निशावसानसमय-दृष्टाः=**रात्रि के अन्त में देखे गये**। भुवनस्य आनन्द-हेतुम् भुवनानन्दहेतुम् = **संसार के आनन्द के कारण**। अभिदधानम् + एव = **कहते हुए को ही**। आनन्दयामास = **प्रसन्न किया**। कतिपयेषाम् दिवसानाम् अपगमे कतिपयदिवसापगमे=**कितने ही दिनों के बीतने पर**। देवतानाम् प्रसादात् देवताप्रसादात् = **देवताओं के प्रसाद से**।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रतिमाशशी = प्रतिबिम्ब रूप से चन्द्रमा। विलासवतीम् = विलासवती को। उपचीयमानः गर्भो यस्याः सा उपचीयमानगर्भा = बढ़ते हुए गर्भवाली।

अनुवाद:—इस प्रकार कुछ समय बीतने पर राजा ने एक बार रात्रि के अधिक बीत जाने पर स्वप्न में महल के ऊपर के भाग में बैठी हुई विलासवती के मुँह में षोडश कलाओं से परिपूर्ण चन्द्रमा को प्रवेश करते हुए देखा। जागने पर उठकर उसी समय शुकनास को बुलाकर उनसे यह स्वप्न कहा। प्रसन्न हुए उस (शुकनास) ने उस (राजा) से कहा—'हे देव, हमारी और प्रजा की बहुत समय से चाही हुई अभिलाषायें तो सफल हो चुकी हैं। थोड़े ही दिनों में महाराज निःसन्देह पुत्र के मुख को देखने के आनन्द का अनुभव करेंगे। वास्तव में आज मैंने भी मनोरमा देवी की गोद में रखा हुआ श्वेत-कमल देखा है। आगे के शुभ संकेत शीघ्र ही उपस्थित होनेवाले आनन्द को प्रकट करते हैं। रात्रि के अन्त में देखे गये स्वप्न कभी निष्फल नहीं होते हैं। शीघ्र ही महारानी संसार के आनन्द के कारणरूप पुत्र को उत्पन्न करेंगी। इस प्रकार कहते हुए ही उनका हाथ पकड़कर रनवास में ले जाकर राजा ने दोनों स्वप्नों से विलासवती को प्रसन्न किया। कुछ दिनों के बीतने पर देवताओं के प्रसाद से तालाब में जैसे चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब प्रवेश करता है, ऐसे ही रानी विलासवती के उदर में गर्भ ने प्रवेश किया। धीरे-धीरे गर्भ के बढ़ने से वह धीरे-धीरे चलने लगी।

अथ तस्याः सर्वपरिजन-प्रधान-भूता कुलवर्धना नाम महत्तरिका प्रशस्ते दिवसे प्रदोष-वेलायामभ्यन्तरावस्थान-मण्डप-गतं प्रधाननरेन्द्रैः परिवृतं तास्ताः कथाः शुकनासेन सह कुर्वाणं भूपालमुपसृत्य रहः कर्णमूले विदितं विलासवती-गर्भ-वृत्तान्तमकार्षीत्। तेन तु तस्याः वचनेन आनन्द-रसेन विह्वलीक्रियमाणस्य राज्ञः शुकनासमुखे लोलतारकं तत्क्षणं पपात चक्षुः। अनालोकितपूर्वं तु हर्ष-प्रकर्षमभिसंवीक्ष्य भूपतेः कुलवर्धनां च स्मित-विकसितमुखीमागतां दृट्ष्वा शुकनासः समीपतरमुपसृत्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नातिप्रकाशमाबभाषे—'देव, किमस्ति किंचिदस्मिन् स्वप्नदर्शने सत्यम्। उत्फुल्ललोचना हि कुलवर्धना दृश्यते। तदावेदयतु देवः किमिदम्'। इत्युक्तवति तस्मिन् राजा विहस्याब्रवीत्—'यदि सत्यमनया यथा कथितं तथा सर्वमवितथं स्वप्नदर्शनम्। अहं तु न श्रद्दधे। कुतोऽस्माकमियती भाग्यसंपद्। अभाजनं हि वयमीदृशानां प्रियवचःश्रवणानाम्। तदुत्तिष्ठ स्वयमेव गत्वा किमत्र सत्यमिति देवीं पृष्ट्वा ज्ञास्यामि' इत्यभिधाय विसर्ज्य सकलनरेन्द्रलोकं सह शुकनासेनोत्थाय हर्ष-विशेष-निर्भरेण त्वर्यमाणो विरलविरलेन परिजनेनानुगम्यमानोऽन्तःपुरमयासीत्।

टीका—सर्वेषु जनेषु प्रधानभूता सर्वजनप्रधानभूता = **सब सेवक जनों में प्रधान**। कुलवर्धना नाम=**कुलवर्धना नामवाली**, महत्तरिका= **अवस्था में बड़ी**। प्रशस्ते दिवसे=**शुभ दिन पर**। प्रदोषवेलायाम्= **सायंकाल के समय**। अभ्यन्तरे यः अवस्थानमण्डपः तत्र गतम् अभ्यन्तरावस्थानमण्डपगतम्=**महल के भीतर की बैठक में पहुँचे हुए**। प्रधानाः ये नरेन्द्राः तैः परिवृतम् प्रधान-नरेन्द्र-परिवृतम् = **श्रेष्ठ राजाओं से घिरा हुआ**। विलासवत्याः गर्भस्य वृत्तान्तः तम् विलासवतीगर्भवृत्तान्तम्=**विलासवती के गर्भ का वृत्तान्त**। लोले तारके यस्मिन् तत् लोलतारकम् = **चञ्चल तारकावाली**। न आलोकितं पूर्वम् यत् तद् अनालोकितपूर्वम् = **जिसे पहले कभी देखा ही नहीं था, ऐसा**। हर्षस्य प्रकर्षम् हर्षप्रकर्षम् = **प्रसन्नता की अधिकता को**। अभिसंवीक्ष्यं = देखकर। स्मितेन विकसितं मुखं यस्याः सा ताम् स्मितविकसितमुखीम्= **मुसकराहट से खिले हुए चेहरेवाली**। उत्फुल्ले लोचने यस्याः सा उत्फुल्ल-लोचना = **विकसित नेत्रवाली**। दृश्यते=**दिखाई देती है**। प्रियवचसः श्रवणानाम् प्रियवचःश्रवणानाम् = **प्यारे वचन सुनने के**। सकलश्चासौ नरेन्द्राणाम् लोकः सकलनरेन्द्रलोकः तम्=**सम्पूर्ण राज-समाज को**। हर्षविशेषस्य निर्भरेण हर्षविशेषनिर्भरेण = **अधिक हर्ष के कारण**। त्वर्यमाणः=जल्दी करता हुआ।

अनुवाद—**इसके अनन्तर उस रानी की सब दासियों की मुखिया**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कुलवर्धना नामवाली बूढ़ी दासी ने किसी शुभ दिन पर सायंकाल के समय महल के भीतर की बैठक में बैठे हुए तथा बड़े-बड़े राजाओं से घिरे हुए, शुकनाश मन्त्री के साथ अनेक प्रकार की कथाओं को करते हुए राजा के समीप जाकर एकान्त में उसके कान के समीप चुपके से विलासवती के गर्भ के वृत्तान्त को बतलाया। उसके उस वचन से आनन्द के रस से बहुत बोझिल राजा की चंचल आंखें उसी समय शुकनास के मुंह पर पड़ीं। राजा के उसके पूर्व कभी नहीं देखे हुए हर्ष के आधिक्य को और कुलवर्धना के मुसकराहट से खिले हुए चेहरे को देखकर शुकनास ने राजा के कुछ समीप जाकर धीमे स्वर में कहा—'देव ! क्या इस स्वप्न के देखने में कुछ सत्य है ? कुलवर्धना विकसितनेत्र दिखाई दे रही है। अतः महाराज बतलायें कि वास्तव में यह क्या बात है ?' उसके ऐसा कहने पर राजा ने हँस कर कहा—यदि इसने जैसा कहा है वह सत्य है तो स्वप्न का दिखाई देना सही है। मैं तो विश्वास नहीं करता, हमारे भाग्य में इतनी संपत्ति कहां लिखी है ? हम लोग तो ऐसे प्रिय-वचनों के सुनने के पात्र ही नहीं हैं। सो उठिये, स्वयं चलकर 'इसमें क्या सचाई है' इस बात को रानी से पूछ कर मैं जानूंगा। यह कहकर संपूर्ण राज-समाज को छोड़कर राजा शुकनास के साथ उठकर अधिक हर्ष के कारण शीघ्र चलता हुआ थोड़े से सेवकों के साथ रनिवास में चला गया।

तत्र वासभवने गर्भोचितं शयनतलमधिशयानां आचारकुशलेनान्तःपुर-जरतीजनेनोपास्यमानां अतिधवलं दुकूलयुगलं वसानां विलासवतीं ददर्श। ससंभ्रममुत्तिष्ठन्तीं च तामलमलमत्यादरेण, देवि, नोत्थातव्यमित्यभिधाय सह तया तस्मिन्नेव शयनीये पार्थिवः समुपाविशत्। आसन्ने च शयनान्तरे शुकनासोऽपि न्यषीदत्। अथ तामुपारूढगर्भामालोक्य हर्षभरमन्थरेण मनसा प्रस्तुतपरिहासो राजा 'देवि, शुकनाशः पृच्छति यदाह कुलवर्धना किमपि तत्किं तथैव' इत्युवाच। अथ लज्जयांशुकेन मुखमाच्छादयन्ती विलासवती तत्क्षणमधोमुखी तस्थौ। पुनःपुनश्चानुरुध्यमाना 'किं नाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मामतिमात्रं त्रपा-परवशां करोषि, नाहं किञ्चिदपि वेद्मि' इत्यभिदधानाऽवनतमुखी राजानं साभ्यसूयमिवापश्यत्। भूभुजां पतिरेनां भूयो बभाषे—'सुतनु, यदि मदीयेन वचसा तव त्रपा वितन्यते तदयमहं स्थितो निभृतम्। अस्य तु किं प्रतिविधास्यसि पाण्डुरतामापद्यमानस्य वर्णस्य। एवं ब्रुवाणं नरपतिं शुकनासः 'देव, किमायासयसि देवीमियमनया कथयापि लज्जते, त्यज कुलवर्धना-कथित-वार्ता-संबद्धमालापम्' इत्यब्रवीत्।

टीकाः—गर्भस्य उचितम् गर्भोचितम्=**गर्भ के योग्य**। अधिशयानाम्=**लेटी हुई**। अन्तः पुरस्य जरतीजनेन=**रनवास की बूढ़ी सेविकाओं से**। उपास्यमानाम्=**सेवा की जाती हुई**। अतिधवलम्=**अत्यन्त स्वच्छ सफेद**। दुकूलस्य युगलम् दुकूलयुगलम्=**साड़ी को**। ससंभ्रमम्=**बड़े सटपटाहट में**। पार्थिवः समुपाविशत्=**राजा बैठ गया**। उपारूढ़ः गर्भः यस्याः सा ताम् उपारूढ़गर्भाम्=**जिसको गर्भ की प्राप्ति हो चुकी थी ऐसी**। हर्षस्य भरेण मन्थरम् तेन हर्षभरमन्थरेण=**प्रसन्नता के भार से बोझिल**। प्रस्तुतः परिहासः येन सः अथवा प्रस्तुते परिहासः प्रस्तुतपरिहासः =**प्रसङ्गागत बात अर्थात् गर्भधारण-सम्बन्धी बात में मज़ाक करता हुआ राजा**। यत् आह कुलवर्धना=**कुलवर्धना ने जो कुछ कहा**। अंशुकेन=**कपड़े से**। अनुरुध्यमाना=**बड़े अनुरोध के साथ पूछी जाती हुई भी**। त्रपया परवशाम् त्रपापरवशाम् =**लज्जा के अधीन**। अवनतम् मुखम् यस्याः सा अवनतमुखी=**अपना नीचे मुँह किये हुई**। प्रतिविधास्यसि=**किस प्रकार छिपा सकोगी**। पाण्डुरताम्=**पीलापन को**। आपद्यमानस्य=**पहुँचते हुये, प्राप्त करते हुये**। वर्णस्य=(**शरीर के) रंग का**। एवम् ब्रुवाणम्=**इस प्रकार कहते हुए**। नरपतिम्=**राजा को**। शुकनासः=**शुकनास ने**। कुलवर्धनया कथिता या वार्ता तया संबद्धम्=**कुलवर्धना की कही हुई बात से संबन्ध रखती हुई**। आलापकम्=**जिक्र, उल्लेख, चर्चा**। इति+अब्रवीत्=**इस प्रकार से कहा**।

अनुवादः—**वहाँ रानी के निवासस्थान में गर्भ के उचित बिस्तर पर लेटी हुई व्यवहार में निपुण, रनवास में रहने वाली बूढ़ी स्त्रियों से**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सेवा की जाने वाली, अत्यन्त स्वच्छ श्वेत साड़ी को पहिने हुई विलासवती को राजा ने देखा। आदर दिखाने के लिए झटपट उठती हुई उस रानी को देखकर 'बस कीजिए देवि ! आप मत उठिये' ऐसा कहकर उस रानी के साथ उसी विस्तर पर राजा बैठ गया, और पास ही के दूसरे बिस्तर या पलंग पर शुकनास भी बैठ गया। इसके अनन्तर उसको गर्भवती जानकर प्रसन्नता से बोझिल मन से परिहास शुरू करता हुआ राजा बोला--'हे देवि, शुकनास पूछते हैं कि कुलवर्धना ने जो कुछ कहा है क्या वह ठीक वैसे ही है।' इसके अनन्तर लज्जा के कारण वस्त्र से अपने मुँह को ढकती हुई रानी विलासवती उस समय नीचे मुँह करके बैठ गई। बार-बार अनुरोध करके पूछने पर भी आप मुझे क्यों व्यर्थ अत्यन्त लज्जित करते हैं। मैं कुछ भी नहीं जानती हूँ, ऐसा कहती हुई और नीचे मुँह किये हुई रानी ने घूरती निगाह से राजा को देखा। राजाओं के राजा ने इस (रानी) से फिर कहा–'हे देवि, यदि मेरे कहने से तुम्हें लज्जा मालूम पड़ती है तो लो मैं यह चुप हो गया। किन्तु इस अपने पीला पड़ते हुए वर्ण का क्या करोगी (उसे कैसे छिपाओगी)। इस प्रकार कहते हुए राजा से शुकनास ने कहा–'हे देव, आप रानी को क्यों सताते हैं। यह तो इस बात की चर्चा से भी लज्जित होती हैं। आप कुलवर्धना की कही हुई बात से सम्बन्ध रखनेवाली चर्चा को छोड़ दीजिए।

ततः क्रमेण पूर्णे प्रसवसमये पुण्येऽहनि प्रशस्तायां वेलायां सकललोक हृदयानन्द-कारिणं विलासवती सुतमसूत। तस्मिञ्जाते ससामन्ताः, सान्तः पुराः, सप्रकृतयः, सराजलोकाः सबालवृद्धाः ननृतुरागोपालमुन्मत्ता इव हर्ष-निर्भराः प्रजाः। पार्थिवस्तु मौहूर्तिक-गणोपदिष्टे प्रशस्ते मुहूर्त्ते निवारित-निखिल-परिजनः शुकनासद्वितीयः सूतिकागृहमपश्यत्। अम्भः-पावकं च स्पृष्ट्वा विवेश। प्रविश्य च विलासवत्या उत्सङ्गगतं महापुरुष-लक्षणैरुपेतं आल्हादहेतुमात्मजं ददर्श। विगतनिमेष-निश्चल-पक्ष्मणा स्निग्धेन चक्षुषा पिबन्निव सस्पृहमीक्षमाणस्तनयाननं मुमुदे कृतकृत्यं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चात्मानं मेने। समृद्धमनोरथः शुकनासस्तु शनैः-शनैरङ्ग-प्रत्यङ्गान्यस्य निरूपयन् भूमिपालमवादीत्—'देव, पश्य पश्यास्य कुमारस्य चक्रवर्ति-चिह्नानि।'

टीका :—पूर्णे प्रसवसमये=**प्रसवकाल के पूरे होने पर**। प्रशस्तायाम् = **प्रशंसायुक्त, अच्छी**। सकलाः ये लोकाः तेषाम् हृदयानाम् आनन्दकारिणम् इति सकललोक-हृदयानन्दकारिणम् = **सम्पूर्ण भुवनों के हृदयों को आनन्द देनेवाले**। राजलोकेन सहिताः सराज-लोकाः=**सम्बन्धी राजाओं के सहित**। बालैश्च वृद्धैश्च सहिताः=**बालक और बूढ़ों के सहित**। ननृतुः=**नाचने लगे**। आगोपालम् = **ग्वालों तक**। उन्मत्ताः इव = **पागलों की तरह**। हर्षस्य निर्भरः यासु ताः हर्ष-निर्भरः = **प्रसन्नता से लदे हुए**। निवारितः निखिलः परिजनः येन सः निवारित-निखिल-परिजनः= **सम्पूर्ण सेवक वर्ग को दूर करके**। शुक-नासः द्वितीयो यस्य सः शुकनासद्वितीयः = **शुकनास को साथ लिये हुए**। सूतिकायाः गृहम् सूतिकागृहम् = **प्रसवस्थान को**। महापुरुषस्य लक्षणैः उपेतम् महापुरुषलक्षणोपेतम् = **महापुरुष के लक्षण से युक्त**। आह्लादस्य हेतम् आह्लादहेतुम् = **प्रसन्नता के कारणभूत**। विगतः निमेषः यस्मात् अतएव निश्चलम् पक्ष्म यस्य तत् तेन विगतनिमेष-निश्चल-पक्ष्मणा=**बिना पलक झुकाये एकटक निगाह से**। स्निग्धेन=**वात्सल्य-रस से पूर्ण**। स्पृहया सहितम् सस्पृहम्=**प्रेम के साथ**। समृद्धः संपन्नः मनोरथः यस्य सः समृद्धमनोरथः = **पूर्ण मनोरथ होता हुआ**। अङ्गानि च प्रत्यङ्गानि च अङ्गप्रत्यङ्गानि = **शरीर के प्रत्येक अवयव को**। निरूपयन् = **ध्यान से देखता हुआ, विश्लेषण की दृष्टि से देखता हुआ**।

अनुवादः—**तब क्रमशः प्रसवकाल के समाप्त होने पर अच्छे दिन पर शुभ घड़ी में रानी विलासवती ने संपूर्ण लोगों के हृदय को आनन्द देनेवाला पुत्र उत्पन्न किया। उसके उत्पन्न होने पर सामन्तगण, अन्तःपुर के लोगों, नगर निवासियों, सम्बन्धी राजाओं, बालकों और बूढ़ों अर्थात् सभी प्रकार के लोगों से युक्त प्रजा यहाँ तक कि ग्वाले भी**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रसन्नता के कारण पागल की भाँति, नाच उठे। ज्योतिषियों के बताये हुए शुभ मुहूर्त में राजा ने भी अन्य सेवक वर्ग को रोककर शुकनास को साथ ले राजकुमार के जन्मस्थान को देखा। पानी और आग को स्पर्श करके राजा भीतर गया। भीतर प्रवेश करके विलासवती की गोद में रखे हुए महापुरुष के लक्षणों से युक्त, आनन्द के कारण-स्वरूप पुत्र को देखा। बिना पलक गिराये हुए निश्चल पुत्र-प्रेम से द्रवीभूत दृष्टि से मानो पीता हुआ, राजा ने बड़ी चाह से पुत्र के मुँह को देखा। वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अपने जन्म को सफल समझा। सम्पन्न मनोरथवाले शुकनास ने भी धीरे-धीरे राजकुमार के संपूर्ण अङ्ग-प्रत्यङ्ग को बड़े ध्यान से देखकर राजा से कहा—'देखिये महाराज, इस राजकुमार के चक्रवर्ती राजा के चिह्नों को देखिए।'

इत्येवं कथयति तस्मिन् ससंभ्रमापसृतेन राजलोकेन दत्तमार्गो मङ्गलकनामा प्रहृष्टवदनः पुरुषः पादयोः प्रणम्य राजानं व्यजिज्ञपत्—'देव, दिष्टया वर्धसे। प्रतिहतास्ते शत्रवः। चिरं जीव। जय च पृथिवीम्। त्वत् प्रसादादत्रभवतः शुकनासस्यापि ज्येष्ठायां ब्राह्मण्यां मनोरमाभिधानायां राम इव रेणुकायां तनयो जातः। श्रुत्वा देवः प्रमाणम् इति। अथ नृपतिरमृतवृष्टि-प्रतिममाकर्ण्य तद्वचनं प्रीतिविस्फारिताक्षः प्रत्यवदत्—'अहो कल्याणपरम्परा। सत्योऽयं जन-प्रवादो यद्विपद् विपदं संपत्संपदमनुबध्नाति' इति, तस्मै पुरुषाय अपरिमितं पारितोषिकमादिदेश। उत्थाय च तथैव तेन राजपरिजनेनानुगम्यगानः शुकनासभवनं गत्वा द्विगुणतरमुत्सवमकारयत्।

टीका :—इति + एवम् कथयति तस्मिन् = उसके इस प्रकार कहने पर। ससंभ्रमम् अपसृतेन ससंभ्रमापसृतेन=शीघ्र ही हटे हुए। राजलोकेन= राजवर्ग से, राजाओं से। दत्तः मार्गः यस्मै सः दत्तमार्गः=जिसको मार्ग दिया गया था। प्रहृष्टम् वदनम् यस्य सः प्रहृष्टवदनः = प्रसन्नमुखः। पुरुषः= किसी पुरुष ने। व्यजिज्ञपत् = राजा को सूचित किया। प्रतिहता = नष्ट हो चुके हैं। ज्येष्ठायाम् ब्राह्मण्याम् = बड़ी ब्राह्मणी के गर्भ में से।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मनोरमाभिधानायाम् = **जिसका नाम मनोरमा है उसके गर्भ में से।** राम इव = **परशुराम की भाँति।** अमृतस्य या वृष्टिः तत्प्रतिमम् अमृत-वृष्टिप्रतिमम् = **अमृत की वर्षा के समान।** प्रीत्या विस्फारिते अक्षिणी येन सः प्रीतिविस्फारिताक्षः = **प्रेम से आँखे खूब खोलकर।** प्रत्यवदत् = **(राजा) बोला।** कल्याणानाम् परम्परा कल्याणपरम्परा = **शुभ बातों की कतार, एक के बाद दूसरा, तीसरा, चौथा।** सत्यः + अयम् जनानां-प्रवादः जनप्रवादः = **यह लोगोंका कहना सच है।** विपद् विपदम् = **विपत्ति अपने साथ विपत्ति को।** संपत् संपदम् = **संपत्ति अपने साथ संपत्ति को।** अनुबध्नाति = **बाँधे रहती है।'** तस्मै पुरुषाय = **उस पुरुष के लिये।** अपरिमितम् = **असंख्य, बहुत।** पारितोषिकम् = **इनाम।** आदिदेश = **देने की आज्ञा दी।** राज्ञः परिजनेन राज-परिजनेन = **राजसेवक-वर्ग से।** अनुगम्यमानः = **पीछा किया जाता हुआ।** शुकना-सस्य भवनम् = शुकनासभवनम् = **शुकनास के घर।** द्विगुणतरम् = **दूना।** उत्सवम् अकारयत् = **उत्सव कराया।**

अनुवादः—उसके ऐसा कहने पर शीघ्र ही हटे हुए राजाओं द्वारा रास्ता दिये जाने पर मङ्गलक नामवाले किसी पुरुष ने प्रसन्न-मुख होकर राजा के पैरों में प्रणाम कर सूचित किया—'हे महाराज ! आप बड़े भाग्यशाली हैं। आपके शत्रु जीत लिये गये हैं। आप लम्बे समय तक जीवित रहें। आप पृथ्वी को जीतें। जिस प्रकार रेणुका के गर्भ से परशुराम की उत्पत्ति हुई थी, उसी प्रकार आपकी कृपा से माननीय शुकनास की ज्येष्ठ ब्राह्मणी के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ है। यह सुनकर आप समयोचित जो कुछ ठीक समझें, करें। इसके अनन्तर राजा अमृत की वर्षा के समान उस पुरुष के वचन को सुनकर प्रेम से आँखें खूब खोलकरबोलाः—'आश्चर्य है, शुभ बातों का तांता लग गया है। लोक में यह बात ठीक ही प्रचलित है कि विपत्ति अपने पीछे विपत्तियों को ही बाँधे हुए रहती है और संपत्ति अपने पीछे संपत्तियों को ही बाँधे रहती है अर्थात् विपत्ति के पीछे विपत्तियां ही आती रहती हैं तथा संपत्ति के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पोछे संपत्तियाँ हो आतो रहती हैं। राजा ने उस पुरुष के लिये बहुत सा इनाम देने की आज्ञा दी और उसी प्रकार से उसी राजसेवक वर्ग के साथ-साथ शुकनास के घर जाकर दूना उत्सव कराया।

अतिक्रान्ते च षष्ठीजागरे, प्राप्ते दशमेऽहनि, पुण्ये मुहूर्ते, 'मातुरस्य मया परिपूर्णश्चन्द्रः स्वप्ने मुखकमलमाविशन् दृष्टः' इति स्वप्नानुरूपमेव राजा स्वसूनोश्चन्द्रापीड इति नाम चकार। अपरेद्युः शुकनासोऽपि कृत्वा ब्राह्मणोचिताः सकलाः क्रिया राजानुमतमात्मजस्य विप्रजनोचितं वैशम्पायन इति नाम चक्रे। क्रमेण कृतचूडाकरणादिक्रिया-कलापस्य शैशवमतिचक्राम चन्द्रापीडस्य, तारापीडः क्रीडाव्यासङ्ग-विघातार्थं बहिर्नगरात् अनुक्षिप्रम्, अर्धक्रोशमात्रायामम्, कल्पित-व्यायाम-शालम्, अमरागाराकारम् विद्यामन्दिरमकारयत्। सर्वविधाचार्याणाम् च संग्रहे यत्नमतिमहान्तमन्वतिष्ठत्।

टीका—अतिक्रान्ते च = **बीतने पर।** षष्ठी-जागरे = **बच्चे के जन्म होने से छठे दिन के उत्सव के।** स्वप्नस्य अनुरूपम् स्वप्नानुरूपम् + एव = **स्वप्न के अनुसार ही।** स्वस्य सूनोः स्वसूनोः = **अपने पुत्र का** चन्द्रापीड इति नाम चकार=**चन्द्रापीड इस प्रकार नाम रख दिया।** ब्राह्मणस्य उचिताः ब्राह्मणोचिताः=**ब्राह्मण के योग्य।** सकलाः क्रियाः = **सभी काम।** राज्ञा अनुमतम् राजानुमतम् = **राजा की अनुमति के अनुसार।** आत्मनः जातः आत्मजः तस्य आत्मजस्य = **पुत्र का।** विप्रजनस्य उचितम् विप्रजनोचितम् = **ब्राह्मणों के उचित।** कृतः चूडाकरणादीनाम् क्रियाणाम् कलापः यस्य सः तस्य कृतचूडाकरणादि-क्रियाकलापस्य=**जिसका चूडाकरण से लेकर कई एक संस्कार कर दिये गये हैं ऐसे।** अतिचक्राम= **बीत गया।** क्रीडया यः व्यासङ्गः (चित्तस्य अन्यत्र गमनम्) तस्य विघातार्थम् क्रीड़ाव्यासङ्गविघातार्थम् = **खेल-कूद से चित्त के दूसरी ओर लग जाने से काम में रुकावट पड़ने की संभावना को रोकने के लिये** बहिः नगरात् = **नगर से बाहर।** अनुक्षिप्रम्=**क्षिप्रा नदी के समीप।** अर्धक्रोशमात्रम् आयामो यस्य तत् अर्धक्रोशमात्रायामम् = **आधा कोश**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तक फैला हुआ। कल्पिता व्यायामार्थं व्यायामस्य वा शाला यस्मिन् तत् कल्पित-व्यायाम-शालम् = जिसमें व्यायाम करने के लिये भी घर बनवा दिया गया था। अमराणाम् आगारस्य आकारम् अमरागाराकारम् = देवमन्दिर के समान। विद्यायाः मन्दिरम् विद्यामन्दिरम् = विद्यालय का भवन। अकारयत् = बनवा दिया। सर्वासां विद्यानाम् ये आचार्याः तेषाम् सर्वविद्याचार्याणाम् = सब विद्याओं के आचार्यों के। संग्रहे = स्वीकार करने में, सब विद्याओं के पढ़ने में।

अनुवाद—"षष्ठी" के महोत्सव के समाप्त होने पर, दसवें दिन के आ पहुँचने पर शुभ मुहूर्त्त में राजा ने अपने पुत्र का नाम स्वप्न के अनुसार ही इस विचार से चन्द्रापीड रखा कि स्वप्न में इसकी माता के मुँह में मैंने सोलह कला से पूर्ण चन्द्रमा को प्रवेश करते देखा है। दूसरे दिन शुकनास ने भी ब्राह्मणोचित सभी संस्कार कर, राजा की राय के अनुसार अपने पुत्र का ब्राह्मण लोगों के योग्य 'वैशम्पायन' ऐसा नाम रख दिया। धीरे-धीरे चूडाकर्म आदि संपूर्ण संस्कार किए हुए चन्द्रापीड का बचपन बीत गया। तारापीड ने खेल-कूद के द्वारा पढ़ाई करने में पड़ती हुई रुकावट को दूर करने के लिये नगर से बाहर क्षिप्रा नदी के समीप आधा कोस तक फैले हुए तथा जिसमें व्यायाम करने के लिये भी भवन का निर्माण कराया गया था, और जो देवताओं के भवन के तुल्य था, एक विद्यालय के भवन का निर्माण करा दिया। राजकुमार भी सब विद्याओं के आचार्यों के विषयों अर्थात् सभी शास्त्रों को पढ़ने में कठोर परिश्रम करने लगा।

तत्रस्थं च तं केसरिकिशोरकमिव पञ्जरगतं कृत्वाऽखिलविद्योपादानार्थमाचार्येभ्यश्चन्द्रापीडं शोभने दिवसे वैशम्पायनद्वितीयमर्पयामास। प्रतिदिनं चोत्थायोत्थाय सह विलासवत्या विरलपरिजनस्तत्रैव गत्वैनमालोकयामास राजा। चन्द्रापीडोऽपि अनन्यहृदयतया पात्रवशादुपजातोत्साहैराचार्यैरुपदिश्यमानः सर्वा विद्या जग्राह। ऋते च महाप्राणतायाः सर्वाभिरन्याभिः कलाभिरनुचकार तं वैशम्पायनः। चन्द्रापीडस्य तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सहपांशुक्रीड़नतया सहसंवृद्धतया च सर्वविश्रम्भस्थानं द्वितीयमिव हृदयं वैशम्पायनः परं मित्रमासीत्। निमिषमपि तेन विना स्थातुमेकाकी न शशाक। वैशम्पायनोऽपि न क्षणमपि तं विरहयांचकार। एवं तस्य चन्द्रापीडस्य यौवनारम्भः प्रादुर्भवन् रमणीयस्यापि द्विगुणां रमणीयतां पुपोष।

टीका–तत्र तिष्ठतीति तत्रस्थः तम् तत्रस्थम्=**वहाँ रहते हुए।** केसरिणः किशोरकः तं केसरिकिशोरकम् इव=**सिंह के बच्चे के समान।** पञ्जरं गतः पंजरगतः तम् पंजरगतम् इव=**पिंजड़े के अन्दर।** अखिलानाम् विद्यानाम् उपादानार्थम् अखिलविद्योपादानार्थम्=**सम्पूर्ण विद्याओं को ग्रहण करने के लिए।** वैशम्पायनः द्वितीयः यस्य सः तम् वैशम्पायनद्वितीयम्=**वैशम्पायन को साथ में करके।** अर्पयामास=**सौंप दिया।** विरलाः परिजना यस्य सः विरलपरिजनः=**थोड़े से सेवकजनों को साथ में लिये हुए।** अनन्यहृदयतया=**एकमात्र उसी पर अपने चित्त को लगाने से।** उपजातः उत्साहः येषां ते उपजातोत्साहाः तैः उपजातोत्साहैः=**उत्साह में भरे हुए।** ऋते च महाप्राणतायाः=**बड़े जोशीलेपन को छोड़कर।** महाप्राणतायाः=**जोशीलापन (ऋते के योग में पंचमी होती है)।** सर्वाभिः अन्याभिः कलाभिः=**सभी दूसरी कलाओं से।** अनुचकार तम्=**उस (चन्द्रापीड) का अनुकरण किया।** सह यत् पांसुना क्रीडनम् सहपांसुक्रीडनम्, तस्य भावस्तत्ता तया सह-पांसुक्रीडनतया=**साथ साथ (बचपन) को धूल में खेलने से।** सह संवृद्धः तस्य भावः तत्ता तया सह संवृद्धतया=**साथ-साथ पाले-पोसे जाने से।** सर्वस्य विश्रम्भस्य (विश्वासस्य) स्थानम् सर्वविश्रम्भस्थानम्=**सब तरह से विश्वास का पात्र।** द्वितीयम् + इव हृदयम्=**दूसरा हृदय जैसा।** वैशम्पायनः परं मित्रम् आसीत्=**वैशम्पायन अधिक से अधिक मित्र था।** निमिषम् अपि=**क्षणमात्र भी।**

अनुवादः—**वहां (विद्यालय में) उस चन्द्रापीड को पिंजड़े में स्थित सिंह शावक की भांति संपूर्ण विद्याओं को पढ़ने के लिए शुभ दिन में वैशम्पायन को साथ में कर गुरुजनों को सौंप दिया। राजा प्रतिदिन उठ-उठकर रानी विलासवती के साथ थोड़े से सेवक जन को साथ में**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लेकर वहीं विद्यालय में जाकर इसे देख आता था। चन्द्रापीड भी दत्तचित्त होकर योग्य होने के नाते सब गुरुजनों से उत्साह के साथ पढ़ाया जाता हुआ सब विद्याओं को ग्रहण कर बैठा। एकमात्र जोशीलापन को छोड़कर वैशम्पायन ने भी अन्य दूसरी कलाओं से चन्द्रापीड का अनुकरण किया अर्थात् चन्द्रापीड के ही समान सब कलाओं में निपुण हो गया था। वैशम्पायन धूल में साथ-साथ पालन-पोषण होने तथा सब प्रकार से विश्वासपात्र होने के कारण चन्द्रापीड का, दूसरे हृदय की भांति मित्र था। थोड़ी देर भी वह (वैशम्पायन) के बिना अकेला नहीं रह सकता था। वैशम्पायन भी क्षणमात्र उससे पृथक् नहीं रहता था। इस प्रकार उस सौन्दर्यसम्पन्न चन्द्रापीड के यौवन का उदय होने पर उसका सौंदर्य दूना हो गया।

एवं च क्रमेण समारूढ़यौवनारम्भम्, परिसमाप्त-सकल-कला-विज्ञानम् अधीताशेषविद्यम् चन्द्रापीडमानेतुं राजा बलाधिकृतं बलाहकनामानमाहूयातिप्रशस्तेऽहनि प्राहिणोत्। स गत्वा विद्यागृहं द्वारपैः समावेदितः प्रविश्य क्षिति-तल-बिलम्बित-चूडामणिना शिरसा प्रणम्य स्वभूमिसमुचिते राजसमीप एव सविनयमासने राजपुत्रानुमतो न्यषीदत्। स्थित्वा च मुहूर्तमात्रं बलाहकश्चन्द्रापीडमुपसृत्य दर्शितविनयो व्यजिज्ञपत्—'कुमार, महाराजः समाज्ञापयति—'पूर्णा नो मनोरथाः। अधीतानि शास्त्राणि, शिक्षिताः सकलाः कलाः। गतोऽसि सर्वायुधविद्यासु परां प्रतिष्ठाम्। अनुमतोऽसि विनिर्गमाय विद्यागृहात् सर्वाचार्यैः। उपगृहीतशिक्षं पश्यतु त्वां जनः। दर्शनं प्रति ते समुत्सुकानि अतीव सर्वाण्यन्तःपुराणि। अयमत्र भवतो दशमो वत्सरो विद्यागृहमधिवसतः। प्रविष्टोऽसि षष्ठमनुभवन् वर्षम्। एवं संपिण्डितेनामुना षोडशेन प्रवर्धसे। तदद्य प्रभृति निर्गत्य दर्शनोत्सुकाभ्यो दत्त्वा दर्शनं मातृभ्यः अभिवाद्य च गुरून् अपगत-नियन्त्रणो यथासुखमनुभव राज्यसुखानि नवयौवन-ललितानि च। संमानय राजलोकम्। पूजय द्विजातीन्। परिपालय प्रजाः। आनन्दय बन्धुवर्गम्। अयं च ते त्रिभुवनैकरत्नम्, अनिल-गरुड-सम-जवः इन्द्रायुधनामा तुरङ्गमः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रेषितो महाराजेन द्वारि तिष्ठति । एष खलु पारसीकाधिपतिना महाराजाधिरोहण-योग्यम्' इति संदिश्य प्रहितः । इदं च कुलक्रमागतानां राजपुत्राणां सहस्रम् परिचारार्थमनुप्रेषितं तुरंगमाधिरूढं द्वारि प्रणामलालसं प्रतिपालयति' इत्यभिधाय विरतवचसि बलाहके चन्द्रापीडः पितुराज्ञां शिरसि कृत्वा 'प्रवेश्यतामिन्द्रायुधः' इति निर्जिगमिषुरादिदेश ।

टीका:—समारूढः यौवनस्य आरम्भः यस्य सः तम् समारूढयौवनारम्भम् । परिसमाप्ताः सकलाः कलाः विज्ञानानि येन सः तम् परिसमाप्त-सकल-कला-विज्ञानम्=**जिसने सम्पूर्ण कलाओं और विज्ञानों को समाप्त कर डाला है** । अधीताः अशेषाः विद्याः येन सः तम् अधीताशेषविद्यम्=**जिसने सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़ लिया है, ऐसे** । अतिप्रशस्ते=**अत्यन्त शुभ** । क्षितितले विलम्बितः चूडामणिः यस्य सः तेन क्षितितलविलम्बितचूडामणिना=**पृथ्वी पर लगी है सिर के मुकुट की मणि जिसकी ऐसे** । स्वस्य भूमौ यत्समुचितं तस्मिन् स्वभूमिसमुचिते=**अपने स्थान के योग्य** । राजपुत्रेण अनुमतः राजपुत्रानुमतः=**राजकुमार की अनुमति से (आज्ञा से)** दर्शितः विनयः येन सः दर्शितविनयः=**विनम्र भाव से** । विनिर्गमाय=**छोड़कर बाहर चले जाने को** । सर्वाचार्यैः (सर्वे च ते आचार्याः सर्वाचार्याः तैः **सभी गुरुओं से** । उपगृहीता शिक्षा येन सः तम् उपगृहीतशिक्षम्=**विद्या ग्रहण किये हुए** । दर्शनाय उत्सुकाभ्यः दर्शनोत्सुकाभ्यः=**देखने के लिए उत्कण्ठित** । अपगतं नियन्त्रणं यस्मात् सः अपगतनियन्त्रणः=**सब प्रकार के विद्यालय सम्बन्धी बन्धनों से मुक्त होता हुआ** । नवेन यौवनेन ललितानि नवयौवन-ललितानि=**नई जवानी के आनन्द देने वाले** । त्रिभुवने एकम् रत्नम् त्रिभुवनैकरत्नम्=**तीनों भुवनों में एकमात्र रत्न**, अनिलस्य गरुडस्य च समः जवः यस्य सः अनिलगरुडसमजवः=**वायु और गरूड़ (vulture) के समान वेगवाला** । इन्द्रायुधनामा तुरङ्गमः=**इन्द्रायुध नाम का घोड़ा** । प्रेषितः महाराजेन=**महाराज का भेजा हुआ** । एष खलु=**वास्तव में यह** । पारसीकस्य अधिपतिना पारसीकाधिपतिना=**फारस के राजा ने** । महाराजस्य अधिरोहणे योग्यम् महारा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जाधिरोहणयोग्यम्=महाराज तारापीड की सवारी के योग्य है। कुलस्य क्रमात् आगतानाम् कुलक्रमादागतानाम् = वंश-परम्परा से आये हुए। राजपुत्राणाम् सहस्त्रम् = राजपुत्रों का हजार।

अनुवादः—इस प्रकार धीरे-धीरे युवावस्था में पैर रखते हुए चन्द्रापीड को जिसने कि सम्पूर्ण कलाओं और विज्ञानों को समाप्त कर दिया था, जिसने सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़ लिया था, राजा तारापीड़ ने घर लिवा लाने के लिये सेना के अधिकारी बलाहक को बुलाकर अत्यन्त शुभ दिन पर भेज दिया। उसने विद्यालय में जाकर द्वारपालों से निवेदन किया। उन्होंने उसे भीतर पहुँचाया। भूमि पर मस्तक की मणियों को स्पर्श करते हुए सिर से प्रणाम कर वह अपने बैठने योग्य आसन पर राजकुमार के समीप ही उसकी आज्ञा से बैठ गया। थोड़ी देर तक बैठकर बलाहक ने चन्द्रापीड के समीप जाकर बड़े नम्रभाव से सूचित किया—'हे राजकुमार, महाराज आज्ञा देते हैं कि हमारी अभिलाषाएँ पूरी हो चुकी हैं, आपने सब शास्त्र पढ़ लिये हैं, सब कलाएँ सीख ली हैं, अस्त्र-शस्त्र की सभी विद्याओं में पारङ्गत हो चुके हैं। सभी गुरुजनों ने विद्यालय से जाने के लिये आज्ञा दे दी है, शिक्षा प्राप्त किये हुए आपको अब प्रजागण देख ले। सम्पूर्ण अन्तःपुर के लोग आपको देखने के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित हैं। आपको विद्यालय में रहते-रहते दस वर्ष बीत चुके हैं। जब आप छः वर्ष के थे तभी आप विद्यालय में भर्ती हुए थे। इस प्रकार आप इस समय सोलह वर्ष के हो चुके हैं। इसलिये आज से लेकर यहाँ से अवकाश प्राप्त कर आपको देखने के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित अपनी माताओं को अपना दर्शन देकर, गुरुजनों को प्रणाम कर, विद्यालय के नियमों के बन्धनों से छुटकारा पाकर नवीन युवावस्था के आनन्द-दायक राज्य के सुखों का आप आनन्दपूर्वक अनुभव करें।

राज-समाज का सम्मान करें। ब्राह्मण लोगों की पूजा करें। प्रजा का पालन करें। अपने बन्धुसमाज को आनन्द दें। यह महाराज का भेजा हुआ वायु और गरुड़ के समान वेगवाला इन्द्रायुध नामक घोड़ा फाटक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर खड़ा है जो कि तीनों भुवनों का रत्न है। यह फारस देश के राजा ने यह संदेश भेजकर महाराज तारापीड को भेजा है कि यह उनकी सवारी के योग्य है, वंश परम्परा से चला आता हुआ यह हजारों राजपुत्रों का समूह आपकी सेवा के लिये साथ-साथ भेजा गया है जो कि घोड़ों पर सवार हुआ आपको प्रणाम करने की लालसा से फाटक पर आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। ऐसा कहते हुए बलाहक के चुप हो जाने पर चन्द्रापीड ने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य किया और जाने की इच्छा करते हुए उसने आज्ञा दी कि इन्द्रायुध को अन्दर ले आइए।

अथ वचनानन्तरमेव प्रवेशितमश्वातिशयमिन्द्रायुधमद्राक्षीत्। दृष्ट्वा तमदृष्टपूर्वमश्वम् आसीच्चास्य मनसि। अतितेजस्वितया महाप्राणतया च सदैवतेयमस्याकृतिः यत्सत्यमारोहणे शङ्कामिव मे जनयति, नहि सामान्यवाजिनामीदृश्यो भवन्त्याकृतयः। आवेदयतीव मदन्तःकरणमस्य दिव्यताम्।

टीका:—न दृष्टः पूर्व यः सः तम् = जिसे आज से पहिले कभी न देखा था ऐसे। अतितेजस्वितया = अत्यन्त अधिक तेजस्वी होने से। महाप्राणतया = विशालकाय और महापराक्रमी होने से। सदैवता = देवताओं के साथ रहनेवाली। न हि सामान्याः ये वाजिनः सामान्यवाजिनः तेषाम् सामान्यवाजिनाम् = साधारण घोड़ों की।

अनुवाद:—इसके अनन्तर चन्द्रापीड के कहने के बाद ही उस विशेष गुणवाले इन्द्रायुध घोड़े को भीतर लाने पर चन्द्रापीड ने देखा। उस अनोखे घोड़े को देखकर चन्द्रापीड के मन में यह विचार आया कि अत्यन्त तेजस्वी होने तथा विशाल काय एवं महापराक्रमी होने के कारण इसका चेहरा ऐसा मालूम पड़ता है मानों यह देवताओं के साथ रहनेवाला है, यहाँ तक कि वास्तव में इसके ऊपर सवार होने पर मेरे हृदय में शंका जैसे उत्पन्न होती है कि ऐसा डील-डौल साधारण घोड़ों का नहीं होता है, मेरा अन्तःकरण इसकी अलौकिकता को प्रकट करता है।

इति विचिन्तयन् एवारुरुक्षुरासनादुदतिष्ठत्। इन्द्रायुधो मुहुर्मुहुस्ताडयता क्षितितलं दक्षिणखुरेणाह्वयन्निव अतिमनोहरं ह्रेषारवमकरोत्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अथानेन मधुरह्लेषितेन दत्तारोहणाभ्यनुज्ञ इवेन्द्रायुधमारुरोह चन्द्रापीडः । ते राजपुत्राश्चैकैकशः प्रतिनामग्रहणमावेद्यमाना बलाहकेन दूरावनतैः शिरोभिस्तं प्रणेमुः । चन्द्रापीडस्तु तान् सर्वान् मानयित्वा यथोचित-मनन्तरं तुरंगमाधिरूढेनानुगम्यमानो वैशम्पायनेन 'जय जीव' इति मधुर-वचसा पठता बन्दिजनेन स्तूयमानो नगराभिमुखः प्रतस्थे । अनन्तरं च समाप्तसकलविद्यो विद्यागृहान्निर्गतोऽयमागच्छति चन्द्रापीड इति-समाकर्ण्यालोकनकुतूहलिन्यः हर्म्यतलानि ललनाः समारुरुहुः । क्रमेण च राजकुलसमीपमाससाद चन्द्रापीडः । राजद्वारं चासाद्य तुरंगमादवततार ।

टीकाः—आरुरुक्षुः = **चढ़ने की इच्छा करता हुआ, (चन्द्रापीड)** । ह्लेषारवम् = **हिनहिनाहट** । मधुर ह्लेषितेन = **मीठी हिनहिनाहट से** । दत्ता आरोहणस्य अभ्यनुज्ञा येन सः दत्तारोहणाभ्यनुज्ञः इव=**चढ़ने की आज्ञा जैसे देता हुआ** । आवेद्यमानाः= **परिचय कराये जाते हुए** । दूरात् अवनतैः दूरावनतैः—**दूर से ही झुकाये हुए** । तुरंगमे अधिरूढेन तुरंगमाधिरूढेन=**घोड़े पर सवार** । समाप्ताः सकलाः विद्याः येन सः समाप्तसकलविद्यः =**पूरा पढ़-लिख चुका है** । विद्यागृहात्+निर्गतः= **विद्यालय से अवकाश पा चुका है** । आलोकने कुतूहलं आसां अस्ति इति आलोकनकुतूहलिन्यः = **देखने के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित** । हर्म्यतलानि= **विशाल धनिक भवनों में** ।

अनुवादः—**ऐसा सोचता हुआ वह चन्द्रापीड घोड़े पर सवार होने की इच्छा से आसन से उठ खड़ा हुआ । इन्द्रायुध ने भी अपने दाहिने खुर से बार-बार पृथ्वी को पटकते हुए मानो उसे सवार होने के लिये बुला रहा हो अत्यन्त मनोहर हिनहिनाहट की । इसके अनन्तर इस मीठी हिन-हिनाहट से सवार होने की आज्ञा पाये हुए की भाँति वह चन्द्रापीड इन्द्रायुध पर सवार हो गया । बलाहक द्वारा एक-एक करके नाम ले लेकर परिचित कराये गये उन राजपुत्रों ने भी दूर से ही सिर झुका कर उसे (चन्द्रापीड को) प्रणाम किया । उन सबको यथोचित आदर देकर पीछे से घोड़े पर सवार वैशम्पायन को साथ लिये हुए तथा 'जय हो,**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चिरकाल तक जीवित रहो' इस प्रकार भाट लोगों से स्तुति किये जाते हुए चन्द्रापीड ने भी नगर की ओर प्रस्थान किया। इसके अनन्तर यह सुनकर कि चन्द्रापीड अपनी पढ़ाई समाप्त कर चुका है और यह विद्यालय से अवकाश प्राप्त कर आ रहा है, उसे देखने के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित महिलाएँ ऊँचे-ऊँचे भवनों पर चढ़ गईं। धीरे-धीरे चन्द्रापीड राजमहल के समीप आ पहुँचा, और सिंहद्वार पर पहुँचकर घोड़े से उतर गया।

अवतीर्य च करतलेन करे वैशम्पायनमवलम्ब्य पुरः सविनयं प्रस्थितेन बलाहकेनोपदिश्यमान-मार्गो राजकुलं विवेश। ससंभ्रमोपगतैश्च कृतप्रणामैः प्रतीहारमण्डलैरुपदिश्यमानमार्गो हंस-धवल-शयन-तले निषण्णं पितरमपश्यत्। 'आलोकय' इति च प्रतीहार-वचनानन्तरम् अतिदूरावनतेन शिरसा कृतप्रणामम् 'एहि-एहि' इत्यभिदधानो दूरादेव प्रसारित-भुज-युगलः पिता विनयावनतं तं समालिलिङ्ग। आलिङ्गितोन्मुक्तश्च पितुश्चरणपीठे पिण्डीकृतम् उत्तरीयम् आत्म-ताम्बूल-करङ्कवाहिन्या सत्वरमासनीकृतम् 'अपनय' इति शनैर्वदन्नग्रचरणेन समुत्सार्य चन्द्रापीडः क्षितितल एव निषसाद। अनन्तरनिहिते चास्यासने राज्ञा सुतनिर्विशेषमुपगूढो वैशम्पायनो न्यषीदत्। मुहूर्तमिव स्थित्वा 'गच्छ वत्स, पुत्रवत्सलां मातरमभिवाद्य दर्शनलालसा यथाक्रमं सर्वा जननीर्दर्शनेनानन्दय' इति विसर्जितः पित्रा सविनयमुत्थाय सपरिजनेनोपदिश्यमानवर्त्मा अन्तःपुरमाययौ।

टीका—करतलेन करे=हाथ से हाथ में, अपने हाथ से वैशम्पायन के हाथ को पकड़कर। वैशम्पायनम् अवलम्ब्य=वैशम्पायन का सहारा लेकर। उपदिश्यमानः मार्गः यस्य सः उपदिश्यमान-मार्गः=जिसको मार्ग बताया जा रहा था ऐसा (चन्द्रापीड ने)। ससंभ्रमम् यथा स्यात् तथा उपगतैः ससंभ्रमोपगतैः=बड़ी खटपटाहट के साथ आये हुए। कृतः प्रणामः यैः ते तैः कृतप्रणामैः=प्रणाम किये हुए। प्रतीहाराणाम् मण्डलैः प्रतीहारमण्डलैः=ड्योढ़ी पर रहनेवाले लोगों से, द्वारपालों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उपदिश्यमान-मार्गः = जिसको रास्ता बताया गया था। हंसवत् धवले शयनतले हंस-धवल-शयनतले = हंस के समान श्वेत-शय्या में। निषण्णम् = बैठे हुए। प्रसारितम् भुजयोर्युगलं येन सः तम् प्रसारितभुजयुगलम् = दोनों भुजाओं को फैलाये हुए। पूर्वम् आलिङ्गितः पश्चात् उन्मुक्तः च आलिङ्गितोन्मुक्तश्च = भेंटकर छोड़ा हुआ। आत्मनः ताम्बूलकरङ्कवाहिन्या = पानदान उठाकर साथ-साथ ले चलनेवाली द्वारा। अनन्तरं निहिते अनन्तरनिहिते = पास ही में रखे हुए। सुतनिर्विशेषम् = पुत्र के तुल्य ही। उपगूढः = भेंटा हुआ। पुत्रवत्संलाम् मातरम् = पुत्र पर स्नेह रखनेवाली। मातरम् + अभिवाद्य = माता को प्रणाम करके। दर्शनस्य लालसया = देखने की चाह से। यथाक्रमम् = सिलसिले से। सर्वाः-जननीः = सब माताओं को। इति विसर्जितः पित्रा = पिता जी ने इस प्रकार अवकाश देने पर। उपदिश्यमानं वर्त्म यस्य सः उपदिश्यमान-वर्त्मा = रास्ता जिसको बताया जा रहा था ऐसा (वह चन्द्रापीड)।

अनुवाद—घोड़े से उतरकर वैशम्पायन के हाथ में हाथ मिलाकर आगे-आगे चलते हुए बलाहक द्वारा बड़ी नम्रता के साथ रास्ता दिखलाया जाता हुआ वह चन्द्रापीड़ राजमहल में गया। बड़ी फुर्ती के साथ प्रणाम करते हुए द्वारपाल या सेवक लोगों द्वारा मार्ग दिखाये जाते हुए उसने हंस के समान श्वेत शय्या में बैठे हुए अपने पिता को देखा—'देख लीजिए' इस प्रकार प्रतिहार के वचन के अनन्तर दूर से झुकाए हुए शिर से प्रणाम करने वाले अत्यंत विनम्र उस चन्द्रापीड को 'आओ, आओ' इस प्रकार कहते हुए पिता ने अपनी दोनों भुजाओं को फैलाकर उसे भेंटा। भेंटने के अनन्तर छोड़ा हुआ वह चन्द्रापीड पिता जी के चरणों को रखने की चौकी के पास अपनी पानदान ले चलनेवाली सेविका से चौपुर्ती की हुई आसन के लिये बिछाई हुई चादर को 'इसे हटाओ' इस प्रकार धीरे-धीरे कहते हुए अपने पैर के अगले भाग से उठाकर फेंक बैठा और जमीन पर ही बैठ गया। पास ही में रखे हुए इस चन्द्रापीड के आसन पर राजा के द्वारा पुत्र के ही समान भेंटा गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वैशम्पायन भी बैठ गया। थोड़ी देर ठहर कर 'बेटा जाओ, पुत्रस्नेह से पूर्ण अपनी माता को प्रणाम कर क्रमशः तुम्हें देखने के लिये उत्कण्ठित सभी माताओं को अपने दर्शन से प्रसन्न करो' इस प्रकार कहकर पिता से अवकाश प्राप्त कर चन्द्रापीड नम्रता के साथ उठकर राजसेवक-वर्ग से रास्ता दिखाये जाने पर रनवास में गया।

तत्र समन्तात् परिवृताम् शुद्धान्तर्वंशिकैः समुपसृत्य मातरं प्रणनाम। सा तु तं ससंभ्रममुत्थाप्य स्नेहाकुलेन हृदयेन शुभ्रशतान्यभिध्यायन्ती मूर्धन्युपाघ्राय तं सुचिरमाशिश्लेष। अनन्तरं च तथैव कृतयथोचित समुपचारमाश्लिष्टवैशम्पायना विलासवती स्वयमुपविश्य विनयादवनितले समुपविशन्तमाकृष्य बलादनिच्छन्तमपि चन्द्रापीडमुत्सङ्गमारोपितवती। ससम्भ्रमं परिजनोपनीतायामासन्द्यामुपविष्टे च वैशम्पायने सा चन्द्रापीडं पुनः पुनरालिंग्यावादीत्—'वत्स, कथमसि सोढवानतिदीर्घामिमां गुरुजनयन्त्रणाम्। अहो, गुरुजनस्योपरि भक्तिरसाधारणा। सर्वथा यथा पितुः प्रसादात् समस्ताभिरुपेतो विद्याभिरालोकितोऽसि, एवमचिरेणैव कालेन अनुरूपाभिर्वधूभिरुपेतमालोकयिष्यामि' इति, एवं च तत्रापि नातिचिरमेव स्थित्वा क्रमेण सर्वान्तः पुराणि दर्शनेनानन्दयामास। निर्गत्य च राजकुलद्वारावस्थितमिन्द्रायुधमारुह्य तथैव तेन राजपुत्रलोकेनानुगम्यमानः शुकनासं द्रष्टुमयासीत्।

टीका:—शुद्धः अन्तर्वंशः (अन्तः पुरम्) तत्र नियुक्ताः आन्तर्वंशिकाः (कञ्चुक्यादयः) तै शुद्धान्तर्वंशिकैः = **पवित्र रनवास में नियुक्त पुरुष कञ्चुकी आदि से।** ससंभ्रमम् = **फुर्ती के साथ।** उत्थाप्य = **उठाकर।** स्नेहेन आकुलम् स्नेहाकुलम् तेन स्नेहाकुलेन=**स्नेह से भरे हुए।** अभिध्यायन्ती = **मानती हुई।** मूर्धनि+उपाघ्राय = **सिर को सूँघकर।** आशिश्लेष=**भेंटा।** कृतः यथोचितः समुपचारः (प्रियवाग्व्यापारः) यथा स्यात्तथा यत्र तेन कृत-यथोचितसमुचारम् = **यथोचित कुशलप्रश्न आदि उचित व्यवहार कर लेने पर।** आश्लिष्टः वैशम्पायनः यया सा आश्लिष्टवैशम्पायना=**वैशम्पायन को भेंटे हुई।** ससम्भ्रमम्=**शीघ्र ही फुर्ती के**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

साथ। परिजनेन उपनीतायाम् परिजनोपनीतायाम् = सेवक के द्वारा लाई हुई। आसन्द्याम् = चौकी में। गुरुजनानाम् यन्त्रणाम् गुरुजनयन्त्रणाम् = गुरुजनों के शासन द्वारा उत्पन्न पीड़ा को। भक्तिः असाधारणा = अलौकिक भक्ति (विश्वास)। सर्वथा हर प्रकार से। सर्वान्तःपुराणि = रनवास के सभी भागों को। राजकुलस्य द्वारे अवस्थितम् राजकुलद्वारावस्थितम् = राजमहल के फाटक पर खड़े हुए। इन्द्रायुधम् आरुह्य = इन्द्रायुध पर चढ़कर। तेन राजपुत्रलोकेन अनुगम्यमानः = उस राजकुमारों के समाज के आगे-आगे चलता हुआ।

अनुवाद--वहाँ रनवास में कञ्चुकियों से चारों ओर से घिरी हुई माता के समीप जाकर उसने प्रणाम किया। (माता) ने तो उसे (चन्द्रापीड) को बड़ी फुर्ती के साथ उठाकर पुत्रस्नेह से आकुल हृदय से अनेक शुभकामनाओं को मनाती हुई उसके सिर को सूँघकर उसे बड़ी देर तक भेंटती रही। इसके अनन्तर उसी प्रकार से अपना सद्व्यवहार दिखाकर वैशम्पायन को भेंटती हुई विलासवती ने स्वयं बैठकर नम्रभाव से बैठे हुए चन्द्रापीड के चाहने पर भी जबर्दस्ती उसे खींचकर अपनी गोदी में बिठाया। फुर्ती के साथ सेवक जन के द्वारा लाई गई चौकी पर वैशम्पायन के बैठ जाने पर उस (माता) ने बार-बार चन्द्रापीड को छाती से लगाकर कहा--"बेटा अत्यन्त भारी गुरुजनों की शासन पीडा को तुमने कैसे सहा? आश्चर्य है कि गुरुजन के ऊपर तुम्हारी कैसी ओलोकिक भक्ति है। अब जैसे पिता की कृपा से तुम्हें हर तरह से समस्त विद्याओं से युक्त बंधुओं से युक्त तुम्हें देखूँगी।' इस प्रकार वहाँ भी थोड़ी देर ठहरकर धीरे-धीरे रनवास के सभी भागों को अपने दर्शन से आनन्दित कर दिया। वहाँ से निकल कर राजमहल के फाटक पर खड़े इन्द्रायुध पर चढ़कर उसी प्रकार से राजकुमारों से पीछा किया जाता हुआ वह चन्द्रापीड शुकनास को देखने के लिए चला गया।

अथ शुकनाशगृहद्वारमासाद्य प्रतीहारपुरुषैरनिवार्यमाणोऽपि राजपुत्रो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बाह्याङ्गण एव तुरंगादवततार। द्वारदेशावस्थापिततुरंगश्च द्वितीयमिव राजकुलं शुकनासभवनं विवेश। प्रविश्य चापरमिव पितरं दूरावनतेन मौलिना शुकनासं ववन्दे। शुकनासस्तं सह वैशम्पायनेन प्रेम्णा गाढमालिलिंग। आलिङ्गितोन्मुक्तश्च सादरोपनीतं रत्नासनमपहायावनावेव राजपुत्रः समुपाविशत्। तदनु च वैशम्पायनः। समुपविष्टे च राजपुत्रे शुकनासवर्ज्यम् अखिलम् अवनिपालचक्रम् अवनितलम् अभजत्। स्थित्वा च तूष्णीं क्षणम् इव शुकनासस्तम् अब्रवीत्—'तात चन्द्रापीड, अद्य खलु देवस्य तारापीडस्य समाप्तविद्यम् उपारूढयौवनम् भवन्तम् अवलोक्य सुचिरात् भुवन-राज्य-फल-प्राप्तिः उपजाता। अद्य समृद्धाः सर्वाः गुरुजनाशिषः। सर्वथा कल्पकोटीः वह बाहुना वसुन्धराभारं सह पित्रा' इत्यभिधाय अभ्यर्च्य च विसर्जयाञ्चकार।

टीका :—अनिवार्यमाणः + अपि = **नहीं रोका जाता हुआ भी।** बाह्ये अङ्गणे इति बाह्यांगणे एव = **बाहरी आंगन में ही।** द्वारदेशे अवस्थापितः तुरंगः येन सः द्वार-देशावस्थापित+तुरंगः+च = **और फाटक के पास घोड़े को रखता हुआ।** दूरात् अवनतः दूरावनतः तेन दूरावनतेन = **दूर से झुकाये गये।** मौलिना = **सिर से।** पूर्वम् आलिङ्गितः पश्चात् उन्मुक्तः च इति आलिङ्गितोन्मुक्तश्च = **आलिंगन करके छोड़ा हुआ।** आदरेण सह उपनीतम् सादरोपनीतम् = **आदरपूर्वक लाये गये।** रत्नानाम् आसनम् रत्नासनम् = **रत्नों के बने हुए आसन को।** अपहाय = **छोड़कर।** अवनौ + एव (अयादि चतुष्टय सन्धि) = **भूमि पर ही।** राजपुत्रः समुपाविशत् = **राजपुत्र बैठ गया।** शुकनासवर्ज्यम् = **शुकनास को छोड़कर।** अखिलम् = **समग्र।** अवनिपालानाम् चक्रम् अवनिपालचक्रम् = **राजमण्डल।** अवनितलम् अभजत् = **भूमि पर बैठ गया।** उपारूढं यौवनं यस्य सःतम् उपारूढयौवनम् = **युवावस्था को प्राप्त हुए।** भुवनानां राज्यस्य यत् फलम् तस्य प्राप्तिः भुवनराज्य-फल-प्राप्तिः = **संसार के राज्य के फल की प्राप्ति।** सर्वाः गुरुजनानाम् आशिषः गुरुजनाशिषः = **गुरु लोगों के सभी आशीर्वाद।**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अनुवाद्—इसके अनन्तर शुकनास के घर के फाटक पर पहुँचकर रक्षक द्वारपालों द्वारा न रोका जाने वाला राजकुमार बाहरी आंगन में ही घोड़े से उतर गया। फाटक पर घोड़े को रखकर दूसरे महल के समान शुकनास के भवन में उसने प्रवेश किया। प्रवेश करके दूसरे पिता के समान शुकनास को दूर से ही झुकाये हुए सिर से प्रणाम किया। शुकनास ने प्रेम पूर्वक वैशम्पायन के साथ राजकुमार को खूब भेंटा। भेंटने के बाद छोड़ने पर वह राजकुमार आदर पूर्वक लाये गये रत्नविनिर्मित आसन को छोड़कर भूमि पर ही बैठ गया। उसके बाद वैशम्पायन भी बैठ गया। राजकुमार के बैठ जाने पर शुकनास को छोड़कर सारा राजमण्डल भूमि पर ही बैठ गया। थोड़ी देर चुपचाप बैठकर शुकनास ने उससे कहा—'बेटा चन्द्रापीड, पढ़ाई को समाप्त किए हुए तथा युवावस्था को पहुँचे हुए आपको देखकर बड़े लम्बे समय से महाराज तारापीड को संपूर्ण संसार के राज्य के फल की प्राप्ति हो चुकी है। आज अपने गुरुजनों के आशीर्वाद सफल हो चुके हैं। हर प्रकार से करोड़ों वर्ष पर्यन्त अपने पिता के साथ इस पृथ्वी के भार को अपने बाहुबल से धारण कीजिए।' ऐसा कह कर उसकी पूजा कर अर्थात् यथोचित सत्कार कर उसे छोड़ दिया।

विसर्जितश्च उत्थाय अन्तःपुरं प्रविश्य दृष्ट्वा वैशम्पायनमातरं मनोरमाभिधानाम् निर्गत्य समारुह्येन्द्रायुधम् पित्रा पूर्वकल्पितम् भवनम् राजकुमारो जगाम। गत्वा च शयने मुहूर्तमुपविश्य सह तेन राजलोकेनाभिषेकादिकम् अशनावसानम् अकरोत् दिवसविधिम्। अभ्यन्तरे च शयनगृह एवेन्द्रायुधस्य अवस्थानमकल्पयत्। एवं प्रायेण वैशम्पायनेन राजपुत्रलोकेन च सह आहारवृत्तिमकरोत्। उपस्पृश्य च गृहीतताम्बूलस्तस्मिन् मुहूर्तमिव स्थित्वा इन्द्रायुधसमीपमगमत्। तत्र च स्वयमेवेन्द्रायुधस्य पुरो यवसमाकीर्य निर्गत्य राजकुलमयासीत्।

टीका—पित्रा पूर्वकल्पितम्=पिता के पहिले निश्चित किये हुए या बनवाये हुए। अभिषेकादिकम्=स्नान से प्रारम्भ करके। अशनाव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सानम्=भोजनपर्यन्त । दिवसस्य विधिम् दिवसविधिम्=दिन का काम । अभ्यन्तरे च=और भीतर ही । शयनगृहे एव=सोने के कमरे में ही । इन्द्रायुधस्य अवस्थानम् = इन्द्रायुध के रहने का स्थान (प्रबन्ध) । वैशम्पायनेन राजपुत्रलोकेन च सह = वैशम्पायन और राज कुमारों के साथ । आहारस्य वृत्तिम् आहारवृत्तिम् = भोजन का काम । उपस्पृश्य च=पानी से मुँह धोकर । गृहीतम् ताम्बूलम् येन सः गृहीतताम्बूलः= पान लेकर । तस्मिन् मुहूर्तम् इव स्थित्वा = उसमें थोड़ी देर ठहरकर । इन्द्रायुधस्य समीपम् इन्द्रायुधसमीपम् = इन्द्रायुध के समीप ।

अनुवाद—अवकाश पाते ही उठकर अन्तःपुर में गया । वहाँ मनोरमा नामवाली वैशम्पायन की माँ को देखा और वहाँ से निकलकर इन्द्रायुध पर चढ़कर पिता के पहले बनवाये हुए भवन में राजकुमार चला गया । वहाँ जाकर थोड़ी देर तक पलङ्ग पर बैठकर उस राजमण्डल के साथ स्नान से लेकर भोजन तक की सभी दिन की क्रियाएँ कीं । अपने सोने के कमरे के भीतर ही इन्द्रायुध के रहने का प्रबन्ध कर दिया । इस प्रकार प्रायः वैशम्पायन तथा राजकुमारों के साथ उसने भोजन किया । और मुँह धोने के बाद पान लेकर थोड़ी देर ठहर कर इन्द्रायुध के समीप चला गया । वहाँ अपने आप इन्द्रायुध के सामने घास डालकर राज-महल में चला गया ।

अन्येद्युश्च प्रभात-समय एव प्रथमे वयसि वर्तमानया अनुगम्यमानम कन्यकया कैलासनामानं कञ्चुकिनमायान्तमपश्यत् । स कृतप्रणामः समुपसृत्य विज्ञापयामास—कुमार, महादेवी विलासवती समाज्ञापयति इयं खलु कन्यका महाराजेन पूर्वं कुलूतराजधानीमवजित्य कुलूतेश्वरदुहिता पत्रलेखाभिधाना बालिका सती बन्दीजनेन सहानीय अन्तःपुरपरिचारिकामध्यमुपनीता । सा मया दुहितृनिर्विशेषमियन्तं कालम् उपलालिता संवर्धिता च । तत् इयम् इदानीम् उचिता भवतः ताम्बूल-करङ्क-वाहिनी इति कृत्वा मया प्रेषिता' इत्यभिधाय विरतवचसि कैलासे कृतप्रणामा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

म् पत्रलेखाम् सुचिरमालोक्य चन्द्रापीडः 'यथाज्ञापयति अम्बा' इत्येव-मुक्त्वा कञ्चुकिनं प्रेषयामास ।

टीका--वर्तमानया = **विद्यमान**। अनुगम्यमानम् = **पीछा किया जाता। हुआ**। सः कृतः प्रणामः येन सः कृतप्रणामः = **प्रणाम करते हुए उसने**। समुपसृत्य = **समीप में जाकर**। कुलूतराजधानीम् अवजित्य = **कुलूत नामक राजधानी को जीतकर**। कुलूतेश्वरस्य दुहिता कुलूतेश्वरदुहिता = **कुलूतेश्वर की पुत्री**। पत्रलेखा इति अभिधानम् यस्याः सा पत्रलेखाभिधाना = **पत्रलेखा नामवाली लड़की**। अन्तः पुरस्य परिचारिकाणाम् मध्यम् अन्तःपुरपरिचारिकामध्यम् = **अन्तः पुर की सेविकाओं के बीच में**। भवतः = **आपकी**। ताम्बूलकरंकवाहिनी = **पानदान साथ ले चलनेवाली, दासी**। विरतं वचः यस्य सः तस्मिन् विरतवचसि कैलासे = **कैलास के चुप हो जाने पर**। कृतः प्रणामः यया सा ताम् कृतप्रणामाम् = **प्रणाम किये हुई**।

अनुवाद:--चन्द्रापीड ने दूसरे दिन प्रातः काल ही एक युवती को साथ लिए हुए कैलास नामक कञ्चुकी को आते हुए देखा। उसने प्रणाम करके समीप जाकर प्रार्थना की--'राजकुमार, महारानी विलासवती आप को आज्ञा देती हैं कि महाराज तारापीड ने पहिले दिनों कुलूत-राजधानी को जीतकर कुलूतेश्वर की पुत्री पत्रलेखा नामक कुमारी को अन्य बन्दीजनों के साथ ले आकर अन्तःपुर की सेविकाओं के साथ रख छोड़ा था। उस लड़की को मैंने इतने समय तक पुत्री के समान पाला और इतना बड़ा किया, अब यह आपकी सेविका होने योग्य है, यह सोचकर मैंने आपके पास भेजी है।' ऐसा कहकर कैलास के चुप हो जाने पर प्रणाम किये हुई पत्रलेखा को चन्द्रापीड़ ने देर तक देखकर 'जैसी आज्ञा माता की हो' ऐसा कहकर कञ्चुकी को भेज दिया।

पत्रलेखा तु ततः प्रभृति दर्शनेनैव समुपजातसेवारसा छायेव राजसूनोः पार्श्वं न मुमोच ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एवं समतिक्रामत्सु केषुचिद् दिवसेषु राजा चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः प्रतीहारान् उपकरण-संभार-संग्रहार्थमादिदेश। समुपस्थित-यौवराज्याभिषेकं च तं कदाचिद् दर्शनार्थमागतम् आरूढविनयमपि विनीततरमिच्छन् शुकनासः सविस्तरमुवाच——

टीका:-समुपजातः सेवायां रसः यस्याः सा समुपजातसेवारसा=सेवा करने में जिसे आनन्द आने लगा ऐसी (वह)। राज्ञः सूनोः राजसूनोः= राजकुमार का। समतिक्रामत्सु=बीतने पर। केषुचित् दिवसेषु = कितने ही दिनों के। चन्द्रापीडस्य=चन्द्रापीड के। यौवराज्यार्थम् यः अभिषेकः तम् यौवराज्याभिषेकम् =युवराज बनाने का उत्सव, युवराज के पद पर नियुक्त करने को। चिकीर्षुः=चाहता हुआ। प्रतीहारान्=सेवकवर्ग को। उपकरणस्य यः संभारः तस्य संग्रहार्थम् = सामग्री को एकत्र करने के लिये। समुपस्थितः यौवराज्यस्य अभिषेकः यस्य सः तम् समुपस्थित-यौवराज्याभिषेकम् च तम् = और जिसका युवराज पद पर नियुक्त करने का अवसर आ पहुँचा है ऐसे उसको (चन्द्रापीड को) दर्शनार्थम् आगतम् = देखने के लिए आये हुए। आरुढः विनयः यस्य स तम् आरूढविनयम् अपि = नम्रभाव से युक्त हुए भी उसको। विनीततरम्= और अधिक नम्र करने की। इच्छन्=इच्छा रखता हुआ। शुकनासः सविस्तरम् = शुकनास ने विस्तारपूर्वक। उवाच = कहा।

अनुवाद :--पत्रलेखा तो उस दिन से लेकर चन्द्रापीड के देखने से ही सेवा करने में अत्यन्त अधिक उत्साह दिखाती हुई छाया के समान राजकुमार का साथ नहीं छोड़ती थी।

इस प्रकार कुछ दिनों के बीतने पर चन्द्रापीड को युवराज बनाने की इच्छा रखते हुए राजा ने सेवक वर्ग को राज्याभिषेक की सामग्री एकत्र करने के लिए आज्ञा दी। युवराज कर्म में अभिषिक्त होने वाले, दर्शन के लिए आये हुये तथा विनम्र भी उस चन्द्रापीड को अधिक नम्र बनाने का इच्छा रखते हुए शुकनास ने बड़े विस्तार पूर्वक उससे कहा--

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शुकनासोपदेशः

'तात चन्द्रापीड, विदितवेदितव्यस्य अधीत-सर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमपि उपदेष्टव्यमस्ति। केवलम् च निसर्गत एव अभानुभेद्यम् अरत्नालोकोच्छेद्यम् अप्रदीप-प्रभापनेयम् अतिगहनम् तमो यौवनप्रभवम्। अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः। कष्टम् अनञ्जनवर्तिसाध्यम् अपरम् ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्। अशिशिरोपचारहार्यः अतितीव्रो दर्प-दाहज्वरोष्मा। सततम् अमूलमन्त्रशम्यो विषमोऽविनय-विषास्वादमोहः' इति विस्तरेणाभिधीयसे।

टीका:—विदितम् वेदितव्यम् येन सः तस्य विदितवेदितव्यस्य=**जिसे जानने-योग्य शास्त्रों का ज्ञान पूरी तरह हो चुका है ऐसे।** अधीतानि शास्त्राणि येन सः तस्य=**जिसने सभी शास्त्रों को पढ़ डाला है।** निसर्गतः एव = **स्वभाव से ही।** न भानुना भेद्यम् अभानुभेद्यम् = **सूर्य भी जिसे नष्ट नहीं कर सकता है।** न रत्नानाम् आलोकेन उच्छेद्यम् अरत्नालोको-च्छेद्यम् = **जो रत्नों की प्रभा से भी नष्ट नहीं किया जा सकता है।** न प्रदीपानाम् प्रदीपस्य वा प्रभया अपनेयम् अप्रदीप-प्रभापनेयम्=**जो दीपकों की प्रभा से भी हटाया नहीं जा सकता है।** यौवनात् प्रभवो यस्य तत् यौवनप्रभवम् = **जवानी से उत्पन्न हुआ।** न परिणामेन उपशमः अपरिणामोपशमः = **ज्वर औषधि आदि उपचार के द्वारा परिवर्तन हो जाने पर शान्त हो जाता है, (परन्तु धन का घमंड वयः परिणाम होने पर भी अर्थात् वृद्धावस्था तक भी शान्त नहीं होता है)।** न अञ्जन-वर्तेः साध्यम् अनञ्जनवर्तिसाध्यम् = **अञ्जन की बत्ती से भी वश में नहीं किया जा सकता है।** तिमिरेण अन्धत्वम् तिमिरान्धत्वम् = **अन्धकार से आया हुआ अन्धापन।** न शिशिरैः उपचारैः हार्यः अशिशिरोपचार-हार्यः = **ठंडे इलाजों से दूर नहीं किया जा सकता है।** दर्प एव दाहज्वरः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तस्य उष्मा दर्पदाह-ज्वरोष्मा = अहंकार रूपी दाहज्वर की गर्मी। न मूलमन्त्रैः शम्यः अमूलमन्त्रशम्यः = बीजमन्त्रों से शान्त नहीं किया जा सकता। विषमः = भयानक। अविनयः एव विषम् तस्य आस्वादः तस्मात् यः मोहः इति अविनय-विषास्वाद-मोहः = उद्दण्डता रूपी विष के चखने से उत्पन्न अचेतनता (बेहोशी) है। इति विस्तरेण अभिधीयसे = इसीलिये विस्तारपूर्वक तुमसे कहा जा रहा है।

अनुवादः—बेटा चन्द्रापीड ! विषयों का ज्ञान रखते हुए तथा सभी शास्त्रों को पढ़े हुए तुमको कुछ भी उपदेश देना शेष नहीं रहा है। किन्तु वास्तविकता तो यह है कि जवानी से उत्पन्न अज्ञान का अन्धकार ऐसा विलक्षण होता है कि यह साधारण अन्धकार की भाँति न सूर्य के प्रकाश और न रत्नों एवं दीपकों की प्रभा से ही दूर होता है। दूसरे रोग तो ओषधियों के उपचार से शान्त हो जाते हैं किन्तु धन का अहङ्कार तो अवस्था के परिणाम अर्थात् वृद्धावस्था के आने पर भी शान्त नहीं होता। आँखों का अन्धकार (न देखना) अर्थात् रतौंधी आदि दृष्टि-दोष तो अञ्जन के लगाने से मिट जाता है किन्तु यह धन के अहंकार का रोग बड़ा कष्ट देनेवाला है। किसी प्रकार के अञ्जन का प्रयोग करने से भी दूर नहीं होता है और यह दूसरे ही प्रकार का अन्धापन है। दूसरे रोग तो ठंडी औषधियों के प्रयोग से दूर हो जाते हैं, किन्तु यह तो किसी ठंडी ओषधि के प्रयोग से भी दूर नहीं होता। अहंकाररूपी जलानेवाले-ज्वर की गर्मी तो बहुत भयंकर है। दूसरे प्रकार के विष तो मन्त्र-प्रयोग से शान्त हो जाते हैं, किन्तु इस उद्दण्डता रूपी विष के आस्वाद का नशा तो किसी प्रकार के मूलमंत्र से भी नहीं उतारा जा सकता है और यह बड़ा भयंकर है। इसलिये इन बातों को विस्तार-पूर्वक तुम्हें बताया जा रहा है।

गर्भेश्वरत्वम् अभिनवयौवनत्वम् अप्रतिमरूपत्वम् च इति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा। अविनयानाम् अपि एकैकम् एषाम् आयतनम्, किमुत समवायः। यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्र-जल-प्रक्षालन-निर्मलापि कालुष्य-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मुपयाति बुद्धिः । अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः । अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रम् यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः । इन्द्रियहरिणहारिणी च सततमतिदुरन्ता इयम् उपभोगमृगतृष्णिका । तान्येव विषयस्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराणि आपतन्ति मनसः ।

टीका—गर्भेश्वरत्वम् = गर्भ में जन्म लेने पर ही स्वामी घोषित हो जाना । अभिनव-यौवनत्वम् = भरपूर जवानी । अप्रतिमरूपत्वम् = सबसे अधिक सौन्दर्य । अमानुषशक्तित्वम् = अलौकिक शक्ति का होना । अविनयानाम् अपि = छिछोरापन या उद्दण्डताओं का भी । समवायः = समुदाय । शास्त्रम् एव जलम् तेन यत् प्रक्षालनं तेन निर्मला अपि इति शास्त्रजलप्रक्षालन-निर्मलापि = शास्त्ररूपी जल से धोने पर साफ की हुई भी । न उज्झिता धवलता यया सा अनुज्झित-धवलता अपि = सुफेदी को न छोड़ती हुई भी । रागेण सहिता सरागा इव = लालिमा से युक्त (विरोध), दूसरे अर्थ में-वासनाजन्य प्रेम से युक्त जैसे । यूनां दृष्टिः = नवयुवकों की निगाह । इन्द्रियाणि एव हारिणानि इन्द्रियहरिणानि तेषाम् हारीणि इति इन्द्रिय-हरिण-हारीणि = इन्द्रिय रूपी हरिणो को चुरा ले जाने वाली । अतिदुरन्ता = अन्त में अत्यन्त अधिक दुख देनेवाली, असीम । उपभोगस्य मृगतृष्णिका = उपभोगरूपी मृगतृष्णा है ।

अनुवाद:—गर्भ से ही स्वामी घोषित किया जाना, नई जवानी को धारण करना, अत्यन्त अधिक सौन्दर्य का मिलना अर्थात् अतिरूपवान् होना और अलौकिक शक्ति का होना यह सब वास्तव में अनर्थकारी बातों की परम्परा है । इनमें से एक-एक भी सब तरह के अविनयों (उद्दण्ड भावनाओं) का घर है, भला इन सबके समूह का तो कहना ही क्या है अर्थात् जहाँ ये सभी वस्तुएँ विद्यमान हो वहाँ कितना अनर्थ होगा इसके लिये तो कहना ही क्या है ! युवावस्था के प्रारम्भ होने पर प्रायः शास्त्र रूपी जल के द्वारा प्रक्षालित बुद्धि भी मलिनता को प्राप्त हो जाती है । नवयुवकों की दृष्टि श्वेतता को न छोड़ती हुई भी लालिमा को लिये हुए रहती है (विरोध) दूसरे अर्थ में नायिका के वासनामय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रेम से भरी रहती है यह प्रकृति पुरुष को सद्विचारों से इस प्रकार दूर उड़ा भगाती है जैसे हवा का बवंडर सूखे पत्तों को उड़ा देता है। यह उपभोग रूपी मृगतृष्णा इन्द्रियों रूपी हरिणों को अपनी ओर खींचनेवाली हैं और अपार हैं जो कि अन्त में दुःख देनेवाली है। उन्हीं विषयों का उपभोग करने से आनन्द अनुभव किये जाने पर वे ही चित्त को अच्छे मालूम पड़ते हैं।

भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेनोपदेशगुणाः। अयमेव च अनास्वादित-विषय-रसस्य ते काल उपदेशस्य। कुसुमशर-शर-प्रहार-जर्जरिते हि हृदि जलमिव गलत्युपदिष्टम्। गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षमम् अजलम् स्नानम्; अनुपजात-पलितादि-वैरूप्यम् अजरम् वृद्धत्वम्; नैवोद्वेगकरः प्रजागरः। विशेषेण राज्ञाम्। विरला हि तेषामुपदेष्टारः। प्रतिशब्दक इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्। उद्दामदर्पाश्च उपदिश्यमानमपि ते न शृण्वन्ति। शृण्वन्तोऽपि गजनिमीलितेन अवधीरयन्तः खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून्। अहङ्कार-दाहज्वर-मूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः। अलीकाभिमानोन्मादकारीणि धनानि। राज्य-विष-विकार-तन्द्रा-प्रदा राजलक्ष्मीः।

टीका :— अपगतम् मलम् यस्मात् तत् तस्मिन् अपगतमले हि मनसि=**निर्मल चित्त पर**। स्फटिक मणौ+इव=**स्फटिक मणि में जैसे**। रजनिकरस्य गभस्तयः (किरणाः) रजनिकरगभस्तयः=**चन्द्रमा की किरणें**। उपदेशस्य गुणाः उपदेशगुणाः=**उपदेश के गुण**। न आस्वादितः विषयाणां रसः येन सः तस्य अनास्वादितविषयरसस्य ते=**जिसने विषय वासनाओं के रस को नहीं चखा है ऐसे तेरा**। उपदेशस्य=**उपदेश का**। कुसुमशरस्य शराणां प्रहारेण जर्जरिते कुसुमशरप्रहारजर्जरिते=**कामदेव के बाणों की चोटों से छिदे हुए**। अखिलस्य मलस्य प्रक्षालने क्षमम् अखिल-मल-प्रक्षालन-क्षमम्=**संपूर्ण मल को धो डालने में समर्थ**। अनुपजातम् पलितादि वैरूप्यम् यस्मिन् तत् अनुपजात-पलितादि-वैरूप्यम्=**जिसमें**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बाल पकने की सफेदी आदि चेहरे को भद्दा बना देने वाली कोई बात नहीं, ऐसा। प्रजागरणम्=जागते रहना (है)। उद्दामः दर्पः येषां ते उद्दाम-दर्पाः च=पराकाष्ठा के अहंकार को रखते हुए। गजस्य निमीलितवत् निमीलितेन (मध्यमपदलोपी समास)=हाथी की मूंदी हुई आखों के समान आंखें बंद करके। अवधीरयन्तः=अनादर करते हुए, कोई परवाह न करते हुए। हितस्य उपदेशं ददति इति हितोपदेशदायिनः तान् तथा-विधान् गुरून्=हित की बातों को समझाने वाले गुरुजनों को। अहंकार एव दाहज्वरः तेन या मूर्च्छा तया अन्धकारिता=पीडित करने वाले ज्वर के तुल्य अहंकार की अचेतना से संसार में जिसे कुछ नहीं सूझता है ऐसी अलीकः यः अभिमानः उन्मादश्च तौ कुर्वन्ति इति अलीकाभिमानोन्मादका-रीणि=झूठे अहंकार तथा उन्माद को उत्पन्न करनेवाले। राज्यम् एव विषम् तस्माद् यः विकारः तेन या तन्द्रा तां प्रददाति इति राज्यविष-विकारतन्द्रा-प्रदा=राज्य रूपी विष से उत्पन्न विचार से जो तन्द्रा आती है उसको देने वाली।

अनुवादः——आप ही जैसे व्यक्ति उपदेश ग्रहण करने के योग्य होते हैं। निर्मल हृदय पर उपदेशों का प्रभाव आसानी से इसी प्रकार पड़ता है जैसे स्वच्छ स्फटिक मणि के ऊपर चन्द्रमा की किरण प्रति-बिम्बित होती हैं। सांसारिक विषय वासनाओं के अनुभव से रहित तुम्हारे लिए यही उपदेश का उचित समय है, क्योंकि कामदेव के बाणों की चोटों से चलनी बने हुए हृदय में तो उपदेश पानी के समान टपककर बाहर निकल जाता है किन्तु गुरु का उपदेश या बूढों की शिक्षा एक ऐसा स्नान है जो सुनने वाले व्यक्तियों के सम्पूर्ण मल को साफ करने में पानी की अपेक्षा नहीं रखता है। वह उपदेश एक ऐसा बुढापा (दानाई) है जिसमें शरीर को भद्दा कर देने वाली बालों की सफेदी आदि बुढापे की विशेषताएँ नहीं रहती हैं। बुढापे में अंगों के शिथिल हो जाने या बालों के पक जाने की स्थिति आ जाती है परन्तु इस उपदेश रूपी बुढापे में शरीर को भद्दा बना देने वाली कोई स्थिति ही उपस्थित नहीं होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रात भर जागते रहने से चित्त में बेचैनी आ जाती है किन्तु यह ऐसा जागरण (चौकन्ना बन जाना, सब बातों की जानकारी प्राप्त कर लेना) है कि जिससे चित्त को किसी प्रकार की बेचैनी नहीं आती है। खासकर के राजाओं की यह दशा होती हैं। उनको समझाने वाले इने–गिने ही होते हैं। डर के कारण सब लोग प्रतिध्वनि के समान उनकी हाँ में हाँ मिलाने वाले होते हैं अर्थात् केवल उनके वचनों का अनुमोदन करनेवाले होते हैं। अपने अहंकार में चूर वे दिए हुए उपदेश को भी नहीं सुनते हैं, और यदि कहीं सुन भी लिए तो उसे हाथी के समान आँखें मूंदकर निरादर की दृष्टि से उसकी उपेक्षा करते हुए हित की बात को समझनेवाले गुरुजनों के चित्त को ठेस पहुँचाते हैं। राजाओं का स्वभाव अहंकार के दुखदायी ज्वर की बेहोशी से उत्पन्न अन्धकाररूपी अज्ञानता से विह्वल होता है। धन ऐसी चीज है जो कि मनुष्य में झूठा अभिमान तथा नशा पैदा करने वाला है। राजलक्ष्मी तो राज्य रूपी विष के प्रभाव से उत्पन्न उँघाई (slumber) को देने वाली है अर्थात् राज्य पाया हुआ व्यक्ति तो अपने अहंकार में मस्त रहता है। उसे राज्य प्राप्ति के अहंकार के झोंके पड़ते रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लक्ष्मी-दोषाः

आलोकयतु तावत् लक्ष्मीमेव भवान् प्रथमम् । इयमनार्या लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते । दृढगुण-सन्दान-निष्पन्दीकृतापि नश्यति । न परिचयं रक्षति । नाभिजनमीक्षते । न रूपमालोकयते । न कुलक्रमम् अनुवर्तते । न शीलं पश्यति । न वैदग्ध्यं गणयति । न श्रुतमाकर्णयति । न धर्ममनुरुध्यते । न त्यागमाद्रियते । न विशेषज्ञतां विचारयति । नाचारं पालयति । न सत्यमनुबुध्यते । न लक्षणं प्रमाणीकरोति । गन्धर्व-नगर-लेखेव पश्यत एव नश्यति, न क्वचिन्निर्भरमाबध्नाति पदम् । यथा-यथा चेयं चपला दीप्यते तथा-तथा दीप-शिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवल-मुद्वमति । दुष्टपिशाचीव स्वल्पसत्त्वमुन्मत्तीकरोति । सरस्वती-परिगृहीतम् ईर्ष्ययेव नालिङ्गति जनं गुणवन्तमपवित्रमिव न स्पृशति । उदारसत्त्वम् अमङ्गलमिव न बहु मन्यते । सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति । अभिजातम् अहिमिव लङ्घयति । शूरं कण्टकमिव परिहरति । दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति । विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति । मनस्विनम् उन्मत्तमिव उपहसति ।

टीका :—अनार्या = **नीच** । लब्धा + अपि = **प्राप्त होने पर भी** । दृढं गुणानाम् यत् सन्दानम् (बन्धनम्) तेन निष्पन्दीकृता दृढगुण-सन्दान-निष्पन्दीकृता अपि = **मजबूत गुणरूपी** । (**गुण=रस्सी, योग्य शास्त्रीय ज्ञान**) **बन्धन से जकड़ देने पर भी अपनाये गये मार्ग को** । न अनुबुध्यते = **नहीं जानती है** । गन्धर्वनगरस्य लेखा गन्धर्वनगर लेखा इव = **गन्धर्व नगरी की वस्तु के समान** । पश्यतः एव=**देखते ही** । उद्वमति = **एकमात्र उगलती रहती है** । दुष्टपिशाची इव = **भयङ्कर पिशाची के समान** । स्वल्पसत्त्वम् + अपि = **साधारण शक्ति वाले व्यक्ति को भी** । उन्मत्तीकरोति = **पागल बना देती है** । सरस्वत्या परिगृहीतम्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सरस्वती-परिगृहीतम् = सरस्वती के अपनाये हुए व्यक्ति को। न आलिङ्गति = नहीं भेंटती है। जनं गुणवन्तम् = गुणवान् व्यक्ति को। अपवित्रम् + इव = अशुद्ध की तरह। उदारम् सत्त्वम् यस्य सः तम् उदारसत्त्वम् अमङ्गलम् इव=अनिष्टकारी के समान। सुजनम् = सज्जन मनुष्य को। अभिजातम्=कुलीन व्यक्ति को। अहिम् + इव = साँप के समान। लङ्घयति = लाँघ देती है। दातारम् = दानी पुरुष को। विनीतम् = नम्र व्यक्ति के समीप। पातकिनम् इव = पापी के पास जैसे। मनस्विनम् = स्वाभिमानी या पंडित मनुष्य का तो। उन्मत्तम् इव = पागल की तरह। उपहसति = मजाक करती है, उपहास करती है।

अनुवाद:—पहिले आप लक्ष्मी पर ही विचार कीजिए। इस नीच दौलत को किसी तरह से प्राप्त कर लेने पर भी इसकी बड़ी कठिनता से रक्षा की जा सकती है। अच्छे गुणों रूपी मजबूत रस्सी से निश्चल कर देने पर भी यह लुप्त हो जाती है। जान-पहिचान को भी नहीं बनाये रखती है। अच्छे वंश को भी नहीं देखती है (क्योंकि नीच वंश के लोगों के पास भी दिखाई देती है)। (कुरूप व्यक्तियों के पास भी दिखाई देने से) रूप का भी कोई ध्यान नहीं रखती है। न वंश-परम्परा के अनुसार चलती रहती है (कभी एक के यहाँ तो कभी दूसरे के घर)। न किसी शिष्ट आचरण रखनेवाले व्यक्ति को देखती है (क्योंकि अशिष्ट व्यक्तियों के पास भी लक्ष्मी दिखाई देती है)। किसी के पाण्डित्य को भी नही गिनती है (मूर्खों के पास भी धन रहता है)। शास्त्रों को भी नही सुनती है अर्थात् शास्त्र पढ़नेवाले व्यक्तियों के यहाँ नहीं रहती है (क्योंकि विद्वान् व्यक्ति निर्धन रहता है) धर्म का अनुसरण नहीं करती है (अधार्मिक पुरुष भी धनी होते हैं)। दान को आदर नहीं देती है अर्थात् दानी पुरुषों के पास यह नहीं रहती है (और कृपण मनुष्यों के पास धन अधिक होता है)। किसी की विशेष जानकारी का विचार भी नहीं करती है। शिष्ट व्यक्तियों के आचरण का पालन भी नहीं करती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सचाई को तो जानती ही नहीं है। किसी व्यक्ति के ऊपर विद्यमान शुभ लक्षणों को तो मानती ही नहीं है। गन्धर्व लोक की झलक के समान देखते-देखते लुप्त हो जाती है। कहीं पक्की तरह से पैर जमाये भी नहीं रहती है। जैसे-जैसे यह चपल स्वभाववाली लक्ष्मी अपनी चमक अधिक दिखाती रहती है अर्थात् ज्यों-ज्यों यह बढ़ती जाती है त्यों-त्यों दीपक की लौ के समान काजल के तुल्य गन्दे कामों को उगलती है। यह लक्ष्मी दुष्ट पिशाचिनी के समान साधारण व्यक्ति को भी पागल बना देती है। सरस्वती के अपनाये हुए व्यक्तियों अर्थात् विद्वान् लोगों को तो मानों डाह के कारण नहीं भेंटती है। अपवित्र व्यक्ति को जैसे कोई स्पर्श नहीं करता हैं वैसे ही यह भी गुणवान् व्यक्ति को नहीं छूती है। अपशकुन के समान उदारचित्त व्यक्ति को आदर नहीं देती है। जैसे बिना प्रयोजन के कोई किसी को देखना नहीं चाहता है ठीक उसी तरह यह लक्ष्मी सज्जन को देखती ही नहीं है। सांप को लांघकर जैसे दूसरी ओर निकला जाता है ऐसे ही कुलीन व्यक्ति को फांदकर यह भी निकल जाती है। जैसे काँटे को हटा दिया जाता है वैसे ही बहादुर पुरुष को ठुकरा फेंकती है। दानी पुरुष को बुरे स्वप्न के समान याद भी नहीं करती है। पापी आदमी के समीप जैसे कोई नहीं जाता है ऐसे ही नम्र व्यक्ति के समीप यह नहीं जाती है। पागल (विक्षिप्त) व्यक्ति को देखकर जैसे उसकी हँसी-मजाक उड़ायी जाती है, उसी प्रकार यह लक्ष्मी अपनी लगन के पक्के लोगों का उपहास करती है।

एषा प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकरिणः, वध्यशाला साधुभावस्य। राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य। न हि तं पश्यामि यो हि अपरिचितया अनया न निर्भरम् उपगूढ़ः यः वा न विप्रलब्धः। एवंविधया अपि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीता विक्लवा भवन्ति राजानः। सर्वाविनयानाम् अधिष्ठानताम् च गच्छन्ति। तथाहि, अभिषेक-समय एव चैतेषां मङ्गल-कलश-जलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अपह्रियते क्षान्तिः, हृदयं मलिनी भवति, अपह्रियते सत्यता, उत्सार्यन्ते गुणाः,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः, परामृश्यते यशः। तथाहि, केचित् संपद्भिः प्रलोभ्यमाना रागावेशेन बाध्यमाना विह्वलतामुपयान्ति।

टीका :—कपटनाटकस्य = कपटरूपी नाटक की। कदलिका = केला। काम-करिणः = कामदेव रूपी हाथी की। वध्यशाला = वधस्थान (Slaughter House)। साधुभावस्य = अच्छे विचारों की। राहु-जिह्वा (राहोः जिह्वा) = राहु ग्रह की जीभ। धर्मः एव इन्दुमण्डलम् धर्मेन्दु-मण्डलम् तस्य धर्मेन्दुमण्डलस्य = धर्म रूप पूर्ण चन्द्र की। न उपगूढः = आलिङ्गन नहीं किया हो। न विप्रलब्धः = धोखा न दिया हो। परि-गृहीता = अपनाये हुए। विक्लवाः = मोहित। अधिष्ठानताम् = स्थान को। मङ्गलार्थम् ये कलशाः तेषाम् जलैः इति मंगल-कलश-जलैः इव = मङ्गल सूचक कलशों के जल से मानो। अपह्रियते = दूर कर दी जाती है। उत्सार्यन्ते = उखाड़कर फेंक दिये जाते हैं। गुणाः = शूरवीरता आदि विशेषताएँ, साधुवादाः = प्रशंसाएँ, शाबासियाँ। परामृश्यते = छिपा दिया जाता है, मिटा दिया जाता है। यशः = प्रसिद्धि। रागस्य आवेशेन रागावेशेन = इच्छा के वशीभूत होकर। विह्वलताम् = मोह को। उप-यान्ति = प्राप्त हो जाते हैं।

अनुवाद :—नाटक की भूमिका (introduction) के समान यह लक्ष्मी कपट रूपी नाटक की प्रारम्भिक अवस्था है, अर्थात् कपट इसी से आरम्भ होता है। जैसे हाथी केले को चाव से खाता है, केला जिस तरह हाथी को पसन्द है, इसी प्रकार कामदेव रूपी हाथी के लिये यह लक्ष्मी भी है। अर्थात् लक्ष्मी के होने पर उसके रखनेवाले को कामवासना अधिक उद्दीप्त होती है। यह लक्ष्मी अच्छे विचारों की वध्यभूमि (कसाईखाना) है। अर्थात् इसके होने से अच्छे विचार समाप्त हो जाते हैं। जिस प्रकार पूर्ण चन्द्र को राहु निगल जाता है ठीक वैसे ही यह लक्ष्मी भी धर्मरूपी पूर्ण चन्द्र को निगलने के लिये राहु की जिह्वा के समान है, अर्थात् लक्ष्मी के अहंकार में आदमी धर्म का ध्यान नहीं रखता है। मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखता हूँ जिसका बे-जान-पहचान-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वाली इस लक्ष्मी ने तृप्तिपूर्वक आलिङ्गन न किया हो, या जिसे इसने धोखा न दिया हो। इस प्रकार की इस दुराचारिणी से किसी प्रकार अपने चंगुल में फँसाये हुए राजा लोग भी विचारशून्य हो जाते हैं और वे सब तरह की उद्दण्डताओं के पात्र हो जाते हैं। देखिए, इनकी अनुकूलता तो राज्याभिषेक के समय मंगल कलशों के जल से ही जैसे धुल जाती है, अर्थात् राज्याभिषेक होने पर ही ये विपरीत भाव रखने लगते हैं। क्षमा दूर कर दी जाती है, हृदय मैला हो जाता है, सचाई का तो अपहरण कर दिया जाता है, भले गुण उखाड़कर फेंक दिये जाते हैं, प्रशस्तियों के स्थान पर धिक्कार मिलने लगता है। यश का तो लोप हो जाता है। देखिये। कई एक तो धन से ललचाये जाने पर उसके लालच में फँसकर अज्ञानता को प्राप्त हो जाते हैं।

ग्रहैरिव गृह्यन्ते, भूतैरिवाभिभूयन्ते, मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, सत्त्वैरिवावष्टभ्यन्ते, वायुनेव विडम्ब्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते, धनोष्मणा पच्यमाना इव विचेष्टन्ते, गाढप्रहाराहता इवाङ्गानि न धारयन्ति, कुलीरा इव तिर्यक् परिभ्रमन्ति,पङ्गव इव परेण संचार्यन्ते, पार्श्ववर्तिनां शिरः शूलमुत्पादयन्ति, आसन्नमृत्यव इव बन्धुजनमपि नाभिजानन्ति, महामान-स्तम्भ-निश्चलीकृता न गृह्णन्ति उपदेशम्। तदवस्थाश्च व्यसन-शत-संख्यतामुपगताः पतितमप्यात्मानं नावगच्छन्ति।

टीका :—अभिभूयन्ते = झपटे जाते हैं। मन्त्रैः इव आवेश्यन्ते = मन्त्रों से जैसे वश में किये जाते हैं। अवष्टभ्यन्ते=जबर्दस्ती दबोचे जाते हैं। विडम्ब्यन्ते = इधर-उधर झोखे खाये हुए फेंके जाते हैं। ग्रस्यन्ते = निगले जाते हैं। धनस्य उष्मणा धनोष्मणा=धन की गर्मी से। पच्यमाना इव = पकाये जाते हुए जैसे। विचेष्टन्ते = विविध प्रकार की चेष्टा करते हैं। जिस प्रकार फल के पकाने के समय तक अनेक प्रकार की चेष्टाएँ की जाती हैं। गाढेन प्रहारेण अभिहताः गाढप्रहाराभिहताः इव= बड़ी चोट खाये हुए जैसे। कुलीराः इव = केकड़ों के समान। तिर्यक् = तिरछे। पङ्गवः इव = अपाहिज या लूले-लंगड़े की तरह। न अभि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जानन्ति = नहीं पहचानते हैं। महान् मानः एव स्तम्भः तेन निश्चलीकृताः इति महामान-स्तम्भ-निश्चलीकृताः = बड़े अहंकार रूपी खूँटे से (बँधे होने के कारण) जकड़े हुए (ये धनवान् लोग)। उपगताः = पहुँचे हुए।

अनुवादः—ग्रहों से जैसे दबाये गये हैं। भूतों से जैसे अपने अधीन किये गये हैं। मन्त्रों से जैसे वश में किये जाते हैं। दुष्ट जन्तुओं से जैसे दबोचे जाते हैं। दुष्ट वायु के झोंके से जैसे इधर-उधर डुलाये जाते हैं। पिशाचों से जैसे निगले जाते हैं। धन की गर्मी से पकाये जाते हुए जैसे विविध चेष्टाओं को करते रहते हैं। बड़ी गहरी चोटों से घायल व्यक्तियों की तरह इनके शरीर के अवयव कुछ नहीं कर सकते हैं। केकड़ों की तरह टेढ़े-टेढ़े चलते रहते हैं। लूले-लंगड़े अपाहिजों की तरह दूसरे के सहारे पर चलते हैं। अपने अड़ोस-पड़ोस के लोगों के लिये सिर-दर्द पैदा करते हैं। समीप आई हुई मृत्युवाले पुरुषों की तरह धनवान् लोग अपने भाई-बन्धुओं को भी नहीं पहिचानते हैं। बड़े अहंकार में ऐंठे हुए होने पर उपदेश को भी ग्रहण नहीं करते हैं। वैसी हालत में रहने पर सैकड़ों दुर्व्यसनों को अपना मित्र बनाये रखने पर नीच दशा को प्राप्त हुई अपनी आत्मा को समझ भी नहीं पाते हैं।

अपरे तु स्वार्थ-निष्पादन-परैः द्यूतं विनोद इति, परदाराभिगमनं वैदग्ध्यमिति, मृगयां श्रम इति, पानं विलास इति, प्रमत्ततां शौर्यमिति, स्वदार-परित्यागमव्यसनितेति, गुरुवचनावधीरणमपर-प्रणेयत्वमिति, अजित-भृत्यतां सुखोपसेव्यत्वमिति, नृत्य-गीत-वाद्य-वेश्याभिसक्ति रसिकतेति, महापराधावकर्णनं महानुभावतेति, वन्दिजनख्यातिं यशः-श्लोक इति, तरलतामुत्साह इति, अविशेषज्ञताम् अपक्षपातित्वमिति, दोषानपि गुण-पक्षमध्यारोपयद्भिः अन्तः स्वयमपि विहसद्भिः प्रतारणकुशलैर्धूर्तैः स्तुतिभिः प्रतार्यमाणाः सर्व-जनस्योपहास्यतामुपयान्ति। आत्मविडम्बनां चानु-जीविना जनेन क्रियमाणामभिनन्दन्ति। आत्म-बाहु-युगलम् संभावयन्ति। दर्शन-प्रदानमपि अनुग्रहं गणयन्ति। दृष्टिपातमप्युपकारपक्षे स्थापयन्ति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संभाषणमपि संविभागमध्ये कुर्वन्ति। आज्ञामपि वरप्रदानं मन्यन्ते। स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति।

टीका—परेषां दाराणाम् अभिगमनम् इति परदाराभिगमनम्=दूसरों की स्त्रियों के साथ संभोग करना। वैदग्ध्यम्=चतुरता समझते हैं। स्वदारपरित्यागः=अपनी पत्नी का त्याग करना। अव्यसनित इति=व्यसन में सम्मिलित नहीं करते हैं। गुरोः वचनस्य अवधीरणम् गुरुवचनावधीरणम्=गुरुजन के वचन का उल्लंघन करना। अपरप्रणेयत्वम् इति=दूसरों को वश में करने का ढंग समझते हैं। अजितभृत्यताम्=बिना प्रयोजन के भी सेवकों को डांटते रहना। नृत्येषु, गीतेषु, वाद्येषु च वेश्यासु च अभिसक्ति नृत्य-गीत-वाद्य-वेश्याभिसक्ति=नाचना, गाना, बजाना और वेश्याजन पर चित्त को लगाये रखना। महताम् अपराधानाम् अवकर्णनम् इति महापराधावकर्णनम्=बड़े-बड़े अपराधों को सुनना। बन्दिजनानां ख्यातिं बन्दिजन ख्यातिम्=भाट लोगों द्वारा गाई हुई अपनी प्रशस्ति को। यशःश्लोक इति=अपने यश का पवित्र कीर्तन समझते हैं। अविशेषज्ञताम्=किसी बात के विषय में कुछ भी ज्ञान न होने को। अपक्षपातित्वम्=अपने को मध्यस्थ प्रकट करना या तटस्थ प्रकट करना समझते हैं। गुणानां पक्षम् अध्यारोपयद्भिः=गुणों के पक्ष में रखते हुए। विहसद्भिः=हँसते हुए। प्रतारणे कुशलैः प्रतारण-कुशलैः=धोखा देने में चतुर। आत्मनः बिडम्बनाम् च=अपने मिथ्या दिखलावे को, झूठी प्रशंसा को। अनुजीविना जनेन=सेवकजन के द्वारा। क्रियमाणाम्=की जाती हुई। अभिनन्दन्ति=बहुत अच्छी समझते हैं, पसन्द करते हैं। आत्मनः बाह्वोः युगलम् आत्मबाहुयुगलम्=अपनी दोनों भुजाओं का। दर्शनस्य प्रदानम् अपि=अपना दर्शन देना भी। संविभागस्य मध्ये=पारितोषिक के बीच में।

अनुवादः—दूसरे राजा लोग भी धनवान् होने पर अपना मतलब हल करनेवाले अर्थात् अपना प्रयोजन सिद्ध करनेवाले लोगों के साथ जुआ खेलना दिलबहलाव समझते हैं, दूसरे की स्त्रियों के साथ संभोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करना चतुरता समझते हैं। आखेट करना अपना परिश्रम समझते हैं। मदिरा का सेवन करना शौकीनी समझते हैं। पागलपन का जोश शूरता; अपनी पत्नी का त्याग व्यसन न समझना; गुरुजन के वचनों का पालन न करना, दूसरों के ऊपर रौब जमाना; निष्प्रयोजन अपने आश्रित लोगों को डाँटना, सुखपूर्वक शासन करने का ढंग; नाचना-गाना, बजाना तथा वेश्याओं में आसक्त रहना रसिकता; बड़ी बुरी बातों को सुनते रहना महानुभावता, अपनी हार को सह लेना क्षमा; मनमौजीपन को स्वामित्व; देवताओं का तिरस्कार करना बहादुरी, भाट लोगों के द्वारा गाई जाती हुई अपनी प्रशंसा को पवित्र यश, चञ्चलता को उत्साह, किसी बात के तथ्य को न समझ पाना अपने को तटस्थ बताना समझते हैं। इस प्रकार अवगुणों को भी अच्छे गुणों को कोटि में रखते हुए, भीतर ही भीतर अपने आप उनका मजाक उड़ाते हुए, दूसरों को ठगने में चतुर लम्पट व्यक्तियों से मिथ्या प्रशंसा द्वारा ठगे जाते हुए ये धनवान् लोग सभी लोगों के हँसी के पात्र हो जाते हैं। अपने आश्रित जनों द्वारा की जाती हुई अपनी मिथ्या स्तुति को बहुत पसन्द करते हैं। अपने भुजबल को बहुत महत्त्व देते हैं। किसी को अपने दर्शन देने को तो एक बड़ी कृपा में सम्मिलित करते हैं। किसी की ओर देख लेना भी बड़ा उपकार समझते हैं। किसी के साथ बातचीत कर देना तो ऐसा समझते हैं कि मानो पारितोषिक दे दिया हो। आश्रित जनों को आज्ञा देना वरदान मानते हैं और किसी को छूने को तो मानो उसे पवित्र कर देने में सम्मिलित करते हैं।

मिथ्या-माहात्म्य-गर्व-निर्भराश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः। न पूजयन्ति द्विजातीन्। न मानयन्ति मान्यान्। नार्चयन्त्यर्चनीयान्।। नाभिवादन्त्यभिवादनार्हान्। नाभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून्। उपहसन्ति विद्वज्जनम्। जरा वैक्लव्य प्रलपितम् इति पश्यन्ति वृद्धोपदेशम्। आत्मप्रज्ञा परिभवं इति असूयन्ति सचिवोपदेशाय, कुप्यन्ति हितवादिने सर्वथा, तम् अभिनन्दन्ति, तम् आलपन्ति, तम् पार्श्वे कुर्वन्ति, तम् संवर्धयन्ति, तेन सह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुखम् अवतिष्ठते, तस्मै ददति, तम् मित्रताम् उपजनयन्ति, तस्य वचनम् श्रृण्वन्ति, तत्र वर्षन्ति, तम् बहु मन्यन्ते, तमाप्ततामापादयन्ति, यः अहर्निशम् अनवरतम् उपरचिताञ्जलिः अधिदैवतम् इव विगतान्यकर्तव्यः स्तौति, यो वा माहात्म्यम् उद्भावयति ।

टीका :—मिथ्या यत् महात्म्यम् तस्य गर्वेण निर्भराः इति मिथ्या-माहात्म्य-गर्व-निर्भराः = झूठी तारीफ के अहंकार से भरे हुए । जरायाः वैक्लव्यस्य प्रलपितम् इति जरा-वैक्लव्य-प्रलपितम्=बुढ़ापे की व्यर्थ बक-बक । उपरचिता अञ्जलिः येन सः उपरचिताञ्जलिः = हाथ जोड़े हुए । विगतम् अन्यत् कर्तव्यम् यस्य सः विगतान्यकर्तव्यः=सब कुछ छोड़े हुए । उद्भावयति = प्रशंसा बढ़ा-बढ़ाकर करता रहता है ।

अनुवादः—झूठी प्रशंसा के अहंकार में चूर होते हुए वे देवताओं को भी प्रणाम नहीं करते हैं । ब्राह्मणों की पूजा नहीं करते हैं । माननीय जनों का आदर नहीं करते हैं । पूज्य जनों को नहीं पूजते हैं । अभिवादन करने योग्य व्यक्तियों का अभिवादन नहीं करते हैं, गुरुजनों का आदर दिखाने के लिए आसन से उठते तक नहीं हैं । विद्वान् लोगों का मजाक उड़ाते हैं । वृद्धजनों का उपदेश यह जानकर अपने सामने नहीं लाते हैं कि यह तो बूढ़ों की बक-बक है । अपने मन्त्रियों के उपदेश को तो अपनी बुद्धि की पराजय समझकर ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं । हित की बात कहनेवाले व्यक्तियों के ऊपर क्रोध करते हैं, हर प्रकार से उसकी प्रशंसा करते हैं, उससे बातचीत करते हैं, उसको अपने पास बैठने देते हैं, उसे पनपाते हैं, उसके साथ सुखपूर्वक बैठते हैं, उसे देते हैं, उसे अपना मित्र बनाते हैं, उसका कहना सुनते हैं, वहाँ बरसते हैं, उसे बहुत मानते हैं, उसे अपना विश्वासपात्र बनाते हैं जो दिन-रात लगातार अपने आराध्य इष्ट-देवता के सामने हाथ जोड़े हुए जैसे सब कुछ त्यागकर उसकी प्रशंसा करता रहे या जो उसके मिथ्या गुणों का गान करता रहे ।

तदेवं प्राये राज्यतन्त्रेऽस्मिन् महामोहकारिणि च यौवने कुमार, तथा प्रयतेथाः यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न विक्क्रियसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुरुभिः, नोपालभ्यसे सुहृद्भिः, न शोच्यसे विद्वद्भिः, यथा च न प्रकाश्यसे विटैः, न प्रतार्यसेऽकुशलैः, नावलुप्यसे सेवकवृकैः, न वञ्च्यसे धूर्तैः, न प्रलोभ्यसे वनिताभिः, न विडम्ब्यसे लक्ष्म्या, न नर्त्यसे मदेन, नोन्मत्तीक्रियसे मदनेन, नाक्षिप्यसे विषयैः, नावकृष्यसे रागेण, नापह्रियसे सुखेन ।

अनुवादः—सो इस प्रकार के इस राजकाज में और महान् अज्ञान के अन्धकार को फैलानेवाली इस जवानी में, हे राजकुमार ! आप वैसा प्रयत्न कीजिए जिससे आपके सेवक आपकी मजाक न उड़ा सकें, सज्जन लोग आपकी निन्दा न कर सकें। गुरुजन धिक्कार न सकें। मित्रवर्ग उलहना न दे सकें। विद्वान् लोग खेद न प्रकट करने पायें। धूर्त तुम्हारे चरित्र की बदनामी न कर सकें। मूर्ख लोगों से तुम्हारी डाँट-डपट न होने पाये। सेवक रूपी भेड़िये तुम्हें कहीं खा न जायें। बुरे कामों में न लग जाना। धूर्त लोग ठग न सकें। नायिकायें ललचा न सकें। लक्ष्मी तुम्हारा उपहास न कर सके। अहंकार तुम्हें नचा न सके। कामदेव के प्रभाव से उन्मत्त न हो सको। कामदेव के कारण पागल न हो सको। वासनाओं से प्रेरित न हो सको। विषय-वासनाओं या ललनाओं के प्रेम के वशीभूत न हो बैठो। सांसारिक सुख तुम्हें ठग न सकें।

कामम् भवान् प्रकृत्या एव धीरः पित्रा च समारोपितसंस्कारः। तरलहृदयम् अप्रतिबुद्धम् च मदयन्ति धनानि, तथापि भवद्‌गुण-संतोषो मामेवं मुखरीकृतवान्। इदम् एव च पुनरभिधीयसे। विद्वांसमपि सचेतनमपि महासत्त्वमपि अभिजातमपि धीरमपि प्रयप्नवन्तमपि पुरुषम् इयम् दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीः इति। सर्वथा कल्याणैः पित्रा क्रियमाणम् अनुभवतु भवान् नवयौवराज्याभिषेक-मङ्गलम्। कुलक्रमागताम् उद्वह पूर्वपुरुषैः ऊढाम् धुरम्। अवनमय द्विषताम् शिरांसि। उन्नमय स्वबन्धुवर्गम्। अभिषेकानन्तरम् च प्रारब्ध-दिग्विजयः परिभ्रमन् विजिताम् अपि तव पित्रा सप्तद्वीपभूषणाम् पुनर्विजयस्य वसुन्धराम्। अयं च ते कालः प्रतापमारोपयितुम्। आरूढ़प्रतापो राजा त्रैलोक्यदर्शी इव सिद्धादेशो भवति इति एतावत् अभिधाय उपशशाम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

टीका——समारोपिताः संस्काराः येन सः समारोपितसंस्कारः=**जातकर्मादिक सभी संस्कार कर दिये गये हैं जिसके ऐसे।** तरलम् हृदयम् यस्य सः तम् तरलहृदयम्=**चञ्चल-चित्त व्यक्ति को।** अप्रतिबुद्धम् च=**और ज्ञान-रहित व्यक्ति को।** भवतः गुणैः यः संतोषः स भवद्गुणसंतोषः=**आपके गुणों से जो संतोष है उस संतोष ने।** अभिधीयसे=**तुमसे कहा जाता है (कि)** विद्वांसम् अपि=**चाहे कोई कितना ही विद्वान् क्यों न हो उसको भी।** महासत्त्वम् अपि=**चाहे कोई कितना ही साहसी क्यों न हो उसको भी।** अभिजातम् अपि=**चाहे कोई कितना ही कुलीन क्यों न हो उसको भी।** इयम् दुर्विनीता लक्ष्मीः=**यह उच्छृंखल, निर्लज्ज लक्ष्मी।** नवयौवनस्य यः राज्याभिषेकः तस्य मङ्गलम् नवयौवराज्याभिषेकमङ्गलम्=**नये यौवन में किया जाता हुआ राज्याभिषेक रूपी शुभ-संस्कार को।** कुलक्रमात् आगताम् कुलक्रमागताम्=**वंश परम्परा से आई हुई।** पूर्वपुरुषैः ऊढाम्=**पूर्वजों से धारण की हुई।** प्रारब्धः दिशां विजयो येन सः प्रारब्ध-दिग्विजयः=**दिग्विजय को प्रारम्भ करता हुआ।** परिभ्रमन्=**भ्रमण करता हुआ।** सप्त च ते द्वीपाः सप्तद्वीपाः ते एव भूषणानि यस्याः सा ताम् सप्तद्वीपभूषणाम्=**सात द्वीपों से अलंकृत।** आरूढः प्रतापो यस्य सः आरूढ-प्रतापः=**प्रताप में चढ़ा हुआ, प्रतापशाली।** त्रैलोक्यं पश्यति इति त्रैलोक्यदर्शी इव=**तीनों लोकों को देखने वाला अर्थात् योगी के समान।** सिद्धः आदेशः यस्य सः सिद्धादेशः=**सफल आज्ञा वाला।**

अनुवाद :——स्वभाव से ही आप अधिक धैर्यशाली हैं और तिस पर भी आपके पिता ने अच्छी तरह से आपके सभी संस्कार किये हैं। धन उसी व्यक्ति को नशा लाता है जो चञ्चल हृदय हो और अज्ञानी हो। आप तो इन त्रुटियों से रहित हैं इसलिए आप पर धन के नशे का प्रभाव ही नहीं हो सकता है। फिर भी आप गुणग्राही स्वभाव के हैं, आपके गुणों का विचार करके मुझे संतोष उत्पन्न हुआ है और उसी संतोष ने मुझे ऐसा कहने के लिए प्रेरित किया है। यह उच्छृंखल लक्ष्मी विद्वान्, ज्ञानवान्, बलशाली कुलीन तथा पराक्रमी व्यक्ति को भी कर्तव्या-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर्तव्य के ज्ञान से रहित कर देती है। आप हर प्रकार अपने पिता द्वारा किये जाते हुए नये यौवराज्य के अभिषेक के मङ्गलमय संस्कार का अनुभव कीजिए। वंशपरम्परा से आते हुए अपने पूर्वजों के द्वारा धारण किये हुए राज्य के भार को उठाइये, शत्रुओं का सिर नीचे कीजिए, अपने बन्धु वर्ग का सिर उठाइये। अभिषेक के अनन्तर दिग्विजय को प्रारम्भ करते हुए, घूमते हुए आप जीती हुई भी इस पृथ्वी को फिर जीतिए। तुम्हारा अपना प्रभाव जमाने का यही समय है। जिस राजा का प्रभाव जम जाता है उसकी आज्ञा का प्रभाव प्रजा के ऊपर इस प्रकार पड़ता हैं जैसे किसी योगी के वचन का असर होता है। इस प्रकार कहकर वह चुप हो गया।

उपशान्तवचसि शुकनासे चन्द्रापीडः ताभिः उपदेशवाग्भिः प्रक्षालित इव उन्मीलित इव स्वच्छीकृत इव निर्मृष्ट इव अभिषिक्त इव अभिलिप्त इव अलंकृत इव पवित्रीकृत इव उद्भासित इव प्रीतहृदयो मुहूर्तं स्थित्वा स्वभवनमाजगाम।

टीका—उपशान्तम् वचः यस्य सः तस्मिन् उपशान्तवचसि शुकनासे =शुकनास के चुप हो जाने पर। ताभिः उपदेशवाग्भिः=उन उपदेश के वचनों से। निर्मृष्टः इव=मांजे गये की भांति। उन्मीलितः इव=विकसित जैसे। स्वच्छीकृतः इव=मानो साफ किया हुआ। अभिषिक्त इव= नहलाया गया जैसे। अभिलिप्तः इव=मानो लीपा-पोता गया हो। अलंकृतः इव=सजाया हुआ जैसे। उद्भासितः इव=मानो चमकता हुआ हो।

अनुवादः—शुकनास के चुप हो जाने पर चन्द्रापीड उन उपदेश-वाक्यों से धोये हुए, विकसित हुए, साफ किये हुए, माँजे हुए, नहलाये हुए, लीपे-पोते हुए, सजाये हुए, पवित्र किये हुए, चमकते हुए, और संतुष्ट की भाँति थोड़ी देर बैठकर वहाँ से अपने घर आ गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विविध-प्रश्नाः

१---चाण्डालदारिकायाः वर्णनं कुरुत ।

२---शुकस्य आत्मकथां वर्णयत ।

३---शुकोक्ताया आर्याया आशयं लिखत ।

४---अयं शुकशावकः जबालेः आश्रमं केन कथं प्रापितः ?

५---जाबलेः आश्रमं वर्णयत ।

६---शुकनासोपदेशं स्वशब्दैः लिखत ।

७---लक्ष्म्याः गुणदोषान् वर्णयत ।

८---'युवराजे केषां गुणनामावश्यकता अस्ति' वर्णयत ।

९---बाणभट्टस्य जीवन-चरित्रं संस्कृतभाषायां लिखत ।

१०---स्वपाठ्यपुस्तकानुसारेण कथां लिखत ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE